अंक 5
वर्ष 2023-24

सूरत तरंग

राजभाषा विशेषांक

उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने,
अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात) पिन-394510.
दूरभाष : (0261) 2730124-29,
ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in

विशिष्ट उपलब्धि

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा 'ख' क्षेत्र में स्थित केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में 50 से अधिक कार्मिकों वाले कार्यालयों में वर्ष 2021-2022 के दौरान संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

संरक्षक एवं मुख्य संपादक

श्री दीपक मलिक

उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक

श्री मनीष कुमार

उप निदेशक

उप संपादक

श्री अमित इन्दौरिया

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

उप क्षेत्रीय कार्यालय

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने,

अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात) पिन-394510.

दूरभाष : 0261-2730124-29 ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार एवं तथ्यों का उत्तरदायित्व संबन्धित रचनाकारों का है । इनमें संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. Of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002.
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002.
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार
महानिदेशक

संख्या : ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांक : 27.02.2023

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। आशा है कि हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के कर्मियों को हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने में सहायता प्रदान करेगा। इससे अधिकारियों और कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा भी मुखरित होती है।

गृहपत्रिका का प्रकाशन अपने उद्देश्य में सफल रहे-ऐसी कामना है।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ।

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

श्री दीपक मलिक
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
सूरत।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. Of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002.
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002.
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

टी. एल. यादेन
वित्त आयुक्त

संख्या : ए-49/17/2/2016-रा.भा.
दिनांक : 09.02.2023

संदेश

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत की हिन्दी गृह-पत्रिका 'सूरत तरंग' के पंचम अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। हिन्दी गृह पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा 'हिन्दी' के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का प्रखर माध्यम भी है। हिन्दी में पत्रिका प्रकाशन से कार्यालयीय काम-काज में हिन्दी के प्रयोग को बल मिलेगा।

संपादक मण्डल सहित सभी रचनाकारों को शुभकामनाएँ।

टी एल यादेन
(टी. एल. यादेन)

श्री दीपक मलिक
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
सूरत।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. Of India)

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002.
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002.
Tel. : 011-23215487
Website : www.esic.nic.in / www.esic.in

दीपक जोशी
बीमा आयुक्त (राजभाषा)

संख्या : ए-49/17/3/2016-रा.भा.
दिनांक : 07.02.2023

संदेश

यह जानकार प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत अपनी हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' के पंचम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। इससे कार्यालय में किए जा रहे विविध क्रियाकलापों की जानकारी मिलती है तथा कार्यालय के कर्मियों की रचनात्मक प्रतिभा भी मुखरित होकर सामने आती है। आशा है कि पत्रिका कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग को गति देने में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ ।

(दीपक जोशी)

श्री दीपक मलिक
उप निदेशक (प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
कर्मचारी राज्य बीमा निगम,
सूरत।

संरक्षक की कलम से...

भाषा सम्प्रेषण का माध्यम है तथा सर्वश्रेष्ठ भाषा वह है जो स्वयं के मौलिक स्वरुप को बनाए रखते हुए अन्य भाषाओं के सार्थक शब्दों को स्वयं में समाहित करे, जिससे वह उत्तरोत्तर समृद्ध होती जाए। हिन्दी भाषा में यह गुण विद्यमान है और इसी ग्राह्यशीलता ने इसे एक व्यापक एवं समृद्ध स्वरुप भी प्रदान किया है। राजभाषा 'हिन्दी', देश के सर्वाधिक जनसमूह द्वारा बोली जाने वाली भाषा होने के कारण 'राष्ट्रभाषा' बनने की अधिकारिणी है। राष्ट्रभाषा की सेवा को मातृभूमि की सेवा के समकक्ष माना गया है। भारतीय होने का गौरव, साथ ही केंद्र सरकार के कार्मिक होने के नाते हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना हम सभी का राष्ट्रीय कर्तव्य भी बन जाता है।

आधुनिक कंप्यूटरीकरण के इस दौर में जहां प्राथमिकताएँ बदल रही हैं वहीं कार्यालयीय कार्य के तरीकों एवं स्थितियों में भी तीव्र गति से बदलाव आ रहा है। इन्टरनेट के माध्यम से फैली सूचना क्रांति ने लोगों की अभिरुचियों एवं रचनात्मकता के आयामों को बहुत प्रभावित किया है। मैं इस तथ्य से अत्यंत हर्षित हूं कि इस कार्यालय के कर्मचारी अपनी कार्यशैली में इन बदलावों के समरुप परिवर्तन कर राजभाषा 'हिन्दी' में अधिक उत्साह से कार्य करने में सक्षम हैं।

बीमाकृत व्यक्ति के प्रति हमारे सामाजिक सरोकारों के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वियन से संबंधित प्रयासों में सूरत उप क्षेत्र सदैव अव्वल रहा है। गृह मंत्रालय, भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार, वर्ष 2021-22 के अंतर्गत राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन के लिए द्वितीय पुरस्कार देकर हमारे प्रयासों को सराहा गया है। यह हमारे कार्यालय के हिंदी के प्रति रुझान एवं रुचि का सकारात्मक द्योतक है।

पत्रिका प्रकाशन, भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वियन तथा प्रसार की एक सबल कड़ी है। यह कार्यालयकर्मियों की वैचारिक एवं अभिकल्पनात्मक सृजनशीलता की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। इसी परिप्रेक्ष्य में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की हिन्दी के प्रति असीम निष्ठा एवं रुचि की परिचायक गृहपत्रिका 'सूरत तरंग' के पंचम अंक का प्रकाशन अत्यंत प्रसन्नता का विषय है।

अन्य सभी संबंधितों के साथ-साथ मैं उन सभी लेखकों एवं रचनाकारों के प्रति विशेष आभार व्यक्त करना अपना कर्तव्य समझता हूं जिनके बहुमूल्य योगदान से पत्रिका वर्तमान रुप ले सकी है। निश्चय ही वे इसके लिए बधाई के पात्र हैं। निवेदन है कि इसे और सार्थक, सूचनाप्रद एवं मनोरंजक बनाने हेतु अपने अमूल्य सुझाव अवश्य भेजें।

दीपक मलिक
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादकीय

भाषा, विचारों और मन के भावों को प्रत्यक्ष रुप से प्रकट करने का सबसे प्रभावी माध्यम है । हिन्दी एक भाषा मात्र नहीं है बल्कि देश के विविधभाषी जनसमूह की अभिव्यक्ति का एक संपर्क सूत्र है जो संम्पूर्ण देश को एक सूत्र में पिरोने का कार्य कर रही है। हिंदी शब्द का अर्थ है – हिंद का। यह 'हिंद' का विशेषण है। कालान्तर में हिन्दुस्तान के निवासियों को 'हिंदी' कहा जाने लगा। इकबाल के प्रसिद्ध तराने 'हिंदी है हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा' में हिंदी का अर्थ हिन्दुस्तान के निवासी ही है। कालांतर में अंग्रेजों ने इस देश में आगमन के बाद यहां की भाषा को हिन्दुस्तानी कहा या यूँ कहिये कि अंग्रेजों ने हिंदी को ही हिन्दुस्तानी कहा।

संविधान सभा ने 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रुप में स्वीकार कर हिंदी के जनभाषा स्वरुप को प्रमाणित किया और इसके फलस्वरुप हमें यह दायित्व मिला कि सरकारी प्रयोजनों के लिए अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में किया जाए। विभिन्न संवैधानिक अनुच्छेदों एवं उपबंधों के अतिरिक्त सन् 1963 के राजभाषा अधिनियम, राजभाषा संकल्प 1968, राजभाषा नियम 1976 (जिसे 1987 में संशोधित किया गया) तथा वर्ष 1952, 1955 एवं 1960 में जारी राष्ट्रपति के आदेशों ने हिंदी को भारत की सबसे अधिक लोक प्रचलित भाषा के रुप में पदस्थापित करते हुए इसके कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त किया।

किसी भी देशवासी के लिए यह गर्व की बात होनी चाहिए कि वह किसी न किसी माध्यम से देश के लिए अपना योगदान दे। हमारे कार्यालयीय कार्य को हिंदी में करके हम देश की अघोषित 'राष्ट्रभाषा' हिंदी को इसके लिए उपयुक्त स्थान पर पदस्थापित करने के प्रयासों रुपी पवित्र हवन में अपनी आहुति दे सकते हैं।

सूरत उप क्षेत्र बीमाकृत व्यक्तियों के प्रति अपने कर्तव्य का सफल निर्वहन करने के साथ-साथ राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के प्रति पूर्णतः कटिबद्ध है। सूरत तरंग का पंचम अंक आपको सुपुर्द करते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है। वे सभी कार्यालयकर्मी प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने इस पत्रिका को समृद्ध बनाने में अपना योगदान दिया है।

शुभकामनाओं सहित...

मनीष कुमार
उप निदेशक

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	इतिहास के आईने से हिंदी का भविष्य	रजनीश कुमार राजन, सहायक	9
2	भारत को कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कितनी जरुरत	अभय कुमार, सहायक	13
3	हमारा ईएसआईसी	गुप्तेश्वर प्रसाद, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	16
4	नमक के उस पार	ओमप्रकाश प्रजापत, प्रवर श्रेणी लिपिक	17
5	शिष्टाचार	दीन दयाल शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	19
6	हिन्दी	अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	19
7	आश्रित की खोज	गुप्तेश्वर प्रसाद, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	20
8	यात्रा वृत्तान्त: अंडमान और निकोबार	विक्रम दायमा, कार्यालय अधीक्षक	22
9	धरती हमसे कहे पुकार	रणविजय कुमार, सहायक	24
10	वेब 3.0 : नये जमाने का इंटरनेट	अभिषेक फोगाट, कार्यालय अधीक्षक	25
11	नौकरी	दिपाली असनानी, सहायक	28
12	डांग	केतनकुमार एम. चौधरी, बहुकार्यकर्मी	29
13	संघर्ष	यश बैसोया, प्रवर श्रेणी लिपिक	32
14	उम्मीद	गोविंद राम, प्रवर श्रेणी लिपिक	32
15	आओ जरा सोचें	अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	33
16	प्रकृति की गोद में बसा तमासीन जलप्रपात	पंकज कुमार, सहायक	35
17	समाज निर्माण में शिक्षक की भूमिका	अभिनव शर्मा, बहुकार्यकर्मी	36
18	बचपन	हरकेश मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	37
19	माता-पिता के चरणों में बस रहे चारों धाम	प्रमोद कुमार मीना, प्रवर श्रेणी लिपिक	37
20	वेब सीरीज: सिनेमा और टीवी सीरियलों का नया विकल्प	रजनीश कुमार राजन, सहायक	38
21	सेल फोन का संक्षिप्त इतिहास : 1जी से 5जी तक	भीखाभाई परमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	39
22	शांति	दीन दयाल शर्मा, कार्यालय अधीक्षक	41
23	मेरी ताकत	रणविजय कुमार, सहायक	42
24	उड़ान	ओमप्रकाश प्रजापत, प्रवर श्रेणी लिपिक	44
25	सहेली	नीलम कुमारी, सहायक	46
26	एक नन्ही सी परी	रमेश कुमार, सहायक	49
27	मजदूर	राहुल कुमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	50
28	आपकी संस्कृति	प्रीति पिंपल खैरे	52
29	उम्मीद	रविश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	53

क्र.सं.	रचना	रचनाकार	पृष्ठ सं.
30	मन	यश बैसोया, प्रवर श्रेणी लिपिक	53
31	बेटी है तो कल है	रमेश कुमार, सहायक	54
32	सोनगढ़ किला	केतनकुमार एम. चौधरी, बहुकार्यकर्मी	55
33	कार्यालय गतिविधियों की झलकियाँ	संकलन	56
34	आओ गुजराती सीखें	विमलेश ठक्कर, सहायक	60
35	राजभाषायी लक्ष्य प्राप्ति हेतु सुझाव	राजभाषा शाखा	62
36	राजभाषा प्रयोग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी	राजभाषा शाखा	63
37	सूरत में क.रा.बी. योजना : एक नजर	संकलन	64
38	कार्यालय में राजभाषा की प्रगति	राजभाषा शाखा	65
39	कार्यालयीय कार्य में उपयोगी नेमी टिप्पणियाँ	राजभाषा शाखा	66
40	राजभाषा पखवाड़ा की रिपोर्ट	राजभाषा शाखा	68
41	प्रतियोगिताओं में पुरस्कार	राजभाषा शाखा	69
42	खेलकूद में उपलब्धियां	संकलन	70
43	कैमरे की नजर से...	मयंक भगरिया, सामाजिक सुरक्षा अधिकारी	71
44	आपका पत्र मिला...		72

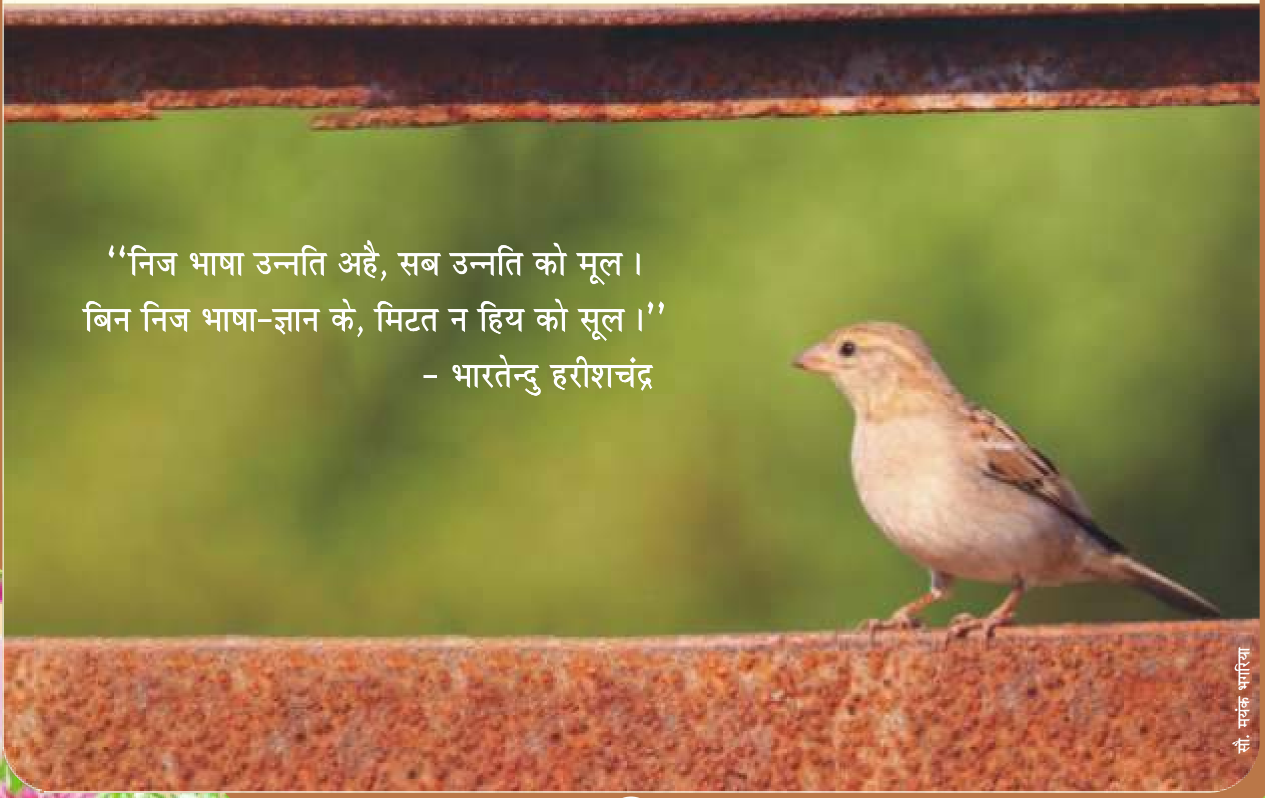

इतिहास के आईने से हिन्दी का भविष्य

यूँ तो 'भाषा' को केवल अभिव्यक्ति का माध्यम भर मानकर इस पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता है, पर यदि गूढ़ता से विचार करें तो पाएंगे कि इस धरा-धाम पर जो भी है चाहे वह चर हो, अचर हो या मशीन हो सबकी अपनी एक विशिष्ट भाषा है जो उनकी विशेष पहचान है। इस भाषा के ही माध्यम से वे अपने वर्ग में या फिर वर्ग के बाहर के परिवेश और व्यक्तियों से संवाद स्थापित करते हैं।

ऊपर की पंक्तियों में मैंने मशीन की भाषा की बात की है। संभव है कि कुछ विद्वान इस बात पर आपत्ति दर्शाएँ कि मशीन की भाषा कैसे हो सकती है ? सच भी है कि मशीन की भाषा कैसे हो सकती है।

पर यदि ध्यान से सोचें तो पाएंगे कि आधुनिक युग में सम्प्रेषण के लिए कंप्यूटर, मोबाइल आदि जिन यंत्रों को हम काम में ले रहे हैं, उन सबकी एक भाषा है जिसके बिना वे यंत्र सर्वथा बेकार ही हैं। सिर्फ यही नहीं जितने प्रकार की मशीनों को हम दैनिक जीवन में काम में लेते हैं उनकी भी अपनी एक अलग भाषा है। एक उदाहरण से यदि हम समझने का प्रयास करें और मोटरसाइकिल या कार का ही उदाहरण लें तो हम पाएंगे कि जब तक ये सुचारु रुप से काम कर रहें हैं तब तक इनकी अलग आवाज होती है पर जैसे ही उनमें कुछ खराबी आती है, उनके लय और आवाज में परिवर्तन आ जाता है। ये मशीनें अपनी भाषा में अपनी अस्वस्थता की जानकारी दे ही देती हैं। यह अलग बात है कि इनकी मरम्मत करने वाला इनकी भाषा बखूबी समझता है तभी तो जैसे ही मिस्त्री आता है, सबसे पहले वह कार या मोटरसाइकिल या अन्य किसी यंत्र को चलाकर उसकी आवाज सुनकर उसका निदान करता है।

अर्थात मानें या ना मानें, जीवन के साथ ही भाषा एक बहुमूल्य अवयव के रुप में किसी न किसी रुप में जुड़ी ही रहती है। चाहे जिस रुप की भाषा हो। भाषा के इन रुपों की जानकारी की जिज्ञासा ने मुझे हिंदी के उद्भव की बात इतिहास के पन्नों से खंगालने के लिए प्रेरित किया। यूँ तो कई तकनीकी विद्वजन और अन्य विद्याओं के विद्वान इतिहास को भूली-बिसरी यादें या फिर दंत कथाओं का एक हिस्सा मानते हुए इतिहास अध्ययन को बेकार की बातें या फिर गड़े मुर्दे उखाड़ने जैसी बातें कहकर एक सिरे से नकारते आ रहे हैं, पर संभवतः यह उनका कोरा भ्रम ही है। इतिहास हमें यदि पुरानी बातें याद दिलाता है तो वह इस बात की भी प्रेरणा देता है कि किसी भी विषय पर पूर्व में की गई गलतियों से समाज का यदि नुकसान हुआ हो, उन्हें पुनः न दोहराने का उपाय किया जाए और यही बात इतिहास के अध्ययन को बल प्रदान करती है।

एक बार भारत के आदरणीय संत श्री रविशंकर जी ने अपने प्रवचन के दौरान बताया था कि जिस भाषा को सरकार का समर्थन और संरक्षण प्राप्त होता है वही भाषा फलती-फूलती है और फिर उसका ही प्रसार होता है। उनकी इस बात पर गौर करते हुए मैंने हिंदी के इतिहास पर नजर डालने के प्रयास में जब

इतिहास खंगालना प्रारंभ किया तो ढेरों चौंकाने वाली जानकारियाँ सामने आईं।

सन् 1509 के पूर्व भारत में मुगलों का शासन रहा है। इस शासन काल में कुछ स्थानों पर हिन्दू राजा भी रहे हैं। यह माना जाता है कि वैदिक काल में भारत की भाषा संस्कृत रही है पर मुगल काल में सरकारी कामकाज की भाषा फारसी बन गई, आगे चलकर सन् 1509 ईस्वी में भारत के कुछ हिस्सों पर पुर्तगालियों का शासन हुआ जो लगभग 100 वर्षों तक चला। स्वाभाविक है कि उन दिनों जिन प्रांतों पर उनका अधिकार था वहाँ राज-काज की भाषा पुर्तगाली ही रही होगी। आगे चलकर सन् 1608 में कैप्टन हॉकिंस के नेतृत्व में प्रथम अंग्रेजी जहाजी बेड़ा भारत पहुँचा। उस समय मुगल सम्राट जहाँगीर का शासन था और फिर धीरे-धीरे अंग्रेज और अंग्रेजी भारत भूमि पर पसरते चले गए।

मुगल काल में भी भारत सहित विश्व के कई हिस्सों में अवधी भाषा पढ़ी, बोली और लिखी जाती थी। कुछ हिस्सों में पाली का प्रचलन था। पर कालांतर में मानव मन ने चाहे फारसी बोलने वालों जैसा व्यवहार करने के लिए या अन्य कारणों से ही सही फारसी भाषा की शैली अर्थात खड़ी बोली को पूर्णतः स्वीकार करना प्रारंभ कर दिया और जो कभी बोली के रुप में प्रचलित हुई थी वह आज हिंदी भाषा के रुप में एक नया अवतार लेकर आई और फिर भारत भर में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली एक समग्र 'भाषा' हिंदी का उद्‌भव हुआ। ऐसा माना जाता है कि खड़ी बोली शब्द का प्रयोग 'द हिंदी स्टोरी टेलर' नामक पुस्तक के लेखक 'गिलक्राइस्ट' ने किया था। मगर इसी के साथ संवत् 1860 में लल्लूलाल जी ने अपनी कृति 'प्रेमसागर' में भी हमें खड़ी बोली शब्द से परिचित कराया। धीरे-धीरे हिंदी एक अलग भाषा के रुप में बढ़ती गई। इतिहास और इंटरनेट पर विकिपीडिया के पन्नों में खोजने पर हिंदी से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण तारीखों की जानकारी मिली जो निम्नानुसार हैं :-

18वीं शताब्दीः भरतपुर राज्य तथा पूर्वी राजस्थान के कई रजवाड़े हिंदी (ब्रजभाषा) में कार्य कर रहे थे।

सन् 1836 : बिहार में हिन्दी आन्दोलन शुरु हुआ था। इस अनवरत प्रयास के फलस्वरुप सन् 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिन्दी प्रतिष्ठित हुई ।

सन् 1882 : भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने शिक्षा आयोग (हन्टर कमीशन) के समक्ष अपनी गवाही दी जिसमें हिन्दी को न्यायालयों की भाषा बनाने की महत्ता पर बल दिया।

सन् 1893 : काशी नगरी प्रचारिणी सभा की स्थापना। इसका उदेश्य हिंदी और उसकी लिपि देवनागरी के समर्थन में तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार और स्वीकारोक्ति के लिए प्रयास करना। इसके लिए उनका आंदोलन जारी था, तभी सन् 1896 में ब्रिटिश सरकार ने सरकारी दफ्तरों और अदालतों में फारसी अक्षरों की जगह रोमन लिपि लिखने का एक आदेश निकाला। सरकार के इस आदेश से नागरी प्रचारिणी सभा और हिन्दी सेवियों के बीच काफी उथल-पुथल मच गई। नागरी भाषा के समर्थकों को इस बात का भय था कि यदि अदालतों और सरकारी दफ्तरों में रोमन लिपि लागू कर दी गई तो अदालतों में नागरी भाषा का द्वार हमेशा के लिए बन्द हो सकता है। नागरी प्रचारिणी सभा ने अदालतों में रोमन लिपि के विरोध में आन्दोलन करना शुरु कर दिया। इस आंदोलन से हिंदी के कार्यान्वयन को काफी बल मिला। 'सरस्वती' के अप्रैल 1900 के अंक में 'पश्चिमोत्तर प्रदेश' और अवध में 'नागरी अक्षर का प्रचार' लेख

में गर्वनर एंटोनी मैकडानेल के आदेश को अक्षरशः प्रकाशित किया गया। वह इस प्रकार है (1) सम्पूर्ण मनुष्य प्रार्थनापत्र और अर्जीदावों को अपनी इच्छा के अनुसार नागरी या फारसी के अक्षरों में दे सकते हैं। (2) सम्पूर्ण सम्मान, सूचनापत्र और दूसरे प्रकार के पत्र जो सरकारी न्यायालयों अथवा प्रधान कर्मचारियों की ओर से देश भाषा में प्रकाशित किए जाते हैं, फारसी और नागरी अक्षरों में जारी होंगे और इन पत्रों के शेष भाग की खानापूर्ति भी हिन्दी भाषा में उतनी ही होगी जितनी फारसी अक्षरों में की जाए। (3) अंग्रेजी अफसरों को छोड़कर आज से किसी न्यायालय में कोई मनुष्य उस समय तक नियत नहीं किया जाएगा जब तक वह नागरी और फारसी अक्षरों को अच्छी तरह से लिख और पढ़ न सकेगा।

ऊपर का विवरण देखने में बहुत ही सामान्य सा दिख रहा होगा, पर आजादी के पूर्व तक भारत और इसकी भाषा के लिए सजग लोगों ने एक देश और एक राष्ट्र भाषा के लिए काफी प्रयास किया। इस प्रयास का ही फल है कि 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा ने यह निर्णय लिया कि हिन्दी भी केन्द्र सरकार की आधिकारिक भाषा होगी। चूंकि भारत के अधिकतर क्षेत्रों में हिन्दी भाषा बोली जाती थी इसलिए हिन्दी को राजभाषा बनाने का निर्णय लिया और 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रुप में स्वीकार किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को आधिकारिक भाषा के रुप में स्थापित करवाने के लिए काका कालेलकर, हजारी प्रसाद द्विवेदी, सेठ गोविन्ददास आदि साहित्यकारों को साथ लेकर व्यौहार राजेन्द्र सिंह ने अथक प्रयास किये। यहाँ से हिंदी के प्रति प्रेम और घृणा दोनों के भाव जनमानस में प्रस्फुटित होने लगे। कही हिंदी का विरोध हुआ तो कहीं हिंदी के समर्थन में अथक प्रयास। संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा तो नहीं लेकिन राजभाषा के रुप में प्रतिस्थापित कर दिया गया, किन्तु इसके साथ संविधान में यह भी व्यवस्था की गई कि संघ के कार्यकारी, न्यायिक और वैधानिक प्रयोजनों के लिए 1965 तक अंग्रेजी का प्रयोग जारी रहेगा। बाद में दिनांक 10.5.1963 को अनुच्छेद 343(3) के प्रावधान व श्री जवाहर लाल नेहरु के आश्वासन को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसके अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा व अंग्रेजी सह–राजभाषा के रुप में प्रयोग में लाई गई। साथ ही अधिनियम में यह व्यवस्था भी थी कि केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्यों से पत्राचार में अंग्रेजी के प्रयोग को उसी स्थिति में समाप्त किया जाएगा जब सभी अहिंदी भाषी राज्यों के विधान मण्डल इसकी समाप्ति के लिए संकल्प पारित कर दें।

कुछ जनमानस की बात और कुछ संवैधानिक प्रावधान दोनों ने मिलकर हिंदी को बढ़ाने का प्रयास तो जरुर किया पर सह भाषा के रुप में अंग्रेजी को जारी रखने के निर्णय ने लोगों में हिंदी के इतर अंग्रेजी का प्रेम भरना जारी रखा। स्वाभाविक ही है। जो जनमानस वर्षों तक अंग्रेजों का गुलाम रहा उनमें अंग्रेजी के प्रति सम्मान और प्रेम हो जाना स्वाभाविक ही है। शायद इसी मनोवैज्ञानिक दबाव के कारण भारत का अनपढ़ व्यक्ति भी यदि हस्ताक्षर करना सीखता है तो वह अंग्रेजी को ही प्राथमिकता देता है। हस्ताक्षर से शुरु होकर धीरे–धीरे अंग्रेजी ने हिंदी को हाशिये पर धकेलना शुरु कर दिया। इसी का फल है कि आज आजादी के 75 वर्ष बीत जाने के बाद भी केंद्र सरकार द्वारा हिंदी के कार्यान्वयन के अथक प्रयास सफल नहीं हो रहे हैं और हिंदी केवल सरकारी आंकड़ों की भाषा बनकर हाशिये पर सिमटती चली जा रही है। यह तो एक छोटा सा उत्पीड़न है पर एक अघोषित विस्फोट का क्रम प्रारंभ हो चुका है जो शायद

किसी को दिख नहीं रहा है या लोग देख कर अनजान हैं।

एक बार पुनः सन् 1896 के ब्रिटिश आदेश की ओर आपका ध्यान ले जाना चाहूँगा जहाँ फारसी को रोमन लिपि में लिखने की कवायद हुई थी। हालांकि ऐसा हो तो न सका पर खड़ी हिंदी ने धीरे-धीरे अवधी, पाली, भोजपुरी जैसी कई क्षेत्रीय भाषाओं को अपने में समाहित कर लिया, दूसरी और राजकाज में हिंदी लिपि में फारसी लिखी जाने लगी। कालांतर में फारसी का प्रचलन स्वतः ही समाप्त होता गया। अब यह केवल धर्मग्रंथों की ही भाषा बनकर रह गई है जैसे संस्कृत हो गई है। हालांकि इन समस्त परिवर्तनों के लिए लोगों ने बाकायदा प्रयास किया था पर आज जो भाषा के क्षेत्र में नया हो रहा है वह है रोमन लिपि में हिंदी लिखा जाना। यह बात केवल हिंदी भाषा के साथ ही नहीं है। बल्कि अधिकांश भारतीय भाषाओं के साथ हो रहा है। और तो और कुछ लोगों ने बाकायदा हिंदी की लिपि को देवनागरी से बदल कर रोमन करने का अभियान प्रारंभ कर दिया था। फिल्म उद्योग के हिंदी स्क्रिप्ट या संवाद रोमन लिपि में ही तो लिखे जाते हैं। यूट्यूब में एक वीडियो बनाने के लिए मैंने एक बार दो बच्चों के बीच वार्तालाप की प्रस्तुति की थी। उस प्रस्तुति के दौरान बच्चे को उसका संवाद हिंदी में लिखवा रहा था। मैंने देखा कि बड़ी तेजी से एक बालक रोमन लिपि में हिंदी लिख रहा था। पूछने पर उसने बताया कि हिंदी को रोमन लिपि में लिखने में आसानी होती है तथा जल्दी से लिख लिया जाता है। यह तो एक बालक है। सोशल मीडिया पर नौकरियों के लिए प्रयासरत युवाओं के एक मंच पर मैंने हिंदी को रोमन लिपि में लिखे जाने की बात पर जब आपत्ति दर्ज की तो लोगों ने कहा कि हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखने में दिक्कत होती है और गति भी कम हो जाती है इसलिए रोमन में लिखना पड़ता है। मैंने हिंदी के कई विद्वानों, प्राध्यापकों एवं शिक्षकों को भी रोमन हिंदी लिखते हुए देखा है। सौभाग्य से उत्तर प्रदेश के कुछ ग्रामीण अंचलों में जाने का मौका मिला था। वहाँ दो-चार दर्जा पढ़े युवा और वृद्ध जनों को भी मैंने सोशल मीडिया पर रोमन लिपि में हिंदी और भोजपुरी लिखते देखा। स्वेच्छा से रोमन लिपि का बहुतायत प्रयोग उस बड़े भाषायी विस्फोट की और इशारा कर रहा है जो आने वाले समय में कई भाषाओं की लिपियों को समाप्त कर देगा। यदि लिपि ही परिवर्तित हो गई तो भाषा की शुद्धता और उसका औचित्य ही क्या रह जाएगा। यूँ कहें तो जो हाल फारसी, अवधी, पाली और अन्य समृद्ध क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ वही हिंदी के साथ भी हो सकता है और उसके लिए ना तो किसी सरकारी फरमान की आवश्यकता होगी ना ही किसी बड़े आयोजन की। सब कुछ इतनी शांति और त्वरित रुप से होगा कि पता ही नहीं लगेगा कि हिंदी के पैर के नीचे से जमीन कब खिसक गई। हालांकि सरकारी प्रयास तो अब भी है कि हिंदी का संवर्धन और कार्यान्वयन हो और इसके लिए करोड़ों रुपये खर्च भी किए जा रहे हैं पर यदि इतिहास के आईने से देखूँ तो लगता है कि 'बकरे की माँ कब तक खैर मनाएगी...

रजनीश कुमार राजन
सहायक

भारत को कर्मचारी राज्य बीमा निगम की कितनी जरुरत

जिस प्रकार एक नवजात शिशु को माँ की जरुरत होती है। ठीक उसी प्रकार देश के मजदूरों को कर्मचारी राज्य बीमा निगम की जरुरत है। जिस तरह से माँ अपने बच्चों की सेहत का ध्यान रखती है और पिता अपने बच्चों के भविष्य के लिए नित्य दिन कार्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार से निगम एक माँ की तरह बीमार मजदूरों की सेहत का ध्यान चिकित्सा हितलाभ के द्वारा रखता है और एक पिता की तरह जरुरत पड़ने पर नकद हितलाभ देकर मजदूरों एवं उनके आश्रितों के वर्तमान एवं भविष्य को सुरक्षित करता है। निगम आज के समय में करोड़ों मजदूरों की चिंता को दूर कर रहा है। शायद इसलिए निगम ने अपनी पंच लाइन 'चिंता से मुक्ति' रखी है।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम की बहु-आयामी योजना के कारण ही कारखानों में कार्य करने वाले मजदूर बेफिक्री से कार्य करते हैं क्योंकि उन्हें पता है कि उनका और उनके परिवार की सेहत का ध्यान रखने के लिए निगम अपने दोनो पैरों पर सन् 1952 से खड़ा है। साथ ही दुर्भाग्यवश उनके न होने पर भी निगम उनके परिवार का पेंशन और चिकित्सा से देखभाल करता है। निगम द्वारा चिकित्सा हितलाभ एवं बीमारी हितलाभ मुहैया करवाये जाते हैं। चिकित्सा हितलाभ द्वारा बीमित व्यक्तियों एवं उनके आश्रितों की चिकित्सा की जाती है। साथ ही जरुरत पड़ने पर अति-विशिष्ट उपचार एवं चिकित्सा में हुए खर्च की प्रतिपूर्ति भी दी जाती है। निगम द्वारा निम्नलिखित हितलाभ मुहैया कराए जाते है :-

- बीमारी हितलाभ
- विस्तारित बीमारी हितलाभ
- मातृत्व हितलाभ
- वर्धित बीमारी हितलाभ
- अस्थायी अपंगता हितलाभ
- स्थायी अपंगता हितलाभ
- अंत्येष्टि व्यय
- व्यावसायिक पुनर्गठन
- पुनर्वास भत्ता
- वृद्धावस्था चिकित्सा देखरेख
- अटल बीमित श्रमिक कल्याण योजना

ऐसा कहा जाता है कि मुसीबत में जो काम आ आए वही अपना है तो ये कहना बिल्कुल सही है कि निगम मजदूरों का अपना है क्योंकि जब भी मुसीबत आती है तो निगम उनके साथ रहता है। इसकी कठोर परीक्षा कोरोना काल में हुई, जिन मजदूरों की इस महामारी से मृत्यु हो गई उनके

परिवारों/आश्रितों को पेंशन देकर निगम ने यह साबित कर दिया कि मुसीबत आने पर जब उनके साथ कोई नहीं था और चारों तरफ अन्धकार दिखाई दे रहा था, उस समय निगम ने अपने पंचदीप से उनके चारों ओर सकारात्मकता रुपी प्रकाश फैलाने का कार्य बखूबी किया है।

जब सरकारी अथवा कॉरपोरेट कार्यालयों में कार्य करने वाले लोग बीमार पड़ते हैं और कार्यालय नहीं जा पाते हैं तो उन्हें घर बैठे वेतन मिल जाता है। उनके काम पर नहीं जाने के कारण उनकी तनख्वाह नहीं कटती है। वहीं एक मजदूर तो मजदूर है साहब, बडे कॉरपोरेट के कर्मचारी और अधिकारी नहीं।

बीमारी हितलाभ : मजदूर जब बीमार पड़ता है तो जितने दिन काम पर नहीं गए उतने दिन की तनख्वाह काट ली जाती है। उस समय निगम बीमारी हितलाभ के जरिए उनके वेतन की 70 प्रतिशत राशि का भुगतान करता है।

विस्तारित बीमारी हितलाभ : बीमारी हितलाभ लेने के दौरान जब बीमित व्यक्ति अपनी बीमारी से ठीक नहीं हो पाता है उस स्थिति में निगम विस्तारित बीमारी हितलाभ के जरिए उनके वेतन की 80 प्रतिशत राशि का भुगतान करता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि निगम के कारण ही उस समय उन मजदूरों के घर का चूल्हा जलता है।

मातृत्व हितलाभ : गर्भधारण करने के उपरांत जब गर्भवती महिलायें काम पर नहीं जा पाती है। कंपनिया उनको वेतन नहीं देती हैं जबकि उसी समय उन्हें पैसे की सबसे ज्यादा जरुरत होती है क्योंकि उस समय तो वह दो जानें पाल रही होती है। उस समय निगम मातृत्व हितलाभ के द्वारा उनके वेतन का 100 प्रतिशत देकर ईश्वर-तुल्य काम करता है।

रोजगार चोट हितलाभ : सोचिये कितनी विचित्र स्थिति होती होगी जब कोई मजदूर पहली बार नौकरी पर जाता है उस वक्त उसके पास दिन के तीन पहर खाने के भी पैसे नहीं होते हैं और उसी समय कारखाने के अन्दर या बाहर उसके साथ दुर्घटना हो जाती है। अब जरा सोचिये जिसके साथ निगम का पंजीकरण नहीं हो उस पर क्या गुजरती है। परन्तु जिस मजदूर का निगम में सिर्फ पंजीकरण कर दिया गया हो उसका पूरा इलाज तो निगम कराता ही है और साथ ही रोजगार चोट हितलाभ के जरिए काम पर नहीं जाने के कारण हुई वेतन की हानि का भी उसके वेतन के 90 प्रतिशत अस्थायी अपंगता हितलाभ के द्वारा भुगतान करता है।

हमारी सरकार द्वारा अपंग व्यक्तियों के लिए बहुत सी योजनाएं चलायी जा रही हैं। उन्हें हर क्षेत्र में आरक्षण देकर प्रोत्साहित एवं आगे बढ़ाने का कार्य सरकार कर रही है। परन्तु सोचिये ऐसा कौन होगा जो अपंग मजदूरों को बिना काम का वेतन देगा। जब बीमित व्यक्ति कार्य करने के दौरान हुई दुर्घटना के कारण अपंग हो जाते हैं तो निगम द्वारा उनकी अपंगता के प्रतिशत के आधार पर स्थायी अपंगता हितलाभ के माध्यम से उम्र भर पेंशन दी जाती है ताकि दुर्घटना के कारण हुई अर्जन क्षमता की हानि की भरपायी की जा सके।

आश्रितजन हितलाभ : सबसे अनूठा आश्रितजन हितलाभ है जो बीमित व्यक्तियों की जिंदगी के बाद भी उनके आश्रितों के लिए है। बिल्कुल एक ईश्वर की तरह, जब किसी बीमित व्यक्ति की मृत्यु

हो जाती है तो उसके आश्रितों को उसके वेतन का 90 प्रतिशत पेंशन के रुप में दिया जाता है। यह हितलाभ हाल ही में कोरोना महामारी से मृत हुए बीमित व्यक्तियों के आश्रितों के लिए बहुत लाभदायक रहा है। इस हितलाभ की जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। जरा सोचिए कि घर के एक मात्र कमाने वाले सदस्य की जब मृत्यु हो जाए तो उस घर के बच्चे, पत्नी, बूढ़े माँ-बाप पर क्या गुजरती होगी और खाने-पीने, कपड़े, बच्चों की पढ़ाई, बूढ़े माँ-बाप की दवाई, बच्चों की स्कूल फीस, और तो और बैंक का कर्ज इत्यादि का खर्च कौन वहन करेगा। सोचिये क्या गुजरती होगी। इस कठिन परिस्थिति में निगम आश्रितजन हितलाभ के द्वारा बीमित का सहारा बन जाता है। इस ईश्वर-तुल्य कार्य के लिए निगम को कोटि-कोटि नमन।

कोरोना काल ने हमें यह भी समझा दिया कि जिस मजदूर को हम तुच्छ समझते हैं, उसी मजदूर के अपने वतन वापस चले जाने पर भारत के सभी कल-कारखाने ठप्प पड़ गए। कुछ तो बिल्कुल ही बंद हो गए। कोरोना का भय कम होने के बाद भी बहुत से मजदूर काम पर वापस नहीं आए। शायद वे समझ गए कि ''जान है तो जहान है।''

इस प्रकार से अगर यह देखा जाए तो कर्मचारी राज्य बीमा निगम एक ऐसी संस्था है जो गरीब से गरीब मजदूर की संकटकालीन परिस्थितियों में रक्षा करती है। शायद देश की कुछ महान हस्तियों को यह लगता होगा कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम का देश में क्या काम है। इसके नहीं रहने से कोई फर्क नहीं पड़ेगा। तो मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि महलों में रहने वाले सड़क पर रात गुजारने वालों की स्थिति नहीं समझ सकते हैं, इसलिए उन महल में रहने वालों के कहने पर कर्मचारी राज्य बीमा निगम जैसी संस्था को कभी कमजोर नहीं करना चाहिए। जहाँ तक हो, इसे और भी मजबूत करना चाहिए, ताकि कंपनी अथवा कल-कारखानों के मालिक, उनके यहाँ कार्यरत मजदूरों को कर्मचारी राज्य बीमा निगम की सेवा से कभी वंचित करने के बारे में न सोचें और ऐसा करने की स्थिति में कानून की पकड़ से वे बच न सकें।

जब हम निगम को मजबूत करेंगे तो अप्रत्यक्ष रुप से हम भारत के मजदूरों को मजबूत करेंगे और जब मजदूर मजबूत एवं सुरक्षित होंगे तो देश के कल-कारखाने मजबूत होंगे और जब कल-कारखाने मजबूत होंगे तो हमारे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और जब अर्थव्यवस्था मजबूत होगी तो हमारा देश मजबूत होगा। और यही है सच्चा राष्ट्रवाद।

अभय कुमार
सहायक

हमारा ईएसआईसी

गाँव से शहर आया जब, था मैं बेरोजगार।
मिला मुझे एक दिन, मिल में रोजगार॥

करने लगा मैं भी काम, लगन और मेहनत से।
खुश हुआ मालिक भी, मेरी ईमानदारी से॥

खुशी-खुशी दिन बिता, बीते कई साल।
हुआ एक दिन मैं परेशान, पड़ा जब मैं बीमार॥

हुआ चिंतित अब मैं, कराऊँ कैसे इलाज।
बड़ा शहर, बड़ा डॉक्टर, खर्च है बड़ा इलाज॥

एक दिन मेरा मालिक बोला, चिंता न कर मेरे यार।
क्योंकि करा रखा है सबका मैंने, ईएसआई में पंजीकरण है तैयार॥

दिया उसने तुरन्त मुझे, ईएसआई की एक पहचान।
कहते है सभी इसे, 'टीआईसी' है इसका नाम॥

बताया उसने मुझे, मिलने वाले ईएसआई के हितलाभ।
मिलते हैं मुझे चिकित्सा, बीमारी, अपंगता, आश्रित और कई हितलाभ॥

गया तुरन्त मैं अपने, दवाखाना ईएसआई का।
देकर टीआईसी काउंटर पर, कराया पंजीकरण अपने नाम का॥

डॉक्टर ने की जाँच, मेरे पूरे बीमार शरीर की।
कहा जल्दी ठीक हो जाओगे, लेकर दवा ईएसआई की॥

साथ ही उसने दिया मुझे, छुट्टी का प्रमाण भी।
कहा जमा करा दो शाखा कार्यालय, मिलेगा बीमारी हितलाभ भी॥

मैंने भी ली खूब जानकारी, अपने शाखा कार्यालय से।
बतलाये स्टाफ ने खूब लाभ मुझे, मिलने वाले सभी हितलाभ से॥

सच में मैंने भी पाया सम्मान 'आईपी वीआईपी' और पाकर ईएसआई का ज्ञान।
सच में कहते है सभी 'ईएसआईसी-चिंता से मुक्ति' यही है इसकी पहचान॥

गुप्तेश्वर प्रसाद
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

नमक के उस पार

गुजरात का कच्छ, नमक की खेती के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। कच्छ के नक्शे को उल्टा करें तो एक कछुए जैसी आकृति दिखती है, कहते हैं कि इसी कछुए जैसी आकृति के कारण इस क्षेत्र का नाम कच्छ पड़ा। यहाँ के किसानों की जिंदगी भी कछुए जैसी धीरे-धीरे बढ़ती है, सिर्फ एक लक्ष्य लिए नमक। वे अपना घर छोड़कर तैयार करते हैं आपका नमक। दूर-दूर तक सिर्फ मैदान कहीं मेड़ काटकर खेतों में पानी भरा है तो कहीं उजियारा दिखता है। इन कुछ सफेद हो चुके खेतों में खंपारा (एक तरह का नुकीला फावड़ा) चलाती औरतें, आदमी और बच्चे दिखते हैं। ये लोग साल के आठ महीने यही काम करते हैं। नमक मजदूरों की ये पहली कहानी नहीं है, और न ही अंतिम। जब तक पानी है, तब तक नमक है और इसकी कहानियाँ हैं। जब आप इस लाइन को पढ़ रहे हैं, आपके शरीर में भी लगभग 200 ग्राम 'नमक' है। रोज लगभग 8 से 10 ग्राम यानी दो चम्मच नमक आप जब खाते हैं तो सोचा है कि ये नमक बनता कैसे है और इसे बनाने वाले लोग किस हाल में जी रहे हैं सोचा तो नहीं होगा ?

यह कहानी सिर्फ नमक के इर्द-गिर्द ही घूमती है। गुजरात के अगरिया की सही हालत और संख्या समझने के लिए इनकी समस्याओं को समझना भी बहुत जरुरी है। ये उन्हीं नमक मजदूरों में से एक श्री भोलाभाई की कहानी है, जो जब तक जिंदा रहते हैं नमक के साथ जीते हैं और जब मर जाते हैं तो कई बार नमक में ही लिपट के दफन हो जाते हैं। इन कुछ नमक मजदूरों का पूरा शरीर चिता में जल जाता है पर सख्त हो चुके पैर कई बार नहीं जल पाते हैं। नंगे पैर सालों साल चलकर वे आपके लिए नमक बनाते हैं।

गुजरात के कच्छ जिले में खाराघोड़ा गांव के अगरिया किसान श्री भोलाभाई बाबुभाई जिनके बाल सफेद, आंखो में सूनापन, चेहरे पर शिकन, दाढ़ी सफेद है। देखने पर खाराघोड़ा के भोलाभाई की उम्र 45-46 की लगती है जबकि उनकी उम्र है सिर्फ 31 साल। भोलाभाई के परिवार में उसकी पत्नी लालिबेन, तीन लड़कियाँ (पिंजिया, सूजिनी, दर्शवी) एवं एक लड़का (किनाभाई भोलाभाई) है। ऐसा लगता है कि इन सबकी जिन्दगी नमक के बिना कुछ नहीं। इसकी एक बड़ी वजह लिटिल रण ऑफ कच्छ कहलाने वाले 'खाराघोड़ा' में पानी की समस्या है। खाराघोड़ा में नमक की खेती अगर करनी है तो पानी की किल्लत, बड़े से मैदान में एक छोटी सी झुग्गी में नौ महीने और बाकी दुनिया से लगभग पूरी तरह से कट जाने जैसी चुनौतियां आकर खड़ी हो जाती हैं। खाराघोड़ा, सुरेन्द्रनगर के आस-पास गांवों में रहने वाले ये कुछ अगरिया बारिश का मौसम खत्म होते ही जोगिनीनार, गांधीधाम जैसी कई जगहों पर आ जाते हैं। यहां ये लोग सेठ यानी दूसरे की जमीन और वहीं बनाए गए एक कमरे में सपरिवार रहकर नमक निकालने की मजदूरी करते हैं। यहां एक टन नमक निकालने पर भोलाभाई को लगभग 50 रुपये मिलते हैं यानी जितने में आप एक या डेढ़ किलो नमक खरीदते हैं, उतने पैसों में ये अगरिया मजदूर एक हजार किलो नमक निकालते हैं। एक मजदूर परिवार एक सीजन में जमीन और बारिश के आधार पर कई हजार टन नमक निकाल सकता है। इसी काम के लिए अपनी जमीन पर नमक निकालने वालों को 200-250 रुपये मिलते हैं। खाराघोड़ा के बाहर इन अगरिया लोगों का जीवन अपेक्षाकृत कुछ आसान तो हो जाता है, पर ये नमक है, जो अपनी फितरत नहीं बदलता है।

भोलाभाई से जब मैंने पूछा कि आपको आजीविका में इतनी दिक्कत आ रही है तो आप कोई दूसरा काम क्यों नहीं करते हैं। भोलाभाई ने नम आंखो से जवाब दिया - बाबूजी अगर हमारे गाँव में पानी होता तो इधर क्यों आते, क्या करें और कोई काम आता भी होता तो जमीर से समझौता थोड़े ही कर लेते, शहर से हमारा कोई लेना-देना नहीं है लेकिन पढे-लिखे नहीं तो कुछ पता नहीं इसलिए जब भगवान ने दाना-पानी यहाँ लिखा है तो हम कहीं और क्यों जाते भला, मैं यह सुनकर थोड़ा दु:खी तो हुआ, लेकिन खुशी इस बात की थी कि ये लोग अपना जमीर बेचे बगैर अपना जीवन यापन कर रहे हैं। फिर मैंने यूं ही उनसे पूछ लिया कि आपकी उम्र 31 तो नहीं लगती ? जबाव मिला-बाबूजी सफेद नमक में रहते-रहते सब सफेद हो गया।

यह वही जगह है जहाँ से 1930 में महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह किया था। नमक बनाने पर अंग्रेजों की लगाई रोक और टैक्स के खिलाफ गांधी ने दांडी यात्रा की थी। आज उस यात्रा वाली जगह से 100 किलोमीटर दूर कितने ही भोलाभाई जैसे अगरिया किसान नमक बना रहे हैं। बस वे उतना पैसा नहीं कमा पा रहे हैं, जितना नमक ठेकेदार या फिर एक दिन में एक हजार टन नमक पैक करने वाली रिफाइनरी के मालिक कमा रहे हैं। नमक बनाने वालों और नमक पैक करके बेचने वालों के घर देखने पर कमाई का फर्क साफ समझ में आता है। नमक से होने वाली बाकी शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक दिक्कतें हर जगह वही हैं।

भोलाभाई, अपनी पत्नी और चार बच्चों के साथ जोगिनीनार में धन्नासेठ के यहां काम करने अक्टूबर में आए हैं। सेठ ने रहने के लिए एक कमरा दिया है। जब मैं भोलाभाई से बात कर रहा था तो मैंने अचानक ही पूछ लिया कि आपके परिवार के और लोग कहाँ है ? जबाव मिला – साहब कोनू एक काम करने से काम चलता है क्या भला, उस वक्त भोलाभाई की बेटियाँ और पत्नी लालिबेन खेत में खंपारा चला रही थीं। गुजरात के अगरिया की सही हालत और संख्या समझने के लिए ये दृश्य समझना बहुत जरुरी है।

भोलाभाई की पत्नी लालिबेन से जब पूछा तो वह हँसने लगीं और बोली – इससे बात करो न, ये बोलेगा, मैं क्या बोलूं? कई सवालों को पूछने पर लालिबेन बोलती हैं, ''इधर तो अब थोड़ा ठीक है उधर खाराघोड़ा में तो पानी की बहुत दिक्कत थी। इधर भी नमक बनाते हैं तो पैर, आंख तो जलते ही है न, महावारी होती है या बुखार, खेत में जाकर काम तो करना पड़ेगा न। गोली खाकर जाते हैं और क्या कर सकते हैं ?'' भोलाभाई यूंही दूभर स्वर में, अचानक बोल पड़े – रोज दिन के कई घंटे नमक में गुजारने के बाद हमारे पैर सख्त हो जाते हैं। ये पैर कुछ मामलों में इतने सख्त हो जाते हैं कि मरने के बाद जब हमारे शरीर को जलाया जाता है तो सब जल जाता है, बस पैर नहीं जलते। ''हम मर जावें तो हमारा पांव नहीं जलता है। नमक डालकर पांव को खड्डे में डालना पड़ता है या तो फिर अग्नि में दोबारा पांव को डालते हैं।'' खैर मशीनों और जूतों के आने से ऐसे मामलों में कमी तो आयी है।

गुजरात के किसी भी हिस्से में नमक बन रहा है तो इसका एक बड़ा असर अगरिया लोगों के बच्चों पर भी होता है। नमक बनने का काम नौ महीने तक चलता है। जैसे ही अक्टूबर में ये काम शुरु होता है, अगरिया अपने गांवों से निकलकर नमक बनाने वाले खेतों में आ जाते हैं अगले नौ महीने इन वीरान खेतों में ही बिताते हैं। ऐसे में बच्चों का भी स्कूल छूटता है। नई जगह पर कुछ पढ़ाई तो हो पाती है पर सारी तारतम्यता टूट जाती है। बच्चों के भविष्य पर भोलाभाई कहते हैं, ''ज्यादा पैसा नहीं आएगा तो बच्चों को क्या पढ़ाएंगे। हमारी मजबूरी है पेट के लिए काम तो करना पड़ता है न। हम नमक बनाते हैं पर हमारी परेशानी नहीं देखता कोई।'' तीन बच्चों की मां लालिबेन कहती है, ''अब हम कर रहे हैं तो बच्चों को भी करना पड़ता है। हम पढ़ा तो रहे हैं पर ये काम भी सीखा रहे हैं।'' लालिबेन जहां परिवार संग नमक बना रही है, ठीक उसी के पीछे एक कच्चा कमरा बना हुआ है। इस कमरे में माननभाई बच्चों को गुजराती में पढ़ा रहे हैं। दो बच्चों की शर्ट के पीछे फिल्म 'पुष्पा' के हीरो अल्लू अर्जुन की तस्वीर बनी हुई है। मैंने पूछा कि कोई डॉयलॉग आता है क्या ? हाथों को ठुड्डी के नीचे लगाकर ये बच्चे साथ में बोलते हैं – ''झुकेगा नहीं साला।'' मगर ये रील नहीं, रीयल लाइफ है जहां जरुरतें हर उम्र के लोगों को झुका देती हैं। इन बच्चों की पीढ़ियां, बाल मजदूरी कानून को धता बताते हुए, नमक के खेतों में झुककर काम करती आ रही हैं। हमें इन नमक के खेतों में कई ऐसे लोग मिले, जिनके हाथ–पैरों पर नमक का असर साफ देखा जा सकता है।

यह विडंबना कहूँ या कुछ और कि आज भी मेरे देश में मजदूर की हालत ऐसी है। खैर हमें इससे क्या, हमें तो बड़ी आसानी से शहर में मिल जाता है नमक।

''सब कुछ बदल गया,
लेकिन बदला नहीं मेरा जमीर, मेरा आसमां, मेरा विश्वास,
मैं हूँ मिट्टी की पहचान, मैं ही तो हूँ देश का मजदूर।''

ओमप्रकाश प्रजापत
प्रवर श्रेणी लिपिक

शिष्टाचार

अशोभनीय बातें किसी को ना बोलो ।
किसी को तू-तुम से कभी मुँह ना खोलो ॥
बोलने से पहले अपने पर तोलो ।
इसके बाद दूसरों को बोलो ॥

जो बातें खुद पे नहीं रासती ।
वो दूसरों को कैसे जंचती ॥
अच्छा संबोधन सब को है भाता ।
सुनकर मन प्रसन्न हो जाता ॥

आत्मसम्मान सभी का होता ।
इसमें कोई छोटा-बड़ा न होता ॥
बुरे बर्ताव की बजाय अच्छा सभी को भाता ।
वाणी ही आपके संस्कार को है दर्शाता ॥

अच्छा लालन-पालन, अच्छी दीक्षा जो पाता
उसके मुँह खोलते ही है पता चल जाता ॥
अपने से छोटों, अपने निकट वालों को
हमेशा अच्छे संबोधन से ही बुलाया जाता ॥

अशोभनीय बातों की आदत से छुटकारा पाना ।
और छोटे-बड़े सभी से सम्मान पाना ।

दीन दयाल शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

हिन्दी

हिन्दी है जन-जन की भाषा,
हिन्दी है हम सब की भाषा,
भाषा थी ये आजादी के दीवानों की,
खेतों और खलिहानों की ।

संस्कृत से जन्मी है ये,
बोलियों से समृद्ध हुई,
ग्राह्यता का भाव लिए,
पनपी औ परिपक्व हुई ।

भाषा है बस एक यही,
मिलाप करा सकती है,
व्यवसाय बढ़ा सकती है औ
एकत्व ला सकती है ।

भाषा हिमायतों को अब,
समझना औ जान लेना है,
संपर्क भाषा बस एक यही,
राष्ट्रभाषा इसे बनाना है ।

संकीर्णता के गलियारों में,
अब नहीं भटकना है,
मुंह पर हिन्दी हो औ
दिल में हिंदुस्तान रखना है ।

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

किसी राष्ट्र की राजभाषा वही भाषा हो सकती है जिसे उसके अधिकाधिक निवासी समझ सकें ।
– (आचार्य) चतुरसेन शास्त्री

आश्रित की खोज

जनवरी 2022 में मैंने शाखा कार्यालय लाल दरवाजा में शाखा प्रबंधक के पद पर कार्यग्रहण किया था। कार्यग्रहण के पश्चात् कार्यालय सुचारु रुप से चल रहा था कि फरवरी 2022 में मुख्यालय से सभी नये पुराने आश्रितजन हितलाभ से संबंधित आंकड़े मांगे गए। इन आंकड़ो को तैयार करने के लिए शाखा कार्यालय में कार्यरत श्री प्रकाश खैरे, प्रवर श्रेणी लिपिक एवं श्री आशीष चक्रवर्ती, प्रवर श्रेणी लिपिक दोनों को यह कार्य सौंपा गया था। दोनों कर्मचारी आश्रित हितलाभ की सभी पुरानी फाइलों को निकालकर मुख्यालय के निर्देशानुसार आंकड़े तैयार करने में लग गए।

तभी श्री प्रकाश खैरे जी को एक आश्रितजन हितलाभ की फाइल मिली जिसका भुगतान अब तक नहीं किया गया था। उन्होंने इस बारे में मुझे अवगत कराया। फाइल को देखने पर पता चला कि बीमित व्यक्ति की मृत्यु 2015 में हुई थी एवं रोजगार चोट के रुप में स्वीकार भी कर ली गई थी। इसमें उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत द्वारा फार्म–15 की माँग की गई थी जिसमें पूर्व शाखा प्रबंधक द्वारा मृत बीमित व्यक्ति के आश्रित परिवार एवं संबंधित नियोजक को फार्म–15 जमा कराने के लिए पत्र जारी किया गया था। किन्तु फार्म–15 कार्यालय को प्राप्त नहीं हो सका था और इसके कारण संबंधित आश्रित को हितलाभ नहीं दिया जा सका। यह अभी तक लंबित था। करीब सात साल गुजर जाने के बाद आश्रित को खोज पाना एक बड़ी समस्या थी। इस फाइल में संलग्न सभी पत्रों को ध्यान से देखा एवं फाइल में जितने भी मोबाइल नंबर थे, सभी पर कॉल किया किन्तु कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई। उसके बाद पता चला कि आश्रित बिहार के गया जिले के बरइनी गाँव का रहने वाला था। गूगल पर बरइनी गाँव के पोस्ट ऑफिस की दूरभाष संख्या की खोज की परंतु असफल रहा। यहाँ तक कि वहाँ के संबंधित पुलिस स्टेशन का भी टेलीफोन नंबर गूगल पर सर्च किया किन्तु नहीं मिला। सोचा इन दोनों में से किसी का भी टेलीफोन नंबर मिल जाता है तो बीमित व्यक्ति के आश्रित परिवार के बारे मे कुछ जानकारी मिल सकती है। किन्तु संपर्क नहीं हो सका। उसके बाद मैंने फेसबुक पर उसके गाँव के लोगों को खोजा किन्तु कोई नहीं मिला। खोजने के क्रम में दो–तीन दिन समय निकल जाने के बाद मै थोड़ा मायूस हो गया कि इतनी मेहनत खोजने में की लेकिन कोई संपर्क नहीं हो पाया।

इसके एक दिन बाद ध्यान आया कि भारतवर्ष के सभी ईएसआई स्टाफ ने टेलीग्राम पर एक ईएसआईसी मिनिस्ट्रीयल ग्रुप बनाया हुआ है जिसमें मैं भी सदस्य था। इस ग्रुप में मैंने एक पोस्ट डाला कि ग्राम बरइनी, पोस्ट नेकपुर, जिला गया, बिहार का कोई स्टाफ है तो तुरंत मुझसे संपर्क करे। टेलीग्राम पर पोस्ट डालने के बाद दो दिन बीत गये किन्तु कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ। मैं थोड़ा और मायूस हो गया कि अब नहीं मिलेगा। इसी क्रम में मैंने संबंधित नियोजक से भी कई बार फोन पर संपर्क किया किन्तु उनको भी उसके परिवार का कोई अता–पता नहीं मिला। अस्थायी पहचान के अनुसार उसके आश्रितों में सिर्फ बीमित व्यक्ति के पिताजी का नाम था। ऐसे में मन ही मन सोच लिया कि शायद पिताजी भी अब जीवित नहीं बचे हों। खैर तभी टेलीग्राम पर मुझे एक उत्तर मिला कि सर, क्या काम है? मैं इसी गाँव के आस–पास का रहने वाला हूँ। यह उत्तर पाते ही मैंने तुरंत उस स्टाफ को कॉल किया। उसने कॉल उठाया और अपना नाम त्रिभुवन बताया जो ईएसआईसी, चेन्नई में तैनात था।

उसको घटना की पूरी जानकारी दी। उसने कहा कि सर, ये बरइनी गाँव मेरे गाँव के पास ही है, पता करके बताता हूँ। मेरे पास उनके नाम और पते की जो जानकारी थी, उसे उनके व्हाट्सअप पर भेज दी और साथ ही यह भी कहा कि यदि कोई भाड़ा खर्चा भी होता है तो मैं देने को तैयार हूँ। बस यह खोज कर बताइए कि बीमित व्यक्ति का कोई आश्रित है भी या नहीं। त्रिभुवनजी ने तुरंत अपने दोस्त को गाँव में फोन कर सूचित किया एवं खोज करने के लिए लगा दिया। एक दिन बीत जाने के बाद त्रिभुवनजी का फोन आया कि सर, बीमित व्यक्ति के आश्रित के पिताजी जीवित हैं और उनसे बात हो गई है। फिर त्रिभुवनजी ने उनका मोबाइल नंबर मुझे व्हाट्सअप पर भेजा। नंबर पाकर मैं बहुत खुश हुआ और तुरंत आश्रित को कॉल किया। फोन पर घटना की पूरी जानकारी विस्तार से लेने के बाद यह पुष्टि हुई कि यही मृत बीमित व्यक्ति रवि रंजन कुमार के पिताजी श्री रामश्रय प्रसाद हैं। चूंकि घटना काफी पुरानी हो चुकी थी ऐसे में पूरी तरह से आश्वस्त होना जरुरी था। उसके बाद मैंने त्रिभुवन जी को धन्यवाद दिया एवं उनसे आश्रित व्यक्ति को खोजने की जानकारी ली। त्रिभुवन जी ने बताया कि जब मेरा मित्र उनके घर गया और बोला कि आपका ईएसआईसी से कॉल आया है, बात करें तो रामश्रय प्रसाद जी ने आश्चर्यचकित होकर कहा कि मैं ईएसआईसी को नहीं जानता। उन्होंने सोचा कि यह संदेश गलती से यहाँ लेकर आया है तब उसके दोस्त ने उनको बताया कि नेकपुर का निवासी त्रिभुवन ईएसआईसी, चेन्नई में काम करता है जो सरकारी विभाग है। इसके बाद रामश्रय प्रसाद जी नेकपुर गये और त्रिभुवन के बारे में जानने के बाद त्रिभुवन से बात की। अब मुझे फॉर्म-15 की जरुरत थी, अतः इसके लिए मैंने रामश्रय प्रसाद जी से फोन पर कहा कि आपके गाँव में कोई एसटीडी बूथ या कंप्यूटर की दुकान है तो मेरी उससे बात कराइए। उन्होंने कंप्यूटर वाले से मेरी बात करायी और मैंने कहा कि आप अपना ई-मेल आईडी दीजिए। मैं एक फॉर्म भेज रहा हूँ जिसका प्रिन्ट निकालकर इनको दे दीजिये। उसने ई-मेल आईडी भेजा और मैंने तुरंत फॉर्म-15 स्कैन कर भेज दिया एवं रामश्रय प्रसाद जी को फोन पर समझाया कि यह फॉर्म भरकर बैंक पासबुक की कॉपी, आधार कार्ड की कॉपी आगे की कार्यवाही हेतु तुरंत भेजिये। इसके बाद आपको निगम की तरफ से पेंशन मिलेगी। यह बात सुनते ही रामश्रय प्रसाद जी फोन पर ही रोने लगे और मुझे भी पता नहीं चला कि मैं भी थोड़ा भावुक हो गया था।

खैर कुछ दिन बीतने के बाद फॉर्म-15 कार्यालय को प्राप्त हुआ। प्राप्त होते ही तुरंत उप क्षेत्रीय कार्यालय को अग्रेषित कर दिया गया। कुछ ही दिनों के बाद जीआरओ जारी कर दी गई। जीआरओ प्राप्त होते ही रामश्रय प्रसाद जी ने मुझे फोन किया। उसके बाद उनको पूरी कार्यालयीय कार्यवाही के बारे में अवगत कराया। रामश्रय प्रसाद जी ने कहा ट्रेन टिकट होते ही मैं सूरत आ जाऊँगा। उनके सूरत आने के बाद तुरन्त भुगतान संबंधी आवश्यक कार्यवाही की गयी एवं उनके द्वारा प्रस्तुत किए गए सभी दस्तावेजों का मिलान कार्यालय में मौजूद दस्तावेजों से किया और सब सही पाया गया। इसके बाद उनसे कहा कि आपका मामला निगम के बिहार स्थित कार्यालय में स्थानांतरित कर देता हूँ ताकि आप वहीं से हर माह पेंशन ले पाएँ। उन्होंने इसके लिए हामी भरी एवं आवेदन लेकर भुगतान करने के पश्चात केस ट्रान्सफर कर दिया गया।

गुप्तेश्वर प्रसाद
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ, परन्तु मेरे देश हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं नहीं सह सकता।
– आचार्य विनोबा भावे

यात्रा वृत्तान्त : अंडमान और निकोबार

अण्डमान और निकोबार द्वीप भारत का एक केन्द्र शासित प्रदेश है। ये बंगाल की खाड़ी के दक्षिण में हिन्द महासागर में स्थित है। अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह लगभग 572 छोटे-बड़े द्वीपों से मिलकर बना है जिनमें से सिर्फ कुछ ही द्वीपों पर लोग रहते हैं। इसकी राजधानी 'पोर्टब्लेयर' है।

पिछली बार पर्वतीय स्थल गंगटोक (सिक्किम) की यात्रा करने के पश्चात् इस बार कुछ भिन्न वातावरण वाले स्थल की यात्रा करने का विचार किया ओर चारों और समुद्र से घिरे हुए हिन्द महासागर में स्थित 'अण्डमान और निकोबार' द्वीप समूह की यात्रा करने का तय किया। इस सुन्दर स्थल की यात्रा करने के लिए एल.टी.सी. में सरकार/निगम के द्वारा विशेष रियायत दी जाती है। पिछली बार की यात्रा अनुभव का लाभ लेते हुए इस बार भी सारी योजना समय से बना ली गई एवं टिकट बुकिंग/होटल बुकिंग भी कर ली गयी।

अण्डमान और निकोबार, हवाई मार्ग अथवा जल मार्ग से पहुंचा जा सकता है। सूरत से चेन्नई पहुँचने के बाद चेन्नई से पोर्टब्लेयर (अण्डमान और निकोबार की राजधानी) की यात्रा हवाई जहाज के माध्यम से की। पोर्टब्लेयर से जल मार्ग के द्वारा (क्रूज से) स्वराज द्वीप (हेवलोक आइलैंड) जो अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह का एक द्वीप है, वहाँ पहुंचे एवं पहले से बुक किये गए होटल में चेक-इन किया। यहीं से एक स्कूटी किराये पर ली एवं शाम को राधानगर बीच की तरफ निकले। राधानगर बीच भारत ही नहीं वरन एशिया के सबसे सुन्दर बीच (समुद्र तट) में से है। बिलकुल साफ नीला पानी, सफेद रेत एवं बिलकुल साफ समुद्र तट होने से बहुत आनंद आता है तथा स्वयं को जल-मग्न होने से रोका नहीं जा सकता।

अगले दिन सुबह का नाश्ता करने के बाद किराये की स्कूटी से ही हम अन्य समुद्र तट एलिफेंट बीच की तरफ निकले। एलिफेंट बीच जाने के दो मार्ग हैं। एक जंगल से होते हुए पैदल मार्ग एवं दूसरा समुद्र से होते हुए फैरी के द्वारा। हम जंगल से ट्रेकिंग करते हुए पैदल मार्ग के माध्यम से एलिफेंट बीच की तरफ निकले एवं इसके लिए हमने एक गाइड की सहायता भी ली। मार्ग में उबड़-खाबड़ रास्ते, विचित्र पेड़-पौधे और जीव-जन्तु देखने को मिले। इन मनोरम दृश्यों से सराबोर होते हुए हम एलिफेंट बीच तक पहुंचे। यह समुद्र तट बहुत ही सुंन्दर है। किनारे पर जल-पान के लिए कई स्टॉल हैं एवं सामान आदि रखने हेतु लोकर रुम भी वाजिब दाम पर मिल जाते हैं। यहाँ पर कई प्रकार की जल-क्रीड़ाओं (वाटर एक्टिविटीज) जैसे स्नोर्क्लिंग, सी-वाल्क, जेट-स्की आदि की सुविधा उपलब्ध है। पानी इतना साफ है

कि समुद्र के अन्दर मौजूद कोरल्स, सुंदर मछलियां स्पष्ट देखी जा सकती हैं। यहाँ पर बहुत आनंद आया। पूरी तरह से प्राकृतिक वातारण का अनुभव हुआ। शाम को 3-4 बजे पर्यटकों को वापस लौटना होता है। वापसी भी उसी मार्ग से करते हुए हम होटल वापस लौटे। शाम को लगभग 5 बजे बाद बाजार बंद हो जाता था एवं अँधेरा भी जल्दी होता है। उस समय इन्टरनेट की सुविधा भी यहाँ पर उपलब्ध नहीं थी। होटल में ब्रोडबेंड से भी बहुत कम स्पीड से इन्टरनेट आता था। अगले दिन प्रातः हम जल मार्ग द्वारा (क्रूज से) शहीद द्वीप (नील आइलैंड) पहुंचे एवं पहले से बुक किये गए होटल में चेक-इन किया। यहाँ पर कुछ अच्छे एवं सुन्दर समुद्र-तट है जैसे लक्ष्मणपुर बीच, भरतपुर बीच, सीतापुर बीच आदि। यहाँ भी वाहन किराए पर लेने की सुविधा उपलब्ध है। हमने स्कूटी किराए पर ली एवं लक्ष्मणपुर बीच की तरफ निकले। रास्ते में नारियल के पेड़, खेत, गाँव की खूबसूरती देखते ही बनती थी। लक्ष्मणपुर बीच पर प्राकृतिक पुल बना हुआ है जो कोरल-रीफ(प्रवाल भित्ति) से बना है एवं देखने में चट्टान की तरह दिखता है। इसके बनने में कई लाख वर्षों का समय लगा होगा। यह देखने में बहुत ही आकर्षक एवं अविश्वनीय है। यहाँ पर कुछ विचित्र समुद्री जीव जैसे स्टार फिश, टाइगर फिश, सी-कुकुम्बर, हनी कोरल आदि देखने को मिले। इसके बाद हम भरतपुर बीच गए। यह समुद्र-तट भी बहुत आकर्षक है।

यहाँ का पानी बहुत उथला है जिससे हम आसानी से पानी में जाकर आनंद ले सकते हैं। बच्चे भी बीच पर अटखेलियाँ कर सकते हैं। यहाँ पर पानी के नीचे का संसार बहुत ही मनमोहक है। यहाँ पर भी कई प्रकार की जल-क्रीड़ाएं (वाटर एक्टिविटीज) होती है जैसे स्नोर्क्लिंग, ग्लास बॉटम, बोट राइड, जेट-स्की आदि। यहाँ पर खाने-पीने के रेस्टोरेंट/दुकानें, चेजिंग रुम, टॉयलेट्स एवं शोपिंग की दुकानें आदि भी मौजूद हैं।

अगले दिन प्रातः हम जल मार्ग द्वारा (क्रूज से) वापस पोर्ट ब्लेयर पहुंचे एवं यहाँ के बाजार में घूमे एवं रेस्टोरेंट में खाना खाया। इसके बाद 'सेल्युलर जेल' घूमने गए जिसे इतिहास में 'काला-पानी' की सजा के लिए भी जाना जाता है। इस जेल के एक भाग को म्यूजियम के रुप में परिवर्तित किया गया है। इसके लिए एंट्री टिकट लेना होता है। इस म्यूजियम में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान आदि की जानकारी मिलती है। यहाँ पर शाम को 'लाईट एंड साउंड शो' का प्रदर्शन होता है। इसकी टिकट पहले ही ऑनलाइन ले ली थी। यह बहुत ही अद्‌भुत शो है जिसमें लाईट एंड साउंड के साथ में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की गाथा, सेल्युलर जेल के बनने एवं वहाँ पर स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सहन की गई ज्यादतियां, शहीदों के बलिदान एवं उनकी शौर्य गाथाएं सुनने को मिलती हैं एवं मन में देशप्रेम की भावना उमड़ती है।

अण्डमान और निकोबार की यात्रा बहुत दिलचस्प रही। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता, समुद्र का बिल्कुल स्वच्छ पानी, सुन्दर बीच, दुर्लभ समुद्री जीवन, निर्मल हवा एवं यहाँ के नागरिकों का विनम्र स्वभाव यादगार रहा।

विक्रम दायमा
कार्यालय अधीक्षक

धरती हमसे कहे पुकार

आग बरसती आसमान से
लगी है मचने हाहाकार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

जल-थल चारों ओर गंदगी
फैलाता है खूब इंसान
सुंदर-स्वच्छ धरा कर गंदी
करता नित अपना नुकसान,
पास बुलाता मौत को अपनी
कर पृथ्वी पर अत्याचार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

काट रहा वन-उपवन सारे
करता नहीं कोई परवाह
दूषित वायु शुद्ध न होती
हर दिशा में फैले धुआँ अथाह,
अपने किये कृत्य से मानव
कई रोगों का हुआ शिकार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

जलचर सारे मरते जाते
नदियों बीच रसायन बहता
फिक्र किसे मरते जीवों की
साफ रखो जल स्रोत को अपने
यही तो है जीवन आधार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

बढ़ती ग्लोबल वॉर्मिंग से
हिमखंड हैं सारे पिघल रहे
सारे प्राणी खतरे में हैं
कैसे तुमको ये धरा कहे,
हालत बद से बदतर होती
कुदरत भी अब हुई लाचार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

सोचो आने वाली पीढ़ी
कैसे जीवित रह पाएगी
कैसे किस्से बीते पुराने
इक दूजे से कह पाएगी,
गलती आज सुधारें अपनी
बना दें हम सुन्दर संसार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

आग बरसती आसमान से
लगी है मचने हाहाकार
जीना है तो मुझे बचा लो
धरती हमसे कहे पुकार ।

रणविजय कुमार
सहायक

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नही हो सकता ।
– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

वेब 3.0: नये जमाने का इंटरनेट

वेब 3.0 (Web 3.0) ब्लोकचेन प्रौद्योगिकी पर आधारित इंटरनेट का तीसरा संस्करण है। वेब 3.0 का लक्ष्य एक इंटेलिजेंट, स्वायत्त, कनेक्टेड और ओपेन इंटरनेट का सृजन करना है। अब जब हम वेब 3.0 की ओर आगे बढ़ रहे हैं, विकेंद्रीकरण इसकी एक प्रमुख प्रवृत्ति होने की उम्मीद है। संक्षेप में, यह एक ऐसी अवधारणा है जो किसी एक व्यक्ति या निकाय से जनसमूह में शक्ति को हस्तांतरित करती है।

- भारत वेब 3.0 प्रौद्योगिकी के आरंभिक समर्थकों में से एक रहा है। NASSCOM और WazirX की 'क्रिप्टोटेक इंडस्ट्री इन इंडिया, 2021' रिपोर्ट के अनुसार भारत में 230 से अधिक वेब 3.0 स्टार्ट-अप शुरु भी हो चुके हैं।
- वेब 3.0 के माध्यम से इंटरनेट प्रौद्योगिकी की उन्नति के साथ इस बात की प्रबल संभावना है कि प्रौद्योगिकी का शस्त्रीकरण हो, साइबर खतरे अधिक व्यापी हो जाएँ और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिये चुनौतियाँ और बढ़ जाएं। इस परिदृश्य में आवश्यक है कि वेब 3.0 की भविष्य की व्यवहार्यता और संवहनीयता के संबंध में इसकी बारीकी से जाँच की जाए।

वेब के विभिन्न संस्करण कौन-से हैं ?

- वेब 1.0 : इसे पहला चरण माना जाता है, जहाँ लोगों के लिये सुलभ अधिकांश वेब 'रीड ऑनली (Read-only) श्रेणी के थे, यानी उपयोगकर्ताओं के पास सामग्री को केवल पढ़ सकने का अवसर था, वे इसके साथ इंटरेक्ट या अंत:क्रिया नहीं कर सकते थे। इसमें न्यूज साईट, पोर्टल और सर्च इंजन जैसे कंटेंट शामिल थे।
- वेब 2.0 : वेब 2.0 के साथ जो नया प्रमुख पहलू चलन में आया, वह है अंत:क्रिया (intraction)। सोशल मीडिया पर 'लाइक' करने, वीडियो पर 'कमेंट' करने और रुचिकर कंटेंट को 'शेयर' करने का चलन तेजी से लोकप्रिय हुआ। यह ऐसे चरण के रुप में भी आगे बढ़ा जहाँ पेजों पर विज्ञापन पॉप-अप होने लगे (डेटा विट्स पर आधारित) और कंटेट के मुद्रीकरण (monetisation) का विकास हुआ।
- वेब 3.0 : वेब 3.0 इंटरनेट के विकास में एक नए चरण का प्रतिनिधित्व करता है अर्थात् विकेंद्रीकरण, खुलेपन और वृहत उपयोगकर्ता की अवधारणा के साथ एक प्रकट रुप से गतिशील, अर्थपूर्ण और स्थानिक वेब। यह ब्लॉकचेन, ऑगमेंटेड रियलिटी, वर्चुअल रियलिटी, क्लाउड, एज, आईओटी, क्रिप्टोकरेंसी जैसी विभिन्न विघटनकारी प्रौद्योगिकियों को संयुक्त करती है और डेटा-संचालित अंन्तर्दृष्टि के लिये एआई आधारित एनालिटिक्स लेयर पर संचालित होती है।

वेब 3.0 का सकारात्मक पक्ष

- खुला और पारदर्शी नेटवर्क : वेब 3.0 एक खुला नेटवर्क है, सभी एप्लीकेशन और प्रोग्राम ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग कर विकसित किये जाते हैं। अनिवार्य रुप से डेवलपमेंट के लिये कोड (code for development), जो एक आभासी संसाधन है, समुदाय के लिए सार्वजनिक रुप से उपलब्ध होता है और विकास प्रक्रिया को भी पारदर्शी रखा जाता है।
- निर्बाध पारितंत्र : वेब 3.0 के साथ प्लेटफॉर्म कंपनियों द्वारा डेटा पर केंद्रीकृत नियंत्रण व्यक्तियों के हाथों में चला जाता है, जहाँ ब्लॉकचेन पर स्मार्ट प्रोटोकॉल के उपयोग से थर्ड पार्टी की आवश्यकता समाप्त

हो जाती है। इस प्रकार, यह एक भरोसा-रहित, अनुमति-रहित और निर्बाध पारितंत्र (trustless, permissionless and seamless ecosystem) को आगे बढ़ाता है।

- **विक्रेताओं और ग्राहकों के बीच प्रत्यक्ष संबंध :** वेब 3.0 प्रौद्योगिकी मध्यस्थों का भी उन्मूलन कर सकती है, जिससे विक्रेता और ग्राहक को प्रत्यक्ष अंत:क्रिया का अवसर मिलता है। नॉन-फंजीबल टोकन (Non-fungible tokens) पहले से ही इसे काफी हद तक सक्षम कर रहे हैं (अधिकांशत: स्टेटिक डिजिटल आर्ट में), लेकिन इस व्यवस्था को संगीत, फिल्मों और अन्य माध्यमों में भी आसानी से दोहराया जा सकता है।
- **व्यक्तिकृत अनुभव :** इसमें भौतिक और डिजिटल दुनिया के बीच की रेखाओं को धुंधला करने की क्षमता है। उदाहरण के लिए ए.आई सक्षम वेब 3.0 का उपयोग करने वाले ई-कॉमर्स के मामले में विक्रेता खरीददारी की जरुरतों को बेहतर ढंग से समझने में सक्षम होंगे। वे उन उत्पादों एवं सेवाओं को खरीददारों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे जिनकी खरीद में वे रुचि रखते हैं। इसके साथ ही, खरीददारों को अधिक उपयोगी और संबंधित विज्ञापन दिखाई देंगे।
- **स्वतंत्र मुद्रीकरण :** केंद्रीकृत कंटेंट प्रबंधन में उपयोगकर्ता-जनित कंटेंट आमतौर पर उस प्लेटफॉर्म से संबंधित होता है जहाँ उन्हें प्रकाशित किया जाता है, लेकिन वेब 3.0 कंटेंट क्रिएटर्स को मुद्रीकरण का बेहतर अवसर देकर उन्हें सशक्त बना सकता है। भारत में लगभग 20 लाख पेशेवर कंटेंट क्रिएटर्स इससे लाभान्वित हो सकते हैं।

वेब 3.0 से संबद्ध हानि

- **साइबर अपराधों में वृद्धि :** कुछ विशेषज्ञों के अनुसार वेब 3.0 को विनियमित करना कठिन होगा। वे आगे दावा करते हैं कि विकेंद्रीकरण नए प्रकार के साइबर अपराधों को जन्म दे सकता है। इससे अन्य बातों के अलावा साइबर अपराध और ऑनलाइन दुरुपयोग (online abuse) में वृद्धि हो सकती है। क्रिप्टोकरेंसी आधारित अपराध एक प्रमुख विषय है जिसे अभी भी संबोधित किया जाना बाकी है, विशेष रुप से यह देखते हुए कि समग्र लेन-देन की मात्रा बढ़ने का अर्थ है कि अवैध लेन-देन का मूल्य बढ़ रहा है।
- **शिकायत निवारण तंत्र का अभाव :** इसकी विकेंद्रीकृत प्रकृति के कारण प्रश्न उठता है कि शिकायतों के मामले में किससे संपर्क किया जाए और डेटा उल्लंघन के लिये कौन जवाबदेह है।

- **सेंसरशिप तंत्र की कमी :** वेब 3.0 सेंसरशिप पर कोई विचार नहीं करता है। यह अश्लील और उत्तेजक कंटेंट्स को जन्म दे सकता है। इसके साथ ही, अश्लील या मानहानिकारी सूचना, फोटो या वीडियो को हटाना राष्ट्रीय प्राधिकारों के लिये चुनौतीपूर्ण होगा।
- **स्केलेबिलिटी/मापनीयता संबंधी चिंता :** वेब 3.0 की स्केलेबिलिटी एक प्रमुख चिंता का विषय है, क्योंकि यह ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी पर आधारित है। ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के अपेंड-ऑनली डेटा स्टोरेज तंत्र (append-only data storage mechanism) के कारण, इसे संशोधित नहीं किया जा सकता है और चूँकि मांग बढ़ रही है, इसकी भंडारण क्षमता सीमित है।
- **विनियामक कमी :** वेब 3.0 का उपयोग अभी भी भारत में विनियामक क्षेत्र में अपनी राह तलाश रहा है क्योंकि इसे अभी तक सुदृढ़ रुप प्रदान नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, कई देशों ने अभी तक इस क्षेत्र

में कदम नहीं रखा है और इसके उपयोग के लिये स्पष्ट प्रोटोकॉल को परिभाषित नहीं किया गया है।

आगे की राह

- **भारत के लिये अवसर :** भारत ने अपने घरेलू सामाजिक-आर्थिक विकास को आकार देने में प्रौद्योगिकी का उपयोग किया है। इस प्रौद्योगिकी ने अधिक समावेशन और प्रभावशाली सामाजिक परिणाम उत्पन्न किये हैं। उदाहरण के लिये, आधार, जन धन, यू.पी.आई (UPI), टीकाकरण के लिये कोविन (Cowin) आदि के माध्यम से भारत ने निम्न-लागतपूर्ण, उच्च-प्रभावी 'टेक-फॉर-बेटर-लाइक' नवाचार का निर्माण किया है। इस क्रम में, भारत एक नेतृत्वकारी एवं उत्प्रेरक की भूमिका निभाते हुए वेब 3.0 के इस प्रारंभिक विकास चरण का लाभ भी उठा सकता है।
- वेब 3.0 भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था के मूल्य में तेजी ला सकता है। ऐसे अवसरों के साथ, भारत का वेब 3.0 मानचित्र पर अच्छी तरह से स्थापित करने के लिये स्टार्टअप पारितंत्र को बढ़ावा और वित्तीय प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है।
- **ई-सिटिजन और ई-गवर्नेंस को पुनर्जीवित करना :** वेब 3.0 का उपयोग डिजिटल सकारी सेवाओं के बेहतर उपयोगकर्ता अनुभव के साथ-साथ अधिक साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण के लिये बेहतर गुणवत्तापूर्ण डेटा हेतु किया जा सकता है। सरकार के परिप्रेक्ष्य से, ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी के माध्यम से क्रॉस-मिनिस्ट्रियल सेवाओं को और अधिक तेजी से निर्मित किया जा सकता है।
- **अंतर-संचालित और नैतिक मानकों पर ध्यान देना :** चूँकि सभी प्रौद्योगिकियाँ विकसित होती हैं, इंटरनेट का विकास भी अपरिहार्य है। वेब 3.0 को वैश्विक आर्थिक विकास का एक मजबूत प्रणोदक बनाने के लिये राष्ट्रों और औद्योगिक निकायों द्वारा ठोस मानकों के साथ खुले, नैतिक और अंतर-संचालित तंत्रों के निर्माण हेतु सक्रिय प्रयास की आवश्यकता है।
- **विकेंद्रीकृत विज्ञान :** वेब 3.0 की विकेंद्रीकृत प्रकृति का उपयोग विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में पेटेंट की बाधाओं को दूर करने और वैश्विक भलाई के लिये उपलब्ध संसाधनों का उपयोग करने के लिये किया जा सकता है। उदाहरण के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकी का उपयोग वायरस के डीएनए जीनोम अनुक्रमण से संबंधित वृहत डेटा को संग्रहित और वर्गीकृत करने के लिए किया गया था।

अभिषेक फोगाट
कार्यालय अधीक्षक

भारतीय संविधान की आठवी अनुसूची में शामिल भाषाएँ

1. असमिया	7. तमिल	13. संस्कृत	19. मैथिली
2. उड़िया	8. तेलुगू	14. सिंधी	20. संथाली
3. उर्दू	9. पंजाबी	15. हिन्दी	21. बोडो
4. कन्नड़	10. बांग्ला	16. मणिपुरी	22. डोगरी
5. कश्मीरी	11. मराठी	17. नेपाली	
6. गुजराती	12. मलयालम	18. कोंकणी	

नौकरी

ना छोड़ी जाती, ना संभाली जाती
घर से दूर रहने वालों को बड़ा सताती है ये नौकरी।

सब कहते हैं अब तो बड़े मजे हैं यार
हमारी जगह महसूस कर के देख लो,
घर वालों के बिना कितने फीके हैं त्योहार।

सब कुछ होते हुए भी बन जाते हैं किराएदार,
सब्जी ना भी बने कभी तो चुपचाप खा लेते हैं अचार।

एक ही रुटीन है जीवन का
उठो, जागो और हो जाओ तैयार।

छूट जाता है इसी चक्कर में
किसी का प्यार तो किसी का यार।

बंद कमरा, अंजाने लोग,
सिमट जाता है संसार।

जंग से कम नहीं होता
अकेले निकालना शनिवार-रविवार,
महिनों तक करते है छुट्टी का इंतजार।

कांधे पर बैग और वो लंबा सफर,
घर जाने की खुशी में हो जाता है पार।

दो दिन की मस्ती फिर वापस आना यार,
बिना काम किए पगार तो देती नहीं है ना सरकार।

फिर भी शुक्रगुजार हूँ इस नौकरी का मेरे यार,
घर चलाती है ये नौकरी,
घर से दूर रहने वालों को बड़ा सताती है ये नौकरी।

दिपाली असनानी
सहायक

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।
- महात्मा गांधी

डांग

डांग जिले का इतिहास रामायण काल से महत्वपूर्ण रहा है। रामायण महाग्रन्थ से पता चलता है कि भगवान राम वनवास की यात्रा में इस क्षेत्र से गुजरे थे। यह कोई और नहीं बल्कि रामायण काल का दंडकारण्य ही है। डांग का इतिहास बहुत वीरतापूर्ण रहा है। इस संपूर्ण भूभाग में 5 कबीले थे और 5 अलग-अलग राजा थे। जब अंग्रेजों ने यहाँ पर घुसने की कोशिश की तो पाँचों राजाओं ने मिलकर डांग भू-भाग की रक्षा के लिए अंग्रेजी हुकूमत से लोहा लिया। ये लम्बी लड़ाई लष्करिय अम्बा क्षेत्र में हुई थी। इसके बाद 1842 में अंग्रेजों और इन पांच राजाओं में एक समझौता हुआ जिसके अनुसार अंग्रेज इन राजाओं को 3000 चांदी के सिक्के इस भू-भाग की प्राकृतिक सम्पदा के दोहन के लिए प्रतिवर्ष दिया करेंगे। ये परम्परा आज भी चल रही है जो इन 5 राजाओं के उत्तराधिकारियों की आय का मुख्य स्रोत है। हालाँकि 1970 में सभी राजाओं के प्रिवीपर्स खत्म कर दिए गए हैं, लेकिन फिर भी इनका चल रहा है। इन पाँचों राजाओं के वरिष्ठ अहवा में हर वर्ष गाजे-बाजे और बग्घी के साथ एकत्र होते हैं और यहाँ इनको ये वार्षिक धनराशि प्रदान की जाती है। डांग जिले के कुछ दर्शनीय स्थल निम्नलिखित हैं :-

1. **आहवा सनसेट पॉइंट**

   यह डांग जिले का मुख्य आकर्षण स्थल है। यह आहवा में स्थित है। यहां पर सूर्योदय और सूर्यास्त का बहुत अच्छा दृश्य देखने के लिए मिल जाता है। यहां पर एक छोटा सा चिल्ड्रन पार्क भी बना हुआ है, बरसात में यहाँ की हरियाली दर्शनीय होती है। यह जगह प्राकृतिक सुंदरता से परिपूर्ण है।

2. **शिव घाट**

   शिव घाट, डांग जिले का एक मुख्य पर्यटन स्थल है। यह एक सुंदर झरना है। यहां शिव और पार्वती जी का मंदिर भी है। यहां पर एक सुंदर घाटी भी है। चारों तरफ प्राकृतिक दृश्य देखने के लिए मिलते है। यहाँ एक झरना है जो आहवा से पिंपरी जाने वाली सड़क पर स्थित है। बरसात के समय यह जगह आकर्षक हो जाती है। यहां पर बहुत सारे बंदर भी हैं।

3. **माया देवी मंदिर**

   यह मंदिर माया देवी को समर्पित है। यह डांग जिले में पूर्णा नदी के किनारे बना हुआ है। यहां पूर्णा नदी पर एक छोटा सा बांध बना हुआ है। यह बरसात में ओवरफ्लो होकर बहता है, जिसका दृश्य बहुत ही सुंदर होता है। यह मंदिर बांध से थोड़ी ही दूर पर है। यह जगह भेंसकात्री के पास स्थित है।

4. **गीरा जलप्रपात**

   यह जलप्रपात गुजरात का सबसे बड़ा जलप्रपात है। यह डांग जिले की वघई तहसील में स्थित है। यह अंबिका नदी पर बना हुआ है और बहुत सुंदर है। यहां बरसात के समय जलप्रपात का दृश्य बहुत ही सुंदर रहता है।

5. **वघई बॉटनिकल गार्डन**

यह डांग जिले की वघई तहसील में स्थित है। यहां विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे देखने के लिए मिलते हैं। यहां पर बांस की विभिन्न तरह की प्रजातियां देखने के लिए मिल जाती है। इसके अलावा फूलों और मेडिकल प्लांट की भी प्रजातियां देखने के लिए मिलती है। बच्चों के खेलने के लिए अलग से एरिया बना हुआ है। पार्क को बहुत ही क्रिएटिव तरीके से बनाया गया है। इसमें बहुत सारी आश्चर्यजनक चीजें देखने के लिए मिलेगी। पार्क के पास ही वंसदा नेशनल पार्क है जो 24 हेक्टेयर क्षेत्र फैला हुआ है। यहां पेड़-पौधों की 1400 से भी ज्यादा प्रजातियां देखने के लिए मिल जाती हैं।

6. **गिरमल जलप्रपात**

यह जिले का सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह जलप्रपात चारों तरफ से जंगल से घिरा हुआ है। यह डांग जिले के गिरमल गांव के पास और पूर्णा वन्य जीव अभयारण्य के अंदर स्थित है। यहां बरसात में जलप्रपात का दृश्य बहुत ही जबरदस्त रहता है। यहां पर जलप्रपात के आसपास आपको खाने-पीने के लिए चाय और नाश्ता के ठेले देखने के लिए मिलते है जो स्थानीय लोगों के द्वारा ही लगाए जाते हैं। यहां पर बैठने के लिए भी स्थान बनाया गया है, जहां से आप जलप्रपात के सुंदर दृश्य देख सकते हैं और प्राकृतिक वातावरण का आनंद ले सकते हैं।

7. **यू टर्न पॉइंट**

यहां पर आपको अंबिका नदी का बहुत सुंदर दृश्य देखने के लिए मिलता है, जहां पर अंबिका नदी धुमावदार आकार में बहती है। यहां पर एक छोटा सा स्टॉप डैम भी बना हुआ है।

8. **शबरी धाम**

शबरी धाम डांग जिले का एक मुख्य धार्मिक स्थल है। यह मंदिर प्राचीन है। यह मंदिर श्री राम जी, लक्ष्मण जी और माता शबरी जी को समर्पित है। इस मंदिर को लेकर प्राचीन कहानी है, जो रामायण में कही जाती है। प्राचीन समय में जब रामजी वनवास के समय सीताजी को ढूंढ रहे थे। तब रामजी दंडकारण्य वन में आए थे और यहां पर शबरी माता से मिले थे। शबरी माता ने रामजी को झूठे बेर खिलाए थे क्योंकि शबरी माता बेर को चखकर देख रही थी कि बेर मीठे हैं या नहीं और जो बेर मीठे होते थे वह उसे अपनी टोकरी में श्री रामजी के लिए रख लेती थी।

रामजी ने शबरी की भक्ति को देखकर, उसके झूठे बेर ग्रहण किए थे। यहां पर आपको श्री रामजी, माता शबरीजी और लक्ष्मणजी की प्रतिमा देखने के लिए मिलती है। यह मंदिर बहुत ही सुंदर बना हुआ है। यहां पर और भी बहुत सारे देवी-देवताओं की प्रतिमा देखने के लिए मिल जाती है। यहां पर भगवान शंकर, हनुमानजी की प्रतिमाएं हैं।

9. **पंपा सरोवर**

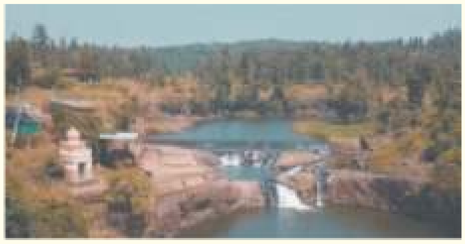

पंपा सरोवर डांग जिले का एक मुख्य धार्मिक स्थल है और यहां पर छोटा सा चेक डैम भी बना हुआ है। इस जगह को पंपा सरोवर के नाम से जाना जाता है। कहा जाता है कि प्राचीन समय में रामायण काल में यहां पर शबरी जी स्नान किया

करती थी और जब राम जी यहां पर शबरी से मिलने के लिए आए थे। तब राम जी और लक्ष्मण जी ने भी यहां पर स्नान किया था। पंपा सरोवर डांग जिले में सुबीर से करीब 10 किलोमीटर दूर है। आप यहां पर गाड़ी से पहुंच सकते हैं और इस जगह घूम सकते हैं। यहां जाने के लिए अच्छी सड़क बनी हुई है। आपको यहां पर जंगल का दृश्य देखने के लिए मिलता हैं।

10. डॉन हिल

डॉन हिल, डांग जिले का एक आकर्षण स्थल है। यहां पर सुंदर पहाड़ी एरिया देखने के लिए मिलता है। यहां गुजरात राज्य की सबसे ऊंची पहाड़ी है। यह जगह आहवा तहसील से करीब 35 किलोमीटर दूर है। यह गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा पर स्थित है। यहां पर आने के लिए सड़क माध्यम उपलब्ध है। यहां पर आप घुमावदार सड़क से होते हुए पहुँच सकते हैं। बरसात में यह जगह हरियाली की चादर ओढ़ लेती है। आप यहां पर रात को रुक सकते हैं। यहां पर आपको ठहरने के लिए टेंट की सुविधा मिल जाती है। यहां पर ठंडी हवा बहुत ही आनंद देती है।

11. अंजनी कुंड गुफा एवं जलप्रपात

अंजनी कुंड गुफा एवं जलप्रपात डांग जिले का एक मुख्य प्राकृतिक पर्यटन स्थल है। यह जगह डांग जिले में

आहवा तहसील में अंजनी गांव के पास स्थित है। इस झरने और गुफा तक पहुंचने के लिए आपको ट्रैकिंग करके आना पड़ता है। इस झरने में आने वाले रास्ते में, आपको एक और छोटा सा झरना देखने के लिए मिलता है, जो बहुत ही सुंदर लगता है। यहां आस-पास आपको जंगल का दृश्य देखने के लिए मिल जाता है। यह जलप्रपात ऊंचाई से नीचे एक कुंड में गिरता है। जलप्रपात के नीचे की तरफ चट्टानों में गुफा देखने के लिए मिलती है। यह गुफा अंजनी माता को समर्पित है। अंजनी माता, हनुमानजी की माता है। यहां पर अंजनी माता और हनुमानजी की प्रतिमा के दर्शन करने के लिए मिलते हैं। यहाँ का दृश्य बहुत ही लाजवाब रहता है। आप यहां पर आकर अच्छा समय बिता सकते हैं।

12. पांडव गुफा

पांडव गुफा डांग जिले का एक मुख्य आकर्षण स्थल है। यहां पर आपको प्राचीन गुफाएं और जलप्रपात देखने लिए मिलते हैं। कहा जाता है कि यहां पर पांडव अपने वनवास काल के दौरान रहा करते थे। यहाँ पर अलग-अलग कक्ष बने हुए हैं। सबसे बड़े कक्ष में भीम रहा करते थे। यह जगह प्राकृतिक सुंदरता से घिरी हुई है। यह जगह घने जंगल के अंदर स्थित है। यहां पर बरसात के समय आपको एक सुंदर सा जलप्रपात भी देखने के लिए मिलता है। गुफा के अंदर आपको भगवान शिवजी के दर्शन मिलते हैं। पांडव यहां पर भगवान शिव की पूजा अर्चना किया करते थे। यह गुफा डांग जिले में जावातला गांव के पास स्थित है।

केतनकुमार महेशभाई चौधरी
बहुकार्यकर्मी

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976
(यथा संशोधित 1987, 2007 तथा 2011) के तहत

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे।

संघर्ष

ठान लिया तो जीत और
मान लिया तो हार है।
कोशिश करने वालों की सदा,
होती जय-जयकार है।

ये चुनौतियाँ तुझे डराएँगी,
पर यहीं दरअसल नींद से भी जगाएँगी।
संघर्ष रास्तों पर हर क्षण होगा,
और अब यही जीवन या मरण होगा।
अगर कांटो भरा सफर स्वीकार है
तो ठान लिया तो जीत और
मान लिया तो हार है।

सफलता जब नजर मिलायेगी
तेरी नाकामियां सर शर्म से झुकायेंगी
कितना भी किया विचलित इसको पर
कभी न मानी इसने हार है।
क्यूंकि ठान लिया तो जीत और
मान लिया तो हार है॥

यश बैसोया
प्रवर श्रेणी लिपिक

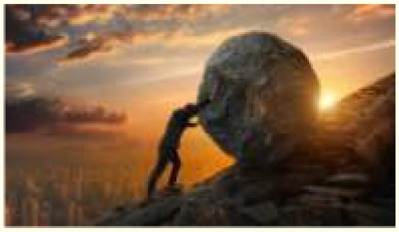

उम्मीद

जब भी बैठता हूँ किताब लेकर,
हर बार टूट जाती है मेरी उम्मीद।
पढ़ूंगा सुबह जल्दी उठकर,
यही सोचकर आ जाती है मुझे नींद।

मेरी आँखों का भारीपन,
मेरे सपनों में बाधा डाल गया।
सवेरे जब जगा,
दिन दोपहरी तक आ गया।

दिनचर्या जो बनाई थी मैंने,
देखकर मन में उदासी छा गई।
कल से पढ़ूंगा सोचते-सोचते,
रात तारों से छा गई।

दो पन्ने क्या पलटे मैंने,
झपकियाँ मुझे आने लगी।
पुस्तक कब बन गई तकिया,
नींद गहराई में जाने लगी।

सोचकर अपने सपनों के बारे में,
मैं अब घबराने लगा,
अब हर पल असफलता का डर,
मेरे मन को सताने लगा।
इसी डर से मुझे रात भर नींद नहीं आई।

गोविंद राम
प्रवर श्रेणी लिपिक

समस्त भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपि आवश्यक हो तो वह देवनागरी ही हो सकती है।
– (जस्टिस) कृष्णस्वामी अय्यर

जरा सोचें

हमारे जीवन को सुचारु रुप से चलाने के लिए प्रकृति ने हमें बहुत कुछ दिया है। सांस लेने के लिए ऑक्सीजन, पीने के लिए जल, खाने के लिए अन्न, फल, सब्जियाँ आदि और भी बहुत कुछ जिनकी सूची काफी लंबी हो सकती है। ये सब किसी भी जीवित प्राणी के लिए अनिवार्य हैं अर्थात् हम इनके बिना जीवित नहीं रह सकते हैं। ये सब हमारे लिए अमूल्य हैं क्योंकि इनकी कमी या समाप्ति होने पर हम मुहमांगी कीमत देकर भी इन्हें प्राप्त नहीं कर सकते हैं। आइये, इनमें से कुछ अति महत्वपूर्ण प्राकृतिक जीवनदायी उपहारों के बारे में बात करते हैं।

प्राणवायु ऑक्सीजन

सांस लेने के लिए तो ऑक्सीजन ही चाहिए। प्रकृति इसे मुफ्त में दे रही है और शायद इसलिए हम इसका महत्व कम आंक रहे हैं या समझ नहीं पा रहे हैं। वायु प्रदूषण को बढ़ाने के नित नये साधन हम खोजते जा रहे हैं और अनावश्यक रुप से बढ़ाते भी जा रहे हैं, चाहे वो कल-कारखाने या वाहन हों या जीवन को आसान बनाने वाले और सुविधा देने वाले उपकरण हों। इन सभी ने हमारे लिए सुविधाएं तो कर दी हैं लेकिन ये जहरीली गैसों में वृद्धि करते हुए जीवनदायी ऑक्सीजन को खत्म कर रहे हैं। दूसरी तरफ जिस गति से हम पेड़-पौधों को अपने उपयोग अथवा उस स्थान का उपयोग करने के लिए काटते जा रहे हैं, वह दिन दूर नहीं जब हमारी आगे आने वाली पीढ़ियों को ऑक्सीजन केवल मानवनिर्मित यंत्रों के माध्यम से ही मिलेगा और इसे खरीदना पड़ेगा।

जीवनदायी जल

नदी-नालों, सरोवर, तालाब, झरनों के अलावा भूमिगत जल की निकासी के विभिन्न स्रोतों से पृथ्वी पर पेयजल उपलब्ध है। बादल बनने एवं बरसात होने की प्रक्रिया से प्रकृति जल की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। प्रकृति अपना कार्य लगातार सुचारु रुप से करने के प्रयासों में कोई कमी नहीं छोड़ती है। जीव-जन्तु प्रकृति के अनुसार जीवन जीते हैं लेकिन पृथ्वी के सबसे 'समझदार जीव' मनुष्य ने प्रकृति की खिलाफत करने की तो जैसे कसम खा रखी है। जल के अत्यधिक दोहन से भूमिगत जल-स्तर बहुत नीचे चला गया है। धरती के ऊपरी स्तर के जल स्रोतों को भी न्यूनतम स्तर पर ला छोड़ा है और जो बचा है उनमें कल-कारखानों का रसायन युक्त जहरीला पानी और सीवरेज नालों का अवशिष्ट मिला कर अनुपयोगी बनाया जा रहा है। यहाँ यह कहा जाएगा कि ये सब तो अधिकतर समुद्र में डाला जा रहा है जिसका पानी पीने के काम नहीं आता है। लेकिन क्या समुद्र में जीव-जन्तु नहीं रहते हैं? कल-कारखानों का रसायन युक्त जहरीला पानी क्या उनके लिए हानिकारक नहीं है।

जल के सभी स्रोत समय के साथ पुनः उसी स्थिति में आ जाते हैं जिस स्थिति में ये दोहन पूर्व थे, लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि इनका दोहन एक सीमा तक किया जाए। क्या हम जनसंख्या को नियंत्रित करके जल सहित अन्य सभी प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को कम नहीं कर सकते ?

कल-कारखानों के जहरीले रसायन और अपशिष्ट पदार्थों को समुद्र एवं नदी-नालों को प्रदूषित करने से बचाने के लिए विज्ञान के इस युग में क्या कोई उपयुक्त वैकल्पिक व्यवस्था नहीं खोजी जा सकती है।

खाद्यान्न एवं फल-सब्जियाँ

कहने को तो हम अनाज खरीदते हैं और उसे पिसवाकर काम में लेते हैं, बाजार से ताजे फल एवं सब्जियाँ चुनकर लाते हैं और फक्र से कहते हैं कि हम ताजी चीजें खाते हैं। हालांकि हमें यह पता है कि आजकल मुनाफाखोरी के वशीभूत होकर अनाज, फल, सब्जियाँ आदि खाद्यानों की मात्रा एवं सुंदरता को बढ़ाने वाले रासायनिक तत्वों का प्रयोग किया जाता है और गुणवत्ता पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है। इनमें से कुछ लोग स्वयं के लिए ऑर्गेनिक खेती भी करते हैं। लेकिन अधिकांश लोग ऐसा नहीं कर पाते हैं और वे स्वयं भी उन्हीं रसायन युक्त खाद्य पदार्थो का सेवन करते हैं। उन लोगों के हालात और भी चिंताजनक हैं जो डिब्बाबंद भोजन पर ही निर्भर हैं। फिर भी हम अपने मन को बहलाने के लिए शुद्ध खाद्य पदार्थो के सेवन करने का भ्रम पाले हुए हैं। वस्तुतः वर्तमान समय में हमें नहीं पता कि हम क्या खा रहे हैं और क्या पी रहे हैं। सब कुछ राम-भरोसे ही चल रहा है।

हम यह मानते हैं कि शहरों ने विकास किया है। शिक्षा और रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। कल-कारखानों में बढ़ोतरी से उद्योगों का विकास हुआ है। आदमी का जीवन-स्तर उच्च हुआ है और प्रति व्यक्ति आय बढ़ी हैं। एक बार तटस्थ होकर सोचें कि क्या वास्तव में हमने कुछ पाया है और यदि पाया भी है तो किस कीमत पर। हमने इन सबकी कीमत हमारे जीवन से समझौता करके चुकायी है। हमने पर्यावरण से खिलवाड़ कर प्रकृति के जीवनदायी उपहारों को नष्ट करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। हम स्वयं ही अपने अस्तित्व को नष्ट करने में लगे हुए हैं। यह ठीक वैसा ही है जैसे कुल्हाड़ी पर पैर मारना। कदाचित हम स्वयं ही अपने दुश्मन बने हुए हैं।

हमें अब जनसंख्या वृद्धि पर लगाम कसनी होगी ताकि इसकी वजह से होने वाली विभिन्न सामाजिक बुराइयों एवं आर्थिक कठिनाइयों को नियंत्रित किया जा सके। हमें जीवन की आवश्यकताओं एवं विलासिताओं में भेद करना सीखना होगा। यह सोचना होगा कि हमारे लिए क्या जरुरी है और कितनी मात्रा में। कोरोना ने इसका ट्रेलर दिखाया था, अब अगर पूरी फिल्म समझ आ गई हो तो सोचिए। आओ जरा सोचें कि हम आगे आने वाली पीढ़ियों को कैसी दुनिया देकर जाएंगे। प्रसिद्ध कवि 'नीलोत्पल मृणाल' की एक कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं :

"थोड़ा सा नदी का पानी, मुट्ठी भर रेत रख लो,
धान-गेहूं-सरसों वाले, हरे-हरे खेत रख लो ।
रख लो एक बैल भईया, हल से बांध के,
दुअरे पर गाय खड़ी हो, चारा खाए सान के ।
पूछेगा जो कोई तो उसको बताएंगे,
आने वाली पीढ़ियों को चल के दिखाएंगे,
कि दुनिया ऐसी हुआ करती थी ।"

अमित इन्दौरिया
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकता।
– पंडित गोविंद बल्लभ पंत

प्रकृति की गोद में बसा तमासीन जलप्रपात

मेरे ग्राम पितिज, प्रखण्ड इटखोरी, जिला चतरा, झारखण्ड से मात्र 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है, तमासीन जलप्रपात। वैसे तो झारखण्ड की राजधानी 'रांची' को जलप्रपातों का शहर कहा जाता है एवं पूरा झारखण्ड प्राकृतिक सौंदर्य से भरा पड़ा है। मैं जब भी अपने गाँव जाता हूँ तो कोशिश करता हूँ कि अधिकतर समय प्रकृति की गोद में बिताऊँ। इसी कड़ी में मैं जब वर्ष 2022 की दीपावली में अपने गाँव गया तो मन किया कि क्यों न पूरे परिवार के साथ तमासीन जलप्रपात की सैर करके आया जाये। फिर क्या था सुबह तमासीन जलप्रपात जाने का कार्यक्रम बन गया। सुबह जल्दी नाश्ता करके सभी तैयार हो गए। सिर्फ माँ और बाबूजी ने मना कर दिया क्योंकि वहाँ लगभग 350 सीढ़ियों से पहले उतरना पड़ता है फिर वापसी में चढ़ना पड़ता है। खैर इस कारण हम लोगों ने भी ज्यादा जिद नहीं की। मैं, श्रीमतीजी, भैया, भाभी, छोटी बहन, जीजाजी एवं बच्चे तैयार हो गए। सभी लोग एक कार में नहीं आ सकते थे इसलिए मैंने अपना पुराना स्कूटर भी ले लिया। लगभग 11 बजे घर से निकल पड़े। रास्ता पूरी तरह जंगल से होकर गुजरता है। जंगल के बीच-बीच में कई गाँव भी बसे हुए हैं। रास्ता थोड़ा खराब होने के कारण लगभग 40 मिनट के बाद हम लोग उस जगह पहुँच गए, जहां से आगे कोई भी वाहन नहीं जा सकता था। गाड़ी को वहीं पार्क कर दिया गया। पहले अपने वाहन को भगवान भरोसे वहीं छोड़कर चले जाते थे। परंतु इस बार किसी स्थानीय व्यक्ति के द्वारा पार्किंग की सुविधा प्रदान की जा रही थी।

पार्किंग से 100 मीटर की दूरी पर सीढ़ियाँ शुरु होती हैं। लगभग 350 एकदम खड़ी सीढ़ियाँ उतरना था। झरने की कल-कल करती आवाज वहीं से सुनाई दे रही थी। बच्चे काफी उत्साहित थे। हमारे सामने चुनौती थी कि साथ में लाये खाने-पीने के सामान के साथ-साथ बच्चों को भी सुरक्षित नीचे उतारना। चारों तरफ घने जंगल के बीच टूटी-फूटी सीढ़ियों से हम धीरे-धीरे नीचे उतरते गये। जैसे-जैसे हम नीचे उतर रहे थे, झरने की आवाज तेज होती जा रही थी। बच्चे कहने लगे कि ये तो बिल्कुल डिस्कवरी चैनल की तरह लग रहा है। नीचे पत्थरों को काटते हुए नदी बह रही थी। वहाँ का दृश्य काफी मनोरम, मनमोहक, दिल को सुकून देने वाला था। पानी बिल्कुल साफ था। सभी लोगों ने काफी मस्ती की। महिलाएँ इंस्टाग्राम में रील्स बनाने लगीं। बच्चे पानी में खेलने लगे। मुख्य झरना वहाँ से लगभग 300 मीटर दूर था। चारों तरफ पत्थर होने की वजह से नदी की धारा तितर-बितर होकर बह रही थी। मुख्य झरने के पानी के लगातार गिरने से काफी गहरी खाई बन गई है। बच्चे साथ में होने के कारण हम मुख्य झरने के पास नहीं गये। नदी की धाराओं के बहने से पत्थरों पर मनमोहक कलाकृतियाँ बन गयी थीं जो सभी का मन मोह रही थी। पास में ही एक बड़ी गुफा है जिसमें तमासीन देवी होने की मान्यता है। काफी लोग इस गुफा में पूजा करते हैं। इस समय वहाँ काफी कम भीड़ थी। दूर-दूर तक गिने-चुने लोग ही दिखाई दे रहे थे। कम भीड़ होने के कारण काफी शांति थी। मैंने किताबों में तो खूब पढ़ा था कि प्रकृति की गोद क्या होती है परंतु वहाँ की जाकर मैंने वास्तव में उसे महसूस किया। लगभग 3 बजे हमने पत्थरों पर बैठकर जलपान किया। हमारे पास वहाँ प्रसिद्ध मिठाई खीर-मोहन भी थी जिसका हम सबने पूरा लुत्फ उठाया। लगभग 4 बजे हम वहाँ से वापस रवाना हो गये। थके होने के कारण वापस सीढ़ी चढ़ना काफी मुश्किल लग रहा था। बच्चे भी काफी थक चुके थे। जैसे-तैसे पुनः ऊपर अपनी कार के पास आ गए एवं चल दिये अपने गाँव।

पंकज कुमार
सहायक

समाज निर्माण में शिक्षक की भूमिका

प्राचीन काल से ही समाज में शिक्षक का स्थान पूजनीय रहा है। त्रेता युग की बात करें तो भगवान श्री राम को उनके गुरु वशिष्ठ द्वारा ज्ञान की प्राप्ति हुई, ठीक उसी प्रकार द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण को संदीपनी ऋषि द्वारा ज्ञान की प्राप्ति हुई। हमारे समाज में अनेक शिक्षक हुए हैं जिन्होंने अपने ज्ञान के द्वारा अपने शिष्यों को अनंत ऊंचाइयों तक पहुंचाया है, जैसे स्वामी विवेकानंद के गुरु रामकृष्ण परमहंस, चंद्रगुप्त मौर्य के गुरु आचार्य चाणक्य ने चन्द्रगुप्त को सम्राट बनाने में अहम योगदान दिया।

शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है। कोई उसे गुरु कहता है, कोई शिक्षक कहता है, कोई आचार्य कहता है तो कोई अध्यापक या टीचर कहता है, ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करता है। सही मायनों में कहा जाए तो एक शिक्षक अपने विद्यार्थी के जीवन को सही राह दिखा सकता है। इस प्रकार शिक्षक समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक द्वारा दी गई शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षकों द्वारा प्रारम्भ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही जीवनमूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार कुशलता और योग्यता प्रदान करती है।

किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। यदि राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। यदि राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहाँ की प्रतिभा दब कर रह जाएगी। यद्यपि किसी राष्ट्र की शिक्षा नीति ठीक न हो लेकिन एक शिक्षक ऐसी शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में परिवर्तित कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम है जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्त्व को अधोरेखांकित करते हैं। किसी भी समाज के निर्माण की अहम भूमिका होती है क्योंकि शिक्षक ही समाज को सही दिशा देने की क्षमता रखता है। अपनी सृजनात्मक क्षमता के जरिये वह न सिर्फ समाज में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है, अपितु नवाचरों को स्थापित करके नये शैक्षणिक वातावरण का निर्माण भी कर सकता है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ-प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है।

शिक्षा अत्यंत ही अनमोल एवं मूल्यवान है, जिससे विद्यार्थी स्वयं के ज्ञान का विस्तार तो करता ही है, साथ ही देश को भी मजबूत करता है। डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षक देश के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इसी वजह से अधिक सम्मान के योग्य होते हैं। भारत में सनातन काल से गुरु और शिष्य का संबंध समर्पण की भावना से परिपूर्ण रहा है। गुरु देश के भविष्य को संवारता है। वर्तमान पीढ़ी देश का भविष्य है। गुरु जैसे संस्कार युवा पीढ़ी को देंगे वैसा ही देश का चरित्र बनेगा। शिक्षक को ईश्वर-तुल्य माना जाता है और इसीलिए कहा गया है –

"गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः"

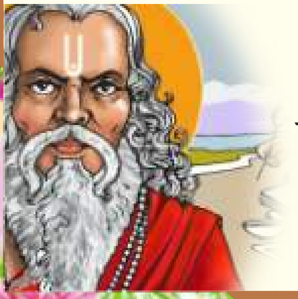

अर्थात् गुरु ही ब्रह्मा है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही शिव है। गुरु ही साक्षात परब्रह्म है और ऐसे गुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

अभिनव शर्मा
बहुकार्यकर्मी

बचपन

आज बचपन बहुत याद आता है।
वो स्कूल न जाने का बहाना और
न जाने पर माँ की प्यारी सी डांट खाना
आज बचपन बहुत याद आता है।

वो धूप में साइकिल चलाना,
गाँव में नलकूप पर नहाना और
घर आकर बीमार पड़ जाना,
आज बचपन बहुत आद आता है।

वो पारलेजी बिस्कुट के लिए बड़े भाई से लड़ना,
घी व चीनी के साथ रोटी खाना,
शरारत पर पिता से थप्पड़ खाना
आज बचपन बहुत याद आता है।

वो कागज की नाव बनाना,
दोस्तों की पेन्सिल व पैन चुराना,
गुल्ली डंडा खेलना, कीचड़ में चलना
आज बचपन बहुत याद आता है।

वो स्कूल में अध्यापक से रोज डांट खाना,
खेलना, कूदना, छुपम छुपाई, वो छुट्टी के दिन,
वो आलस भरी अंगड़ाई
तभी तो आज बचपन बहुत याद आता है।

वो पढ़ने के लिए आँसू बहाना,
वो रुठना, मनाना,
वाकई बचपन तो होता है सुहाना,
यादों से भरा बचपन बहुत याद आता है।

हरकेश मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

माता-पिता के चरणों में बस रहे चारों धाम

वो ही मेरे ईश्वर हैं
वही तो मेरे राम हैं,
माता-पिता के चरणों में
बस रहे चारों धाम हैं।
मिलकर हमको पाला है
सच्चाई का ज्ञान दिया
उनको ही अपनी दुनिया
हमने भी है मान लिया,
जब भी कदम डगमगाए
लिया उन्होंने थाम है
माता-पिता के चरणों में
बस रहे चारों धाम हैं।

नींद नहीं जब आई
लोरी मुझे सुनाई है
जब भी मैं बीमार हुआ
माँ ने नींद भुलाई है,
माँ का माँ होना भी तो
खुद में एक संग्राम है
माता-पिता के चरणों में
बस रहे चारों धाम हैं।
अपनी है परवाह नहीं
सदा सुखी रहे परिवार
कमी न हो घर में कोई
करते पिता यही विचार,
पहचान हमारी पूरी जब
जुड़ता पिता का नाम है
माता-पिता के चरणों में
बस रहे चारों धाम हैं।
जीवन की इन राहों में
जब आई है कठिनाई
अपने अनुभव से हमको
राह सही है दिखलाई,
उनसे ही मिलता हमको
जीने का नया आयाम है
माता-पिता के चरणों में
बस रहे चारों धाम हैं।

प्रमोद कुमार मीना
प्रवर श्रेणी लिपिक

वेब सीरीज : सिनेमा और टीवी सीरियलों का नया विकल्प

बदलते समय के साथ मनोरंजन के साधनों में नये-नये प्रयोग होते रहे हैं। इन नए प्रयोगों ने एक तरफ जहाँ पुराने मनोरंजन के साधनों में नए प्रयोगों को जन्म दिया वहीं पुराने साधनों के अस्तित्व पर संकट भी ला खड़ा किया। चलचित्र के आविष्कार के बाद नाटक जगत पर संकट के बादल आए। आज नाटक मंडलियों और उनके प्रदर्शन को अंगुलियों पर गिना जा सकता है। टेलीविजन के आविष्कार ने सिनेमा जगत में भी काफी परिवर्तन ला दिया। शुरुआत में मुख्यधारा के सिनेमा जगत के लोग टेलीविजन के कलाकारों को बड़ा ही निम्नस्तरीय कलाकार मानते थे और रुपहले पर्दे की दुनिया के बड़े सितारे टेलीविजन की दुनिया में काम करना अपनी तौहीन मानते थे। टेलीविजन धारावाहिकों का आविष्कार धीरे-धीरे सिनेमाघरों के अस्तित्व पर खतरा बनकर उभरा। कई सिनेमाघर तो बंद ही हो गए। इस संक्रमण काल में मुख्य धारा के सिनेमा जगत के लोगों ने धीरे-धीरे टेलीविजन की दुनिया से जुड़ना प्रारंभ किया और धारावाहिकों में भी नये प्रयोग और चकाचौंध बढ़ गयी। समय कभी एक सा नहीं रहता। इस जगत में भी पुनः परिवर्तन आया। मोबाइल और इंटरनेट के प्रसार ने टेलीविजन के धारावाहिकों को धीरे-धीरे मोबाइल में भी स्थानांतरित करना शुरु कर दिया। मोबाइल ने तो टेलीविजन निर्माताओं के लिए भी खतरा पैदा कर दिया। अब जब हर चीज मोबाइल में है तो फिर टेलीविजन सेट क्यों खरीदे कोई।

इंटरनेट और मोबाइल ने मिलकर एक बार फिर धारावाहिकों के स्वरुप में परिवर्तन लाना प्रारंभ कर दिया। यह परिवर्तन वेब सीरीज के रुप में आया। रुपहले पर्दे के कुछ बड़े निर्माता और कलाकारों ने भी वेब सीरीजों में काम करना प्रारंभ कर दिया। अमेजन प्राइम और न जाने कितनी वेब सीरीज प्रदर्शन करने वाली वेबसाइटें हैं। कुल मिलाकर सात से आठ सत्रों वाले ये धारावाहिक (वेब सीरीज) दर्शकों को अपने पाश में ऐसा बांध लेते हैं कि पूरा देखे बिना लोग इनसे दूर हो नहीं पाते। कुल मिलाकर चार से पाँच घंटे में इन वेब सीरिजों की कहानियाँ पूरी हो जाती हैं। मुख्य धारा के धारावाहिकों की भाषा और सामग्री हर उम्र वर्ग के दर्शकों के लिए उपयुक्त हो इसका विशेष ध्यान रखा जाता है। यदि कहीं किसी प्रकार की गड़बड़ी दिखी तो नियामकों की फटकार और फिर उस धारावाहिक के प्रसारण के निरस्त होने की संभावना काफी प्रबल होती है। ऐसे में धारावाहिक निर्माताओं को काफी सावधान रहने की आवश्यकता होती है पर ऑनलाइन वेब सीरीज में न तो किसी नियामक का डर और न ही इसकी सामग्री पर आपत्तिजनक होने की शिकायत का डर रहता है। भारत में ऑनलाइन सामग्री के नियमन का कोई विशेष अनुदेश न होने के कारण अधिकांश वेब सीरीज में अश्लील और कामुक दृश्य परोसना आम बात हो गई है। शायद निर्माता यही सोचते हों कि गाली-गलौज और कामुक-अश्लील दृश्य भरने से दर्शकों में वेब सीरीज का काफी प्रचलन होगा और फिर उनकी सीरीज को अधिकांश दर्शकों तथा उनसे मिलने वाले राजस्व का लाभ मिलेगा। हालांकि अब भी कुछ ऐसे निर्माता हैं जिनकी सीरीज काफी साफ-सुथरी होती हैं लेकिन इनकी संख्या काफी कम है।

जो भी हो बदलते समय में वेब सीरीज मनोरंजन का नया विकल्प बनकर उभरा है और वह दिन दूर नहीं है जब लंबे-उबाऊ धारावाहिकों को छोड़ दर्शक वेब सीरीज ही पसंद करेंगे। पर इनके निर्माता यदि इसकी कथानक सामग्री और भाषा का विशेष ध्यान रखें तो संभवतः इसकी पैठ और भी दर्शकों तक हो सकती है।

रजनीश कुमार राजन

सहायक

सेल फोन का संक्षिप्त इतिहास : 1जी से 5जी तक

1जी से 5जी तक : सेल फोन का इतिहास और उनकी सेल्यूलर पीढ़ी वायरलेस सेल्यूलर तकनीक की शुरुआत के बाद से 42 साल से कुछ अधिक समय लगा है और तब से 1जी से 5जी तक बहुत कुछ बदल गया है, जैसे कि....

डाउनलोड गति तेज हो गई है।

सेल फोन छोटे हो गए हैं।

फोन से इंटरनेट पर सर्फिंग करना आम बात हो गई है।

अब लगभग हर चीज के लिए एक ऐप है।

जानकारी के रसातल में गोता लगाते हुए, आइए 1जी से 5जी तक की समयरेखा पर एक नजर डालें संक्षेप में प्रत्येक पीढ़ी को यह पता लगाने के लिए कि उसने क्या पेश किया है, हम उस समय उपयोग किए जाने वाले सबसे लोकप्रिय सेल फोनों को भी देखेंगे।

1जी :

निप्पॉन टेलीग्राम और टेलीफोन द्वारा 1979 में लॉन्च किया गया, 1जी को पहली बार टोक्यो के नागरिकों के लिए पेश किया गया था। 1984 तक, पहली पीढ़ी के नेटवर्क ने पूरे जापान को कवर कर लिया, जिससे यह देश भर में 1जी सेवा देने वाला पहला देश बन गया। हालांकि सेलफोन प्रोटोटाइप 1973 में बनाया गया था, मोटोरोला ने 1983 में जनता के लिए पहला व्यावसायिक रुप से उपलब्ध सेलफोन पेश किया – डायनाटैक।

मोटोरोला डायना टीएसी का उपनाम 'द ब्रिक' रखा गया था। द ब्रिक ने 30 मिनट का टॉक टाइम प्रदान किया और चार्ज होने में लगभग 10 घंटे लगे। हालांकि उस समय एक क्रांतिकारी तकनीक होने के कारण, 1जी को आज के मानकों से बड़ी कमियां झेलनी पड़ीं। कम ध्वनि गुणवत्ता के कारण 1जी नेटवर्क पर किसी को सुनना कठिन था। बड़ी मात्रा में स्थैतिक शोर और पृष्ठभूमि की कर्कशता के साथ कवरेज भी घटिया था। कोई रोमिंग समर्थन भी प्रदान नहीं किया गया था। 1जी चैनल पर सुरक्षा मौजूद नहीं थी क्योंकि कोई एन्क्रिप्शन नहीं था, जिसका अर्थ है कि रेडियो स्कैनर वाला कोई भी व्यक्ति कॉल पर आ सकता है। 1जी पर डाउनलोड गति केवल 2.4 के बी.पी.एस. के आसपास ही पहुँची।

2जी :

1जी की सफलता के बाद, 2जी को 1991 में फिनलैंड में ग्लोबल सिस्टम फॉर मोबाइल कम्युनिकेशंस (GSM) पर लॉन्च किया गया। 2जी ने महत्वपूर्ण मोबाइल टॉक उन्नति प्रदान की, एन्क्रिप्टेड कॉल की शुरुआत की। 2जी ने ध्वनि की गुणवत्ता में भी सुधार किया, जब आप बात कर रहे थे तो स्थिर और कर्कश शोर को कम किया। 2जी की डाउनलोड गति भी 1जी की तुलना में काफी तेज थी, लगभग 0.2 एम.बी.पी.एस. की औसत।

संचार के नए रुपों के रुप में पाठ संदेश (एसएमएस) और मल्टीमीडिया संदेश (एमएमएस) को शुरु करके 2जी के डेटा स्थानांतरण ने पूरी तरह से बदल दिया कि हम कैसे संवाद करते हैं। 'कैंडी बार फोन' भी

2जी युग के दौरान लोकप्रिय हो गए, नोकिया द्वारा बनाए गए सबसे सम्मोहक सेलफोनों में से एक माने जाने वाले 3210 मॉडल के 160 मिलियन से अधिक सेट बिके।

3जी :

2001 में एनटीटी डोकोमो द्वारा जापान में विक्रेताओं के नेटवर्क प्रोटोकॉल को मानकीकृत करने पर ध्यान केंद्रित किया। बदलें में, उपयोगकर्ता कहीं से भी डेटा एक्सेस कर सकते थे, जिसने अन्तर्राष्ट्रीय रोमिंग सेवाओं को शुरु करने की अनुमति दी। भारत में 2008 के अंत से शुरु हुए इस इंटरनेट सिस्टम की स्पीड करीब 5 गुना बढ़ गयी। 2जी की तुलना में, 3जी में डेटा ट्रांसफर करने की क्षमता चार गुना थी, जो औसतन 2 एमबीपीएस तक पहुंचती थी। इस वृद्धि के कारण, वीडियो स्ट्रीमिंग, वीडियो कॉन्फ्रेंस और लाइव वीडियो चैट (स्काइप) वास्तविक हो गए। ईमेल भी मोबाइल उपकरणों पर संचार का एक अन्य मानक रुप बन गया। हालांकि कैंडी-बार और फ्लिप फोन 3जी युग के दौरान लोकप्रिय विकल्प थे, स्मार्टफोन नए थे। इस नई तकनीक ने उपयोगकर्ताओं की अनुमति दी। उस समय स्मार्टफोन के दो प्रमुख प्रतियोगी थे - ब्लैकबेरी और एप्पल। ब्लैकबेरी ने 2002 में अपना पहला मोबाइल डिवाइस-ब्लैकबेरी 5810 लॉन्च किया।

स्मार्टफोन ने एक कैलेंडर, संगीत, पूर्ण कीबोर्ड, उन्न्त सुरक्षा और इंटरनेट एक्सेस की पेशकश की। यह 2007 तक नहीं था कि मूल आईफोन बाहर आया, जल्द ही कुछ ही वर्षों में स्मार्टफोन और सेलफोन बाजार पर हावी हो गया। 2017 तक, ब्लैकबेरी की बाजार हिस्सेदारी न के बराबर हो गई। 2008 में जारी, आईफोन 3जी या आईफोन 2 ने आज स्मार्टफोन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। एप्पल के सेलफोन की मांग इतनी अधिक थी कि शुरुआती सप्ताहांत में 1मिलियन आईफोन 3जी की बिक्री हुई। जैसे-जैसे स्मार्टफोन लोकप्रिय होते गए, तेज डेटा और बढ़ी हुई नेटवर्क क्षमताओं की मांग कुछ ही साल दूर रह गई।

4जी :

2009 के अंत में नोर्वे में व्यावसायिक उपयोग के लिए पेश किया गया। 4जी ने आज की मानक सेवाओं की पेशकश की। न्यूनतम 12.5 एमबीपीएस से शुरु होकर, 4जी उच्च गुणवत्ता वाली वीडियो स्ट्रीमिंग/चैट, तेज मोबाइल वेब एक्सेस, एचडी वीडियो और ऑनलाइन गेमिंग प्रदान करता है। 2जी से 3जी में एक साधारण सिम कार्ड स्विच की तुलना में, मोबाइल उपकरणों को विशेष रुप से 4जी का समर्थन करने के लिए डिजाइन करने की आवश्यकता होती है। भारत में 2012 से 4जी नेटवर्क की शुरुआत हुई। 4जी के शासनकाल के दौरान, दुनिया भर में सबसे ज्यादा बिकने वाले सेलफोन में आईफोन 6 की 22.4 मिलियन यूनिट और सैमसंग गैलेक्सी एस 4 की 80 मिलियन यूनिट शामिल थी।

आईफोन 6 एप्पल का अब तक का सबसे ज्यादा बिकने वाला स्मार्टफोन था, लेकिन सैमसंग गैलेक्सी S4 भी एक ट्रेंडी स्मार्टफोन था और अब तक का सबसे ज्यादा बिकने वाला एन्ड्रॉइड मोबाइल फोन था। 2009 में अपनाए जाने के बाद से, 4जी डेटा ट्रांसफर गति के मामले में लगभग अपनी क्षमता तक पहुंच गया है। नई तकनीकों को तीव्र गति से पेश किए जाने के साथ, दुनिया को एक तेज नेटवर्क की आवश्यकता है। 5जी बस यही प्रदान करता है।

5जी :

दक्षिण कोरिया मार्च 2019 में 5जी की पेशकश करने वाला पहला देश था। कुछ विशेषज्ञ अब दावा करते हैं कि 5जी, 4जी से 20 गुना तेज होगा। 1 अक्टूबर 2022 को 5जी इंटरनेट सेवा भारत में शुरु हो गई। यह सेवा वर्तमान में महाराष्ट्र में मुंबई, पुणे, अहमदाबाद, जामनगर, गांधीनगर, गुरुग्राम, चंडीगढ़, नई दिल्ली,

लखनऊ, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई और बैंगलोर को कवर करती है। यह पहले से ही 4जी से 205% तेज है। 4जी और 5जी के बीच एक और बड़ा अंतर इसकी लेटेंसी और बैंडविड्थ आकार है ।

5जी में एक बड़ी फ्रीक्वेंसी रेंज (30 GHz और 300 GHz के बीच) है, जो अधिक तकनीकों और उपकरणों का समर्थन करती है। हालांकि 5जी अभी तक विश्व स्तर पर लॉन्च नहीं हुआ है, लेकिन इसकी नई नेटवर्क क्षमताएँ अगली डिजिटल क्रांति को बढ़ावा देगी। 5जी इतना तेज है, केवल मोबाइल के उपयोग के बारें में सोचना ही काफी सीमित है। कोरोना के बाद जिस तरह से इंटरनेट पर लोगों की निर्भरता बढ़ी है, उसे देखते हुए 5जी सभी के जीवन को बेहतर और आसान बनाने में मदद करेगा।

5जी की विशेषताएं :

- 5जी सेवा शुरु होने के बाद देश में डिजिटल क्रांति आएगी। रोबोटिक्स तकनीक विकसित होगी। देश की अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी। साथ ही ई–गवर्नेंस का विस्तार होगा।
- अकेले स्वास्थ्य उद्योग में, 5जी चिकित्सा पेशेवरों और रोगियों के एक साथ काम करने के तरीके में क्रांति लाएगा।
- जल्द ही रोबोट किसान के खेतों में घूमते, फसल की स्थिति की निगरानी करते और अनाज की कटाई करते नजर आएंगे।
- 5जी प्रौद्योगिकियाँ कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्वास्थ्य सेवा, आभासी वास्तविकता, एआई, आईओटी और क्लाउड कंप्यूटिंग, क्लाउड गेमिंग के लिए नए रास्ते खोलेगी।
- 5जी नेटवर्क पर 10 से 20 सैकण्ड में 2 जीबी की मूवी डाउनलोड हो जाएगी। वर्चुअल रियलिटी और रोबोट्स को फैक्ट्रियों में इस्तेमाल करना आसान होगा।
- 5जी हमारे जीवन को पूरी तरह से बदल देगा, लेकिन हम अभी तक इसकी संभावनाओं के बारे में नहीं जानते हैं – ठीक उसी तरह जैसे 42 साल पहले 1जी ने हमारे जीवन को बदल दिया था।

संदर्भ :– https://www.rfpage.com/evolution-of-wireless-technologies-1g-to-5g-in-mobile-communication/
https://marathi-abplive-com.translate.goog/news/technology/internet-service-in-india-know-histo
https://www.cengn.ca/information-centre/innovation/timeline-from-1g-to-5g-a-brief-history-on-cell-phones/
https://mse238blog.stanford.edu/2017/07/ssound/1g-2g-5g-the-evolution-of-the-gs/

भीखाभाई परमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

शांति

शांति से लड़ो जीवन की लड़ाई
लाओ पहले सोच में गहराई
अशांत मन हमें भरमाता है,
अंततः इंसान सुलह पर आता है ।
शांति का प्रभाव है स्थायी,
अशांति की कभी ना हो भरपायी ।
शांत मन से जीतो जग को,
लाओ जीवन में उमंग को ।

दीन दयाल शर्मा
कार्यालय अधीक्षक

मेरी ताकत

जापान के एक छोटे से कस्बे में रहने वाले दस वर्षीय ओकायो को जूडो सीखने का बहुत शौक था पर बचपन में हुई दुर्घटना में बायाँ हाथ कट जाने के कारण उसके माता-पिता उसे जूडो सीखने की आज्ञा नहीं देते थे। पर अब वो बड़ा हो रहा था और उसकी जिद भी बढ़ती जा रही थी। अंततः माता-पिता को झुकना ही पड़ा और वे ओकायो को नजदीकी शहर के एक मशहूर मार्शल आर्ट्स गुरु के यहाँ दाखिला दिलाने ले गए।

गुरु ने जब ओकायो को देखा तो उन्हें अचरज हुआ कि बिना बाएँ हाथ का यह लड़का भला जूडो क्यों सीखना चाहता है ? उन्होंने पूछा तुम्हारा तो बायाँ हाथ ही नहीं है तो भला तुम और लड़कों का मुकाबला कैसे करोगे।

''ये बताना तो आपका काम है।'', ओकायो ने कहा मैं तो बस इतना जानता हूँ कि मुझे सभी को हराना है और एक दिन खुद 'सेंसेई' (मास्टर) बनना है। गुरु उसकी सीखने की दृढ़ इच्छाशक्ति से काफी प्रभावित हुए और बोले, ठीक है मैं तुम्हें सीखाऊंगा लेकिन एक शर्त है, तुम मेरे हर एक निर्देश का पालन करोगे और उसमें दृढ़ विश्वास रखोगे। ओकायो ने सहमति में गुरु के समक्ष अपना सर झुका दिया।

गुरु ने एक साथ लगभग पचास छात्रों को जूडो सीखाना शुरु किया। ओकायो भी अन्य लड़कों की तरह सीख रहा था। पर कुछ दिनों बाद उसने ध्यान दिया कि गुरुजी अन्य लड़कों को अलग-अलग दांव-पेंच सीखा रहे हैं लेकिन वह अभी भी उसी एक किक का अभ्यास कर रहा है जो उसने शुरु में सीखी थी। उससे रहा नहीं गया और उसने गुरु से पूछा, गुरु जी आप अन्य लड़कों को नयी-नयी चीजें सीखा रहे हैं, पर मैं अभी भी बस वही एक किक मारने का अभ्यास कर रहा हूँ। क्या मुझे और चीजें नहीं सीखनी चाहियें ? गुरु जी बोले, तुम्हे बस इसी एक किक पर महारथ हासिल करने की आवश्यकता है और वो आगे बढ गए। ओकायो को विस्मय हुआ पर उसे अपने गुरु में पूर्ण विश्वास था और वह फिर अभ्यास में जुट गया।

समय बीतता गया और देखते-देखते दो साल गुजर गए, पर ओकायो उसी एक किक का अभ्यास कर रहा था। एक बार फिर ओकायो को चिंता होने लगी और उसने गुरु से कहा, ''क्या अभी भी मैं बस यही करता रहूँगा और बाकी सभी नयी-नयी तकनीकों में पारंगत होते रहेंगे।'' गुरुजी बोले, तुम्हें मुझमें यकीन है तो अभ्यास जारी रखो। ओकायो ने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए बिना कोई प्रश्न पूछे अगले 6 साल तक उसी एक किक का अभ्यास जारी रखा।

सभी को जूडो सीखते आठ साल हो चुके थे कि तभी एक दिन गुरुजी ने सभी शिष्यों को बुलाया और बोले, मुझे आपको जो ज्ञान देना था वो मैं दे चुका हूँ और अब गुरुकुल की परंपरा के अनुसार सबसे

अच्छे शिष्य का चुनाव एक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से किया जायेगा और इसमें विजयी होने वाले शिष्य को 'सेंसेई' की उपाधि से सम्मानित किया जाएगा।

प्रतिस्पर्धा आरम्भ हुई। गुरुजी ने ओकायो को उसके पहले मैच में हिस्सा लेने के लिए आवाज दी। ओकायो ने लड़ना शुरु किया और खुद को आश्चर्यचकित करते हुए उसने अपने पहले दो मैच बड़ी आसानी से जीत लिए। तीसरा मैच थोड़ा कठिन था, लेकिन कुछ संघर्ष के बाद विरोधी ने कुछ क्षणों के लिए अपना ध्यान उस पर से हटा दिया, ओकायो को तो मानो इसी मौके का इंतजार था, उसने अपनी अचूक किक विरोधी के ऊपर जमा दी और मैच अपने नाम कर लिया। अभी भी अपनी सफलता से आश्चर्य में पड़े ओकायो ने फाइनल में अपनी जगह बना ली।

इस बार विरोधी कहीं अधिक ताकतवर, अनुभवी और विशाल था, जिसे देखकर ऐसा लगता था कि ओकायो उसके सामने एक मिनट भी टिक नहीं पायेगा। मैच शुरु हुआ। विरोधी ओकायो पर भारी पड़ रहा था, रेफरी ने मैच रोक कर विरोधी को विजेता घोषित करने का प्रस्ताव रखा लेकिन तभी गुरु जी ने उसे रोकते हुए कहा, ''नहीं, मैच पूरा चलेगा। '' मैच फिर से शुरु हुआ। विरोधी अति आत्मविश्वास से भरा हुआ था और अब ओकायो को कम आंक रहा था और इसी दंभ में उसने एक भारी गलती कर दी, उसने अपना गार्ड छोड़ दिया। ओकायो ने इसका फायदा उठाते हुए आठ साल तक जिस किक का अभ्यास किया था उसे पूरी ताकत और सटीकता के साथ विरोधी के ऊपर जड़ दी और उसे जमीन पर धराशायी कर दिया। उस किक में इतनी शक्ति थी कि विरोधी वहीं मूर्छित हो गया और ओकायो को विजेता घोषित कर दिया गया।

मैच जीतने के बाद ओकायो ने गुरु से पूछा, ''सेंसई, भला मैंने यह प्रतियोगिता सिर्फ एक किक सीख कर कैसे जीत ली ?''

'' तुम दो वजहों से जीते'' गुरु जी ने उत्तर दिया '' पहला, तुमने जूडो की एक सबसे कठिन किक पर अपनी इतनी मास्टरी कर ली कि शायद ही इस दुनिया में कोई और यह किक इतनी दक्षता से मार पाए और दूसरा कि इस किक से बचने का एक ही उपाय है और वह है विरोधी के बाएँ हाथ को पकड़कर उसे जमीन पर गिराना। ओकायो समझ चुका था कि आज उसकी सबसे बड़ी कमजोरी ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बन चुकी थी।

दोस्तों हर इंसान में अवगुण होता है, कोई सर्वगुण संपन्न नही होता। खामियाँ अपने आप में बुरी नहीं होती, बुरा होता है हमारा उसके प्रति रवैया। अगर ओकायो चाहता तो अपने बाएँ हाथ के ना होने का रोना रोकर एक अपाहिज की तरह जीवन बिता सकता था, लेकिन उसने इस वजह से कभी खुद को हीन नहीं महसूस होने दिया। उसमें अपने सपनों को साकार करने की दृढ़ इच्छा थी और यकीन जानिये जिसके अन्दर यह इच्छा होती है, भगवान उसकी मदद के लिए कोई ना कोई गुरु भेज देता है, ऐसा गुरु जो उसकी सबसे बड़ी कमजोरी को ही उसकी सबसे बड़ी ताकत बना उसके सपने साकार कर सकता है।

रणविजय कुमार
सहायक

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।
– कमलापति त्रिपाठी

उड़ान (आई.ए.एस. – श्रीमती सी.वनमती)

भारत में छोटे-छोटे गाँव की लड़कियों को पढ़ाई करने के लिए आज भी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। इस बात से हम बिल्कुल भी अनभिज्ञ नहीं हैं कि कुछ लड़कियां तो सामाजिक समस्याओं से हार कर पढ़ाई बंद भी कर देती है। कई बार परिस्थितियां इतनी विपरीत होती हैं कि वे उम्मीद ही छोड़ देती हैं और ये सोच कर खुद को तसल्ली देती हैं कि ये सपने उनके लिए बने ही नहीं हैं। लेकिन कुछ लड़कियां अपने हौसलों को बुलंद रखते हुए जीवन में कुछ कर गुजरती हैं। मध्य भारत की ही बात लें तो कई गाँवो में लड़की होना आज भी अभिशाप माना जाता हैं। छोरी हुई है, कलंक है। लेकिन वे ये नहीं जानते कि आज की लड़की हर क्षेत्र में पुरुषों से कम नहीं है।

केरल के इरोड जिले का एक छोटा सा गाँव जहां सी.वनमती का जन्म हुआ। वहाँ शिक्षा के संसाधनों का अभाव था। शिक्षा को ज्यादा महत्व नहीं दिया जाता था। शिक्षा के संसाधनों की कमी थी। लड़कियों के लिए तो वहाँ शिक्षा का मतलब घर के काम-काज से ही होता था तथा शिक्षा प्राप्त करने के लिये दूसरे गाँव जाना पड़ता था। ये सभी के लिए संभव भी नही था परंतु जब कुछ कर गुजरने की तमन्ना हो तो कठिनाइयों से क्या डरना। कुछ इस तरह के विचारों से भरी हुई थी – सी.वनमती। इसकी झलक उसने 10 साल की उम्र में पेश कर दी थी जब उसने दसवीं में 99 प्रतिशत लाकर सभी को चौंका दिया था। सी.वनमती का परिवार लोगों के पशुओं को चराने का काम करता था एवं शिखा के पिता राजेंद्र एक ड्राइवर थे। सी.वनमती बचपन से ही पढ़ाई में होशियार, अडिग, फुर्तीली और बोलने में तेज-तर्रार थी, साथ ही अपनी पढ़ाई के साथ ही परिवार वालों की मदद भी किया करती थी, जहां वह खुद भैंसों को चराने ले जाती। सभी पशुओं की देखभाल करती। इसी तरह से उनका बचपन बीता। गरीब परिवार में पली-बढ़ी हुई वनमती के पिता खेती कर परिवार का पेट पालते थे। उनकी खेती भी बहुत कम थी जिससे घर खर्च नहीं चल पाता था। ऐसे में उनके पिता टैक्सी चलाने शहर चले गए थे। घर के छोटे जरुरी खर्चो को पूरा करने के लिए उन्होंने कुछ जानवर पाल लिए थे। इन पशुओं को चराने की जिम्मेदारी वनमती की ही होती थी। जैसा हम सब जानते हैं कि पशुपालन का काम बहुत मुश्किल होता है। इसमें भी मेहनत लगती है। उन्हें सुबह और शाम चराने के लिए ले जाना पड़ता है। उनकी साफ सफाई करनी पड़ती है। ये सभी काम वनमती के जिम्मे था।

सी.वनमती का पूरा बचपन इन गाय भैंसो को चराने में ही गुजर गया। बच्चों का जीवन खेलने-कूदने में गुजरता है, लेकिन उसके के साथ ऐसा नहीं हुआ। वह जब भी स्कूल से लौटती थी तो जानवरों को चराने का काम करती थी। जब थोड़ा बहुत समय बचता था तो पढ़ाई भी करती थी। सी.वनमती ये सभी

काम अपनी मां का हाथ बटाने के लिए करती थी, जिसे उसने लंबे समय तक किया जब तक वह बड़ी नहीं हुई। सी. वनमती ने इरोड के 'सत्यमंगलम कॉलेज' से अपनी 12वीं कक्षा पूर्ण की तो समाज और गांव की परम्परा के अनुसार सभी रिश्तेदारों ने शिखा के माता-पिता से उसकी शादी कर ससुराल भेजने का दबाव डाला किन्तु वह आगे पढ़ना चाहती थी। साथ ही शिक्षा के दम पर परिवार के आर्थिक हालातों को सुधारना चाहती थी। सी. वनमती सुबह स्कूल जाती और स्कूल से आने के बाद मवेशियों को चराने जाती थी। वनमती के माता-पिता ने हमेशा उसका सपोर्ट किया और रिश्तेदारों की बातों को दरकिनार करते हुए सी. वनमती को पढ़ने और आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इन बातों से हौसला पाकर वनमती ने स्नातक एवं उसके बाद कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातकोत्तर कर परिवार को आर्थिक सहायता देने के लिए प्राइवेट बैंक में नौकरी करनी शुरु कर दी। इससे उनका घर-खर्च आसानी से चलने लगा।

सी.वनमती को आईएएस अधिकारी बनने की प्रेरणा एक टीवी धारावाहिक से प्राप्त हुई। 'गंगा यमुना सरस्वती' नामक इस धारावाहिक की आईएएस नायिका के किरदार से प्रभावित होकर उन्होंने अपने मन में आईएएस ऑफिसर बनने की ठान ली। इस कठिन लक्ष्य को उन्होंने अपने दूसरे प्रयास में प्राप्त किया। अपने सपनों को अपने अंदर जिंदा रखा, उसको टूटने नहीं दिया। अस्पताल में पिता के देखभाल की पूरी जिम्मेदारी वनमती के ऊपर होने के कारण उन्होंने अपने पिता की देखभाल करते हुए आईएएस का इंटरव्यू दिया और सफलता की मंजिल हासिल कर एक मिसाल बनी। वर्ष 2015 की संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा में देश में 152वां स्थान हासिल किया था। इनकी यह कहानी आधी आबादी के लिए प्रेरणा का स्रोत है, जहां महिला स्वयं के साथ-साथ समाज के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकती है। किसी कवि की कुछ पंक्तियाँ याद आती हैं -

"तुम अपने गम भुलाकर तो देखो,
बिना बात मुस्कुराकर तो देखो,
राहें खुद-ब-खुद आसान हो जायेंगी,
तुम उम्मीदों के दिये जलाकर तो देखो।"

ओमप्रकाश प्रजापत
प्रवर श्रेणी लिपिक

मातृभाषा का अनादर भी मां के अनादर के बराबर है।
जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह स्वदेश-भक्त कहलाने लायक नहीं है।
- महात्मा गाँधी

हिन्दी वह भाषा है, जो विभिन्न मातृ-भाषाओं रुपी फूलों को पिरोकर
भारत माता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।
- डॉ. जाकिर हुसैन

सहेली

निशि बेटा जरा देखो तो मैं कैसी लग रही हूँ। निशि अपने मोबाइल को रखकर पीछे मुड़ती है और अपनी माँ को देखते ही बहुत खुश हो कर गले लगा लेती है। वाउ माँ आप बहुत अच्छी लग रही हैं, मैं तो कब से कहती थी थोडा लुक चेंज करके देखो, कभी वेस्टर्न भी ट्राय करो। आज-कल तो सभी पहनते हैं और देखो आप जीन्स-कुर्ती में बिलकुल परफेक्ट लग रही हैं। निशि की बातें सुनकर मानसी हँसती हुई फिर से आईने के सामने आकर खड़ी हो गई और खुद को देखने लगी। वाकई में वो अलग लग रही थी, आखिर शादी के बाद उसने कभी वेस्टर्न नहीं पहना था। पति सुरेश ने भी कभी ऐसी कोई इच्छा नहीं जताई, अपनी पत्नी को वेस्टर्न लुक में देखने की। जताते भी कैसे वो समय ही कुछ और था। जॉइंट फॅमिली में सास-ससुर, देवर-देवरानी और ननद सभी साथ ही तो थे। घर की बड़ी बहू होने के नाते जिम्मेदारियाँ बड़ी थीं और फिर जैसा ससुराल का चलन, वहाँ के तौर-तरीके उसके हिसाब से रहना होता था उस जमाने में, औरतों को।

अपने अतीत में खोई मानसी को वो दिन याद आने लगे, जब वह शादी के बाद अपने ससुराल आई थी। लाल साड़ी के दुल्हन के जोड़े में और उसमें एक हाथ लंबा घूँघट, धीरे-धीरे चल कर वो अपने ससुराल में प्रवेश कर रही थी। धीरे-धीरे चलना इसलिए नहीं था क्योंकि वो नई दुल्हन थी बल्कि इसलिए था क्योंकि उसका घूँघट इतना लंबा था कि उसे ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। इसलिए संभल कर चलना पड़ रहा था। उस समय उसके मन में यही सवाल आ रहे थे आखिर शादी के बाद ये घूँघट का रिवाज क्यों है। लेकिन हो ही क्या सकता था, आखिर बरसों से चली आ रही परंपरा का क्या किया जा सकता है। उस समय शायद कुछ ऐसी स्थिति रही होगी, जिससे यह परंपरा बनाई गई। ससुराल में अन्जान लोगों के बीच, अपने नये गृहस्थ जीवन की शुरुआत करनी थी। अपनी माँ के द्वारा दी गई सलाहों और नसीहतों को ध्यान में रखकर मानसी अपने गृहस्थ जीवन को संभाल रही थी। सास-ससुर की सेवा और देवर-ननद को प्यार देना, सबका ख्याल उसे अच्छा लगने लगा था। सुरेश के साथ और प्यार ने भी उसकी हिम्मत बढ़ाई थी। सुबह-सुबह सबकी चाय से लेकर रात के सबके खाने तक का और सबकी पसंद-नापसंद का ख्याल उसे रखना था। पहले मुश्किलें आईं फिर धीरे-धीरे सब सीख गई थी मानसी, या यों कहें सारी औरतें सीख ही जाती हैं, शादी के बाद। मानसी को सासू माँ की सख्त हिदायत थी कि नयी बहू ज्यादा घर से बाहर न निकले। आस-पड़ोस में बातें न करते फिरे। मानसी भी अपनी सासू माँ के निर्देश अनुसार ही काम करती थी। घूमने जाते भी थे तो मानसी को जाना मना था क्योंकि अभी वो नयी दुल्हन थी। हाँ, लेकिन मानसी के लिए कुछ न कुछ बाहर से ले आते थे। चाहे वो चटपटी स्वाद की चीजें हों या उसके इस्तेमाल करने की चीज। कभी-कभी मानसी का मन थोड़ा उदास हो जाता था तो सासू माँ के कहने पर सुरेश उसे बाहर ले जाते थे या टेलीफोन बूथ ले जाकर उसके मायके में बात करवा देते थे। उस समय सभी के पास मोबाइल तो होता नहीं था, इसलिए टेलीफोन बूथ जाकर बात करनी होती थी। मानसी की दिनचर्या भी बस इसी तरह कभी खुशी कभी गम की तरह चलने लगी थी।

घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी निभाते-निभाते वो दिन भी आ गया जब मानसी अपने जिंदगी के नए पड़ाव में कदम रखने लगी थी। शादी के डेढ़ साल बाद उसे मातृत्व सुख का वरदान मिल रहा था। अकेले बैठे हुए वो सोचती थी अभी तो उसकी जिम्मेदारियाँ बढ़ने वाली हैं, वो उसे अच्छे से निभा तो सकेगी ? आखिर क्या बदल जाता होगा माँ बनने के बाद। शादी से पहले जब उसकी सहेलियाँ अपने-अपने घर की कहानी बताती थी कि कैसे माँ बनने के बाद खुशी तो होती है लेकिन जिम्मेदारियाँ भी इतनी बढ़ जाती हैं कि चिड़चिड़ापन भी बढ़ जाता है। फिर बच्चे

संभालने के साथ-साथ सबकी बातें भी सुनों और उनकी भी फरमाइशें पूरी करो। यह सब सोचकर मानसी थोड़ी चिंतित हो जाती कि पता नहीं उसके जीवन में आगे क्या होने वाला है। ऐसी स्थिति में उसे अपनी सहेलियाँ और उनके साथ बिताए हुए पल हमेशा याद आते। कैसे वे सब स्कूल आते-जाते और फिर कॉलेज में दोस्तों के साथ कितनी मस्तियाँ किया करती थीं। न कोई घर संभालने की जिम्मेदारी होती थी और न ही कहीं आने-जाने पर इतनी पाबंदी। बस घर में माँ के काम में हाथ बंटा दो, अपनी पढ़ाई करो फिर दोस्तों के साथ भी वक्त बिताने को मिल जाता था। शादी के बाद तो सब अलग-अलग दूसरे शहरों में रहने लगे और अब घर-गृहस्थी से किसी को फुर्सत ही नहीं होती कि किसी से मिलने भी जाएँ। फोन पर बात हो जाए वो ही बहुत है, फिर धीरे-धीरे वो भी कम होने लगता है क्योंकि समय के साथ जिम्मेदारियाँ भी तो बढ़ने लगती हैं।

वो दिन भी आ गया जब मानसी ने एक सुंदर से बेटे को जन्म दिया, लेकिन उस दौरान वो काफी कमजोर हो गई थी। कम उम्र में शादी और घर-गृहस्थी की जिम्मेदारी ने उसे थोड़ा कमजोर बना दिया था। इसी कारण उसे कुछ महीने अपने मायके में रहने का मौका भी मिल गया। नहीं तो अपना घर छोड़ कर कोई औरत अपने मायके में कैसे बैठी रहे, आफत ही आ जाती है सबपर। सारा काम तितर-बितर हो जाता है और घर का नक्शा ही बदल जाता है। खैर अपने मायके में बिता रहे दिनों को मानसी एंजॉय कर रही थी और अपने नन्हे गोपाल के साथ वक्त बिता रही थी। उसकी प्यारी मुस्कान, छोटे-छोटे हाथ, उसका पैर चला कर खेलना और अपनी माँ को देखकर खुश हो जाना सब बहुत प्यारा लगता था। इस दौरान उसकी कुछ सहेलियाँ भी आईं उससे मिलने, सभी अपने पुराने दिनों को और अपनी शैतानियों को याद करके खूब खुश हो रहीं थी। अपने-अपने गृहस्थ जीवन की चर्चा खूब चली। खैर तीन महीने बाद मानसी के पति सुरेश उसे मायके से ससुराल ले आये। यहाँ दादा-दादी, चाचा और बुआ के तो मजे ही हो गए छोटू के साथ खेलने में। सभी अपने पसंदीदा नामों से उसे पुकारते थे। जब उसका औपचारिक नामकरण का दिन आया तो सबने अपने पसंद के नाम सुझाए, लेकिन मानसी अपनी पसंद का नाम अपने नन्हे गोपाल को देना चाहती थी। मन में ये बात भी आती थी कि सभी को अच्छा लगेगा या नहीं। अंत में कुंडली में पंडित जी द्वारा बताए गए अक्षर से उसका नाम रखा गया और वो भी उसकी दादी और पापा के पसंद का। मानसी के पसंद का नाम उस अक्षर से शुरु नहीं होता था, तो उसने कुछ नहीं कहा और नन्हे गोपाल का नाम देवांश रख दिया गया। देवांश की शरारतें दिन प्रतिदिन बढ़ रही थीं। उसे सारी चीजों को छूना जो होता था, कुछ भी उठा कर मुंह में लेना होता था। अब मानसी की परेशानी बढ़ रही थी। घर संभालने के साथ-साथ छोटे नवाब को भी संभालना था। हर पल उस पर नजर रखनी पड़ती थी। उसके दादा-दादी कुछ समय तो संभाल लेते थे फिर अपनी दिनचर्या में व्यस्त हो जाते थे। ननद रुपाली को पढ़ाई करनी होती थी और देवर नरेश वो भी काम पर जाने लगे थे। दिन भर की व्यस्तता के कारण अब मानसी को चिड़चिड़ापन भी होने लगा था। जिससे सभी उसे ही कुछ न कुछ सुना देते। एक पल के लिए तो उसे लगता माँ ने भी ऐसी परेशानियों को झेला होगा मुझे और भाई को बड़ा करते हुए। आज अपनी माँ की तकलीफ और खीजपन समझ आ रही थी। बड़े हो जाने के बाद भी तो दोनों भाई-बहन की शैतानियां कम नहीं हुई थी।

इसी दौरान कुछ समय बाद देवर नरेश की शादी की बात हुई तो मानसी को थोड़ी राहत महसूस हुई कि चलो कोई तो आए जो उसके साथ समय बिताएँ और जिम्मेदारियों को बांटे। देवांश के 5 साल पूरे हो चुके थे और उसका दाखिला भी स्कूल में करा दिया गया था। फिर देवर नरेश की शादी सम्पन्न हुई, उस समय तो मानसी की हालत और खराब हो गई थी। शादी की तैयारियाँ, मेहमानों की देखभाल का इंतजाम घर की जिम्मेदारियाँ सब संभालना था। अपने सास-ससुर के निर्देशन में और सुरेश की मदद से सारा काम संभल गया। सब बहुत खुश थे, शादी में आए मेहमान भी मानसी की बड़ी तारीफ कर रहे थे। सभी मेहमानों में बातें होती थीं कि बड़ी बहू ने तो अच्छे से घर संभाल लिया है, अब आने वाली बहू को देखते हैं वो कैसे संभालेगी अब। मानसी तो यही सोच कर

खुश हो रही थी कि उसे अब अपनी देवरानी के रुप में एक सहेली मिल जाएगी, जिसके साथ वो अपनी बातें शेयर करे, बाहर घूमने जाए, कुछ वक्त अपने लिए भी निकाले दोनों। नरेश की शादी के बाद नयी बहू का स्वागत खूब जोर-शोर से किया गया। सारी रस्में धूम-धाम से निभाई गईं। हँसी-खुशी दिन बीतने लगे, मानसी को अपनी देवरानी दिव्या के रुप में एक सहेली का साथ मिल गया था। दोनों घर का काम निपटा कर अपने लिए थोड़ा समय निकालती और अपने भविष्य के बारे में चर्चा करतीं। दिव्या को सिर्फ घर में नहीं रहना था, वो नौकरी करना चाहती थी। मानसी उसके आत्म विश्वास से काफी प्रभावित थी और उसे हमेशा प्रोत्साहित भी करती थी। दिव्या की लगन और मेहनत से उसने अपने सपने को पूरा किया और अपनी पसंद की नौकरी पा ली थी, लेकिन इसके लिए उसे अपने ससुराल से अलग दूसरे शहर जाना था। मानसी थोड़ी उदास तो हुई, लेकिन वो दिव्या के लिए खुश थी।

कुछ समय के बाद नरेश और दिव्या दूसरे शहर बैंगलोर चले गए। अब मानसी फिर से घर में थोड़ा अकेलापन महसूस करती। सभी अपने-अपने काम में व्यस्त रहते थे। देवांश भी अब स्कूल जाने लगा था। सुबह 11 बजे तक सारा घर खाली हो जाता था। सास-ससुर मंदिर में या किसी रिश्तेदार से मिलने चले जाते थे, सुरेश अपने काम पर, रुपाली कॉलेज और देवांश अपने स्कूल। मानसी को कभी-कभी लगता अगर वो भी कोई जॉब करती तो उसका मन भी लग जाता। खैर इसी तरह दिन बीतने लगे। रुपाली की पढ़ाई खत्म होने के बाद, उसकी भी शादी हो गई। रुपाली अपने ससुराल में खुश थी। सभी त्यौहारों पर घर में इकट्ठा होते तो शादी जैसा माहौल लगने लगता था। समय बीतने के साथ मानसी की जिम्मेदारियाँ अब कम हो रही थीं।

20 वर्ष बीत गए थे। सास-ससुर भी अब नहीं थे, उनका देहांत हो चुका था। देवांश अपनी कॉलेज की पढ़ाई के लिए दिल्ली चला गया था। अब बस मानसी और सुरेश, फिर से अपने पुराने दिनों को याद करते हुए जी रहे थे। सुरेश के ऑफिस चले जाने के बाद मानसी अकेली हो जाती थी। उसके पास ज्यादा काम भी नहीं था, जिससे वह व्यस्त रहे और आस-पड़ोस में जाने की उसकी आदत थी नहीं। बस ज्यादा अकेला महसूस करने पर वो बाहर पार्क में थोड़ी देर के लिए चली जाती थी और बच्चों को खेलते देखकर उसे देवांश की बचपन की बातें याद आती। जिंदगी में भी कितने मोड़ होते हैं, हम औरतें अपनी लाइफ में इतनी व्यस्त हो जाती हैं कि खुद के लिए कुछ करने का समय ही नहीं मिलता और जब समय मिलता है तो उस तरह से कुछ करने का ना जोश होता है और न ही इच्छा। अब वो वक्त आ गया था जब मानसी की जिंदगी में एक और नया मोड़ आने वाला था, निशि के रुप में। निशि और देवांश एक साथ कॉलेज में पढ़ते थे और दोनों की रुचि भी एक जैसी थी। उसी को अपना प्रोफेशन बनाते हुए दोनों ने कंपनी जॉइन की लेकिन अलग-अलग ताकि दोनों के बीच थोड़ा स्पेस बना रहे। रिश्तों में भी स्पेस होना कितना जरुरी होता है ना, वरना वही रिश्ते एक जंजीर की तरह लगने लगते हैं। दोनों के बीच बढ़ते प्यार ने उन दोनों को शादी के रिश्ते में बांध दिया था। दोनों बहुत खुश थे और मानसी उन दोनों से ज्यादा खुश थी क्योंकि अब वे सब साथ में रहने वाले थे।

निशि एक खुशमिजाज और आत्मविश्वास से भरी लड़की थी। उसके घर का माहौल भी हमेशा सकारात्मक ही रहता था और इसी माहौल में वो पली बढ़ी थी। उसके माता-पिता खुले विचार के थे और उन्होंने अपने बच्चों में कभी भेद-भाव नहीं किया था। लड़का-लड़की को समान अधिकार और कर्तव्य सीखाने की पूरी कोशिश की गई थी। निशि और देवांश के साथ रहने के बाद, मानसी की जिंदगी में व्यस्तता फिर से आ गई थी। लेकिन अब शरीर थोड़ा आराम का आदी हो चुका था तो थोड़ी परेशानी होती थी उसे। निशि भी कोशिश करती अपने ऑफिस और घर में जिम्मेदारियाँ निभाने की क्योंकि ऑफिस में काम करना उसकी अपनी चॉइस थी, इसके कारण घर की जिम्मेदारियाँ नहीं निभा सकती थी। निशि की खुशमिजाजी ने घर का माहौल भी खुशनुमा बना दिया था। रुपाली भी कभी-कभी अपने मायके आती तो वो लोग खूब मस्तियाँ किया करते और उनकी गर्ल्स आउटिंग भी हो जाती। धीरे धीरे मानसी और निशि के बीच नजदीकियाँ बढ़ने लगी थीं। इसका कारण सिर्फ निशि का स्वभाव ही

नहीं बल्कि मानसी की समझदारी भी थी। वो जानती थी कि नयी बहू को अपने ससुराल में एडजस्ट करने में परेशानी होती है। उसके साथ भी हुआ था इसलिए वो निशि के लिए सब थोड़ा आसान करने की कोशिश करती थी। निशि ने भी मानसी को सिर्फ सास के रुप में नहीं देखा था, उसे अपनी माँ की जगह रखती थी और हमेशा यही ख्याल रखती कि यदि मानसी की जगह उसकी अपनी माँ होती तो वो क्या करती। यही कारण था कि दोनों एक दूसरे को अच्छे से समझने लगी थी। निशि और मानसी अक्सर समय मिलते ही कहीं बाहर घूमने चली जाती थीं। चाहे निशि को अपने लिए ही शॉपिंग करनी हो या किसी कॉफी शॉप में जाना हो, वो अपने साथ मानसी को ले जाती और अगर मानसी मना करती तो उसका यही कहना था, इतने दिनों तक तो आप घर पर ही रहती थीं, समय नहीं मिल पाता था और अब जब समय मिल रहा है तो उसे यूज करिए माँ, क्या पता आगे कैसा वक्त रहे। निशि की बातें मानसी को हमेशा प्रभावित करती थीं।

मानसी ने तो निशि के साथ पुस्तकालय जाना शुरु कर दिया था। कभी-कभी अकेले भी चली जाती थी, वहाँ किताबों से भी दोस्ती जो हो गई थी उसकी। शादी के बाद जिन शौक को वो पूरा नहीं कर पाई थी वो निशि उसकी बहू या यूं कहे एक सहेली के आने के बाद उसने पूरे किए थे। हाँ सहेली ही तो बन गई थीं दोनों। सास-बहू के रिश्ते को न देखकर, अपने औरत होने के रिश्ते को समझा था दोनों नें। इसी वजह से आज वो दोनों उम्र में इतना फर्क होने के बावजूद अच्छी सहेलियाँ बन गई थी। कितना जरुरी होता है ना अपनी जिंदगी में एक अच्छे दोस्त का होना। जिसके साथ हम कुछ भी शेयर कर सकते हैं। उसके सामने हमे परफेक्ट होने का टेंशन नहीं होता। ये नहीं लगता कि हमारी बातों से उसके मन में हमारे प्रति क्या छवि बनेगी। वो जो भी हो सही या गलत हमें बता देते हैं। निशि के रुप में मानसी को भी अपनी वो दोस्त या सहेली मिल गयी थी, जिसके साथ वक्त बिताने या कुछ भी शेयर करने के लिए उसे सोचना नहीं पड़ता और आज उसी सहेली के कहने पर उसने इस नए परिधान कुर्ती और जीन्स को ट्राइ किया है। आखिर उसे भी तो निशि की सहेली के रुप में पर्फेक्ट लगना है। दोनों निकल गई है सैर पर फिर से और मानसी अपनी जिंदगी के इस नए मोड़ को खूब एंजॉय कर रही है।

नीलम कुमारी
सहायक

एक नन्ही सी परी

पलकों को बंद करके नन्ही परी सो जाती है,
जाने दूर सपनों में कहीं खो जाती है।

ठक-ठक भरती कदम हौले-हौले उठाती है,
अपने आप में खोई गुड़ियों से बतलाती है।

मुड़कर देखती है बड़ी मासूमियत से कभी,
छोटी सी तितली टूटे दांत दिखाती है।

बड़ी प्यारी हैं बातें उसकी तोतली जबान भाती है,
किसी वीणा सी बजती है जब वो खिलखिलाती है।

गुस्सा उसका तीखा है मिजाज थोड़ा फीका है,
ओढ़ती है माँ की चुनरी और माथे पर टीका है।

जिद उसकी हठीली है लड़की छैलछबीली है,
नाजुक सा पंख है वो गुड़ियाँ रंग-रंगीली है।

वो एक दीया-बाती है जिससे जिंदगी जगमगाती है,
मेरी रुह चैन पाती है जब बेटी गले लग जाती है।

रमेश कुमार
सहायक

मजदूर

"मेहनत उसकी लाठी है,
मजबूत उसकी काठी है,
हर बाधा वो कर देता है दूर
दुनिया उसे कहती है मजदूर ।"

किसी भी देश के विकास में मजदूर की अहम भूमिका होती है। इनके बिना किसी देश का विकास होना मुमकिन नहीं है। उद्योग, व्यापार, कृषि, भवन निर्माण, पुल एवं सड़कों का निर्माण आदि समस्त क्रियाकलापों में मजदूरों के श्रम का योगदान महत्वपूर्ण होता है। मजदूर हमारे समाज का वह तबका है जिस पर समस्त आर्थिक उन्नति टिकी होती है। वह मानवीय श्रम का सबसे आदर्श उदाहरण है। वह सभी प्रकार के क्रियाकलापों की धुरी है। आज के मशीनी युग में भी उसकी महत्ता कम नहीं हुई है।

मजदूर चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, आर्थिक क्रियाकलापों में उसकी अग्रणी भूमिका होती है। वह सड़कों एवं पुलों के निर्माण में सहयोग करता है। वह भवन निर्माण के क्षेत्र में भरपूर योगदान देता है। वह ईंट बनाता है, वह खेती में किसानों की मदद करता है। शहरों और गाँवों में उसे कई प्रकार के कार्य करने होते हैं। तालाबों, कुओं, नहरों और झीलों की खुदाई में उसके श्रम का बहुत इस्तेमाल होता है। सफाई-कर्मचारी, बढ़ई, लोहार, हस्तशिल्पी, दर्जी, पशुपालक आदि वास्तव में मजदूर ही होते हैं। सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, हथकरघा उद्योग, लोहा एवं इस्पात उद्योग, सीमेंट उद्योग आदि जितने भी प्रकार के उद्योग हैं उनमें मजदूरों की अहम भागीदारी होती है। आपको याद होगा कि जब हमारे देश में कोविड-19 महामारी का प्रकोप आया, तब सभी मजदूर अपने-अपने घर को वापस लौट गए थे। स्थिति यह हो गयी थी कि सभी उद्योग, व्यापार, कृषि, भवन निर्माण, पुल एवं सड़कों का निर्माण आदि समस्त क्रियाकलाप बंद हो गये थे। देश की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी थी। सरकार एवं कल-कारखानों के मालिकों को मजदूरों से अपील करनी पड़ी कि आप सभी काम पर वापस लौट आयें। आपको यात्रा-भत्ता के साथ-साथ खाने एवं रहने की सुविधा उपलब्ध करवायी जायेगी।

परंतु मजदूरों की वास्तविक स्थिति से सभी अवगत हैं। चाहे मूसलाधार बारिश हो या कड़कती धूप हो वे लगातार अपने श्रम में लगे रहते हैं। परन्तु उन्हें मिलता ही क्या है ? सुबह से शाम तक परिश्रम करने के बाद उनको उतनी ही मजदूरी मिलती है जिससे उनका दो वक्त का गुजारा हो सके। वे चाहकर भी अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, अच्छा खाना और उनका बेहतर भविष्य नहीं दे सकते हैं। कल जब उनके बच्चे बड़े होंगे तो शिक्षा के अभाव में संभवतः वे भी मजदूर ही बनेंगे। कहा जाता है कि लोगों को जब खाने को लाले पड़े हों तो लोग मजदूरी के अलावा क्या कर सकते हैं ? आप कभी बड़े-बड़े शहरों में मजदूरों की हालत देखो। दिनभर श्रम करने के बाद उनके पास रहने को घर नहीं होता है। वे पुल के नीचे या सड़क के किनारे मिलेंगे। उनका रहने का वही ठिकाना होता है। सभी मजदूरों को उतनी मजदूरी नहीं मिल पाती है कि वे किराये के घर में भी रह सकें। कभी-कभी वे सड़क हादसे का भी शिकार हो जाते हैं। जब मूसलाधार बारिश होती है तो उन्हें देखकर रुह कांप जाती है।

जब कभी भी कड़कती धूप या गर्म हवा/लू में मजदूरों को काम करते देखता हूँ तो सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी की कविता की पंक्तियाँ याद आ जाती हैं :-

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बंधा यौवन,
नत नयन, प्रिय-कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार,
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।
चढ़ रही थी धूप,
गर्मियों के दिन,
दिवा का तमतमाता रुप,
उठी झुलसाती हुई लू
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहर
वह तोड़ती पत्थर ।''

विश्व भर में अतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस '1 मई' को मनाया जाता है। भारत के अलावा कई देश हैं, जो इस दिन को श्रमिक दिवस के रुप में मनाते हैं। इसे मनाने का उद्देश्य श्रमिक वर्ग के प्रति अपना आभार व्यक्त करना है एवं उनके हितों को ध्यान में रखकर नई-नई योजनाएँ लाना है ताकि उनका भविष्य उज्जवल हो।

मैं बहुत भाग्यशाली हूँ कि कर्मचारी राज्य बीमा निगम में कार्यरत हूँ, जहाँ मजदूरों की सेवा करने का मौका मिला। यह मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा के रुप में चिकित्सा, बीमारी, मातृत्व, नि:शक्तता, आश्रितजन हितलाभ सहित अन्य नकद (अन्त्येष्टि व्यय, प्रसूति व्यय आदि) हितलाभ प्रदान करता है।

कोविड-19 महामारी में जब कल-कारखाने बंद हो गए थे और मजदूर बेरोजगार हो गए थे। बहुत सारे मजदूर कोरोना संक्रमित हो रहे थे और उनके पास इलाज के लिए पैसे नहीं थे। तब क.रा.बी.निगम कोविड-19 राहत योजना ने मजदूरों की मदद की। मजदूरों को बेरोजगारी भत्ता से लेकर उक्त सभी हितलाभ प्रदान किए। क.रा.बी.निगम अस्पतालों द्वारा कोविड-19 महामारी के समय में न केवल बीमित व्यक्तियों को बल्कि आम जनता को भी इलाज प्रदान किया।

राहुल कुमार
सहायक

हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगी।
- सी. राजगोपालाचारी

आपकी संस्कृति

(एक लड़की मंच पर अलग-अगल संस्कृति के परिधानों का मिश्रण पहनकर खड़ी है) (हँसते हुए) ''ऐसे क्या देख रहे हैं ? मेरा पहनावा, मेरा ये रुप... ??

आप में से कुछ सोचेंगे, आहा ! कितना अच्छा सम्मिश्रण है और कुछ सोचेंगे मैं कौन हूँ ?

कहाँ से हूँ ? समझ में ही नहीं आ रहा !

मैं बताती हूँ। मैं संस्कृति, आपकी धरोहर, क्या कहते हैं आप अंग्रेजी में ?

(थोड़ा सोचते हुए) - हेरिटेज।

मैं विभिन्न कलाओं से परिपूर्ण हूँ। मगर मैं उलझन में पड़ गई हूँ और इसे सुलझाने के लिए वह केवल बदलाव है या वास्तविकता या फिर और कुछ ?

नाट्य, नृत्य, संगीत, शिल्प जैसे अमूल्य खजाने का प्रतीक हूँ मैं।

(अभिमान महसूस करते हुए) मुझे बहुत ही गर्व महसूस होता है, जब कोई मेरी इन कलाओं और कलाकारों की प्रशंसा और सम्मान करते हैं, मेरे मूल स्वरुप को सजाने-सँवारने में सहयोग करते हैं। मुझे बहुत गौरव महसूस होता है जब भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति के लोग एक-दूसरे से कुछ सीखते हैं और कभी-कभी दोनों संस्कृतियों का मिलन तो देखने जैसा होता है।

आज की नयी पीढ़ी मुझे नये से सजा रही है (अचानक डरते हुए) मगर, मैं डर गई हूँ ! जब मेरे ही कुछ लोग मेरे स्वरुप को छिन्न-विछिन्न कर देते हैं, तब न तो मेरा मूल स्वरुप दिखता है और न ही सम्मिलन। (चेहरे पर शोक का भाव) दु:ख होता है मुझे, शर्म आती है, डर लगता है कि कहीं मैं इतिहास के पन्नों में लुप्त न हो जाऊं ! मैं लुप्त नहीं होना चाहती, मैं तो आपकी धरोहर हूँ न ? हम एक सिक्के के दो पहलू हैं।

मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ (घबराते हुए और हास्य के साथ) आपकी नयी सोच के अनुसार मुझे बदलना, मुझे और सुन्दर बनाना मगर मुझे लुप्त मत होने देना। मुझे बहुत ही प्यार से, सहेज कर रखना।

क्योंकि मैं आपकी अपनी हूँ न.....

आपकी संस्कृति !

प्रीती पिंपल खैरे

(धर्मपत्नी श्री अभय पिंपल खैरे, सहायक)

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है।
- महात्मा गांधी

उम्मीद

जान गये हम, कल क्या होना है,
वही होना है जो,
खुद की किस्मत व मेहनत से होना है ।

रोना किस बात का,
जिंदगी का दर्द खुद ही सहना है,
आज रात कल सुबह,
सूरज का ना होना और होना है ।

दूर है मंजिल तो क्या,
खुद को उसी मंजिल पर होना है,
उम्मीद किसी से करेंगे क्या,
खुद की उम्मीद पर खरे होना है ।

मेहनत ना कभी बेकार थी,
और ना होगी कभी,
पर डगर कठिन थी और कठिन ही होना है,
बिना रुके-बिना थके, चलते जाना है,
मेहनत व उम्मीद से,
जीवन को सफल बनाना है ।

रविश कुमार
अवर श्रेणी लिपिक

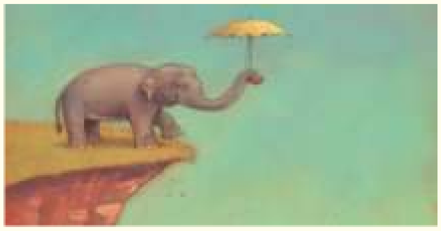

मन

न जाने क्यों ये मन,
न जाने क्यों ये मन,
बड़ा होने से घबराता है ।

पढ़ लिखकर बड़ा बनने आये थे,
पर ना जाने क्यों ये मन,
चाहता ही चंचलता है ।

घबराते थे जहां अकेले रहने से,
वहीं हमेशा रुकना
न जाने क्यों ये मन चाहता है ।
न जाने क्यों ये मन,
बड़ा होने से घबराता है ।

बचपन में जब पूछा करते थे,
बड़ा होकर क्या बनना चाहता है ?
उसी प्रश्न का उत्तर देने से आज,
न जाने क्यों ये मन घबराता है ।

खाली पड़े देख उस कमरे को,
पुनः यादों से भरना चाहता है ।
न जाने क्यों ये मन,
बड़ा होने से घबराता है ।

यश बैसोया
प्रवर श्रेणी लिपिक

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती ।

– सुभाषचंद्र बोस

बेटी है तो कल है

(एक गर्भवती स्त्री और उसके पति की वार्ता)

एक गर्भवती स्त्री ने अपने पति से कहा,

"आप क्या आशा करते हैं, लड़का होगा या लड़की ?"

पति - अगर हमारा लड़का होता है तो मैं उसे गणित पढ़ाऊंगा, हम खेलने जाएंगे और मैं उसे जिंदगी जीना सीखाऊंगा।

पत्नी - अगर लड़की हुई तो... ?

पति - अगर हमारी लड़की होगी तो मुझे अपना हीरो समझेगी, चाहे मैं उसके लिए कुछ खास करूँ या ना करूँ।

"जब भी मैं उसे किसी चीज के लिए मना करुंगा तो मुझे समझेगी । वो हमेशा अपने पति की मुझसे तुलना करेगी ।

"यह मायने नहीं रखता कि वह कितने भी साल की हो पर वो हमेशा चाहेगी कि मैं उसे अपनी बेबी डॉल की तरह प्यार करुं ।

"वो मेरे लिए संसार से लड़ेगी, जब कोई मुझे दुःख देगा वो कभी उसे माफ नहीं करेगी ।

पत्नी - कहने का मतलब है कि आपकी बेटी वो सब करेगी जो आपका बेटा नहीं कर पाएगा ।

पति - नहीं-नहीं, क्या पता मेरा बेटा भी ऐसा ही करेगा, पर वो सीखेगा ।

"परंतु बेटी, इन गुणों के साथ पैदा होगी। किसी बेटी का पिता होना हर व्यक्ति के लिए गर्व की बात है।

पत्नी - पर वो हमेशा हमारे साथ नहीं रहेगी....."

पति - हां, पर हम हमेशा उसके दिल में रहेंगे ।

"इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा चाहे वो कहीं भी जाए, बेटियाँ परी होती हैं । जो सदा बिना शर्त के प्यार और देखभाल के लिए जन्म लेती है ।"

"बेटियाँ सबके मुकद्दर में कहाँ होती हैं ? जो घर भगवान को हो पसंद वहां पैदा होती हैं बेटियाँ ।"

रमेश कुमार
सहायक

हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषाओं की अगली श्रेणी में सभासीन हो सकती है ।
- मैथिलीशरण गुप्त

सोनगढ़ किला

सोनगढ़ किला अपनी खूबसूरत वास्तुकला और प्राकृतिक परिदृश्य के कारण दक्षिण गुजरात के तापी जिले में एक प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। यह किला सोनगढ़ शहर के पास स्थित है और घने जंगल से घिरा हुआ है। यह किला कई दिलचस्प पर्यटक आकर्षणों का भी घर है, जिसमें मुगल शैली का किला और कई मराठा शैली की संरचनाएं शामिल हैं। सोनगढ़ किला दक्षिण गुजरात के सोनगढ़ टाउन में स्थित एक कम प्रसिद्ध किला है। यह 16 वीं शताब्दी का है और तापी नदी पर उकाई बांध के पास स्थित है । यह किला समुद्र-तल से 112 मीटर ऊपर है ।

सोनगढ़ किला 'पिलजी राव गायकवाड़' द्वारा बनाया गया था, जिन्होंने 1729 में गायकवाड़ राजवंश की स्थापना की थी। वर्ष 2007 में, दो नए जिले सूरत और तापी बनाए गए थे। तापी दक्षिणी गुजरात में स्थित है जो महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के साथ अपनी सीमाओं को साझा करता है। व्यारा, सोनगढ़, वालोड, उच्छल, निजदार, डोलवन, कुकरमुंडा को तापी के सात तालुकाओं के रुप में सूचीबद्ध किया गया है। बड़ौदा की रियासत को गायकवाड़ कहा जाता था। गायकवाड़ राजवंश ने व्यारा नगर (वर्तमान में तापी जिले का मुख्यालय) पर शासन किया। यहाँ चौधरी, पटेल, गामित, शाह, देसाई, पंचोली, पांचाल, राणा, ब्राह्मण प्रमुख रुप से बसे हुए हैं। गुजरात राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी (2004 में मृत्यु) का जन्म व्यारा में हुआ था। यहाँ बाँस के महत्वपूर्ण उत्पादन के साथ घने जंगल हैं।

सोनगढ़ किला, भारतीय वास्तुकला का एक अनुपम उदाहरण है, जिस पर मुगलों और मराठों दोनों का प्रभाव रहा है। किले के आसपास की 59.5 किमी. (37 मील) प्राचीर का निर्माण दिलावर खान घूरी द्वारा शुरु किया गया था और महमूद द्वारा पूरा किया गया था। मालवा सुल्तानों के खिलजी वंश के शासक शाह खिजली ने किले के निर्माण की देखरेख की। फिर 1531 में मालवा सल्तनत का पतन हो गया और यह प्रांत गुजरात सल्तनत के पास चला गया, फिर 1560 तक मुगलों और अंत में 1730 में मराठों के पास चला गया।

सोनगढ़ किले का दौरा करने का सबसे अच्छा समय मानसून के मौसम के बाद है। सूरत हवाई अड्डा और उकाई सोंगध रेलवे स्टेशन सोनगढ़ तक पहुँचने के लिए निकटतम हैं। राष्ट्रीय राजमार्ग 53 इस शहर को भारत के अन्य प्रमुख शहरों से जोड़ता है।

केतनकुमार महेशभाई चौधरी
बहुकार्यकर्मी

"लगा रहे प्रेम हिंदी में, पढ़ूँ हिंदी-लिखूँ हिंदी,
चलन हिंदी चलूँ, हिंदी पहरना, ओढ़ना-खाना ।
भवन में रोशनी मेरे हिंदी चिरागों की,
स्वदेशी ही रहे बाजा, बजाना, राग का गाना ।"
– रामप्रसाद बिस्मिल

झलकियाँ

एसिक दिवस पखवाड़ा का आयोजन

हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह (वर्ष 2022)

श्री मनीष कुमार, उप निदेशक द्वारा पंचदीप प्रज्ज्वलन

सरस्वती वंदना की प्रस्तुति

पुरस्कार वितरण

पुरस्कार वितरण

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह (वर्ष 2022)

पुरस्कार वितरण

आई.सी.2 शाखा को राजभाषा चल-शील्ड प्रदान करते हुए उप निदेशक महोदय

श्री मनीष कुमार, उप निदेशक द्वारा संबोधन

हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी

सतर्कता जागरूकता सप्ताह समारोह का आयोजन

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन

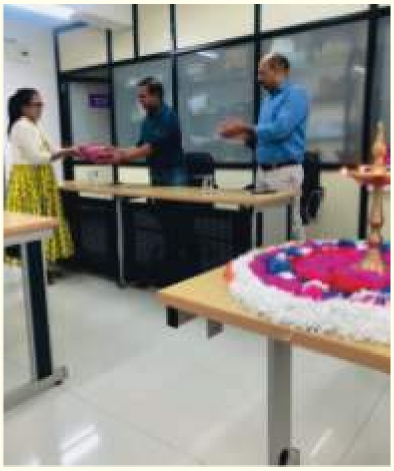

आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत योगाभ्यास कार्यक्रम

आओ गुजराती सीखें

हिन्दी संवेदनशीलता	ગુજરાતી mtkJtu'ltNtejt;tt
मोहन काका डाक विभाग के कर्मचारी थे । बरसों से वे माधोपुर और आस-पास के गाँव में चिट्ठियां बांटने का काम करते थे।	મોહનકાકા ટપાલ વિભાગના કર્મચારી હતા. વર્ષો થી તેઓ માધોપુર અને આજુબાજુના ગામડાઓમાં ટપાલ વહેંચવાનું કામ કરતા હતા.
एक दिन उन्हें एक चिट्ठी मिली, पता माधोपुर के करीब का ही था लेकिन आज से पहले उन्होंने उस पते पर कोई चिट्ठी नहीं पहुंचाई थी।	એક દિવસ એમને એક પત્ર મળ્યો, સરનામું માધોપુર પાસે નુ જ હતું પરંતુ આજ પહેલા તેમણે આ સરનામે કયારેય કોઈ ટપાલ પહોંચાડી ન હતી.
रोज की तरह आज भी उन्होंने अपना थैला उठाया और चिट्ठियां बांटने निकल पड़े । सारी चिट्ठियां बांटने के बाद वे उस नए पते की ओर बढ़ने लगे। दरवाजे पर पहुँच कर उन्होंने आवाज दी, "पोस्टमैन !"	દરરોજ ની જેમ આજે પણ તેમણે પોતાનો થેલો ઉઠાવ્યો અને ટપાલ વહોંચવા નીકળી પડયા. બધી ટપાલ વહેંચ્યા પછી તેઓ પેલા નવા સરનામાં તરફ આગળ વધવા લાગ્યા. દરવાજે પહેંચી તેમણે બૂમ પાડી "ટપાલી".
अन्दर से किसी लड़की की आवाज आई, "काका ! वहीं दरवाजे के नीचे से चिट्ठी डाल दीजिये।"	અંદરથી કોઈ છોકરીનો અવાજ આવ્યો, "કાકા ત્યાં દરવાજા નીચે થી ટપાલ નાખી દો."
"अजीब लड़की है, मैं इतनी दूर से चिट्ठी लेकर आ सकता हूँ और ये महारानी दरवाजे तक भी नहीं आ सकती।" काका ने मन ही मन सोचा।	"ખરી છોકરી છે હું આટલા દૂર થી ટપાલ લઈ ને આવી શકું છું અને આ મહારાણી દરવાજા સુધી પણ નથી આવી શકતી." કાકા એ મનમાં ને મનમાં વિચાર્યું.
"बाहर आइये! रजिस्ट्री आई है, हस्ताक्षर करने पर ही मिलेगी !" काका खीजते हुए बोले। "अभी आई", अन्दर से आवाज आई काका इंतजार करने लगे, पर जब 2 मिनट बाद भी कोई नहीं आयी तो उनके सब्र का बांध टूटने लगा।	"બહાર આવો, રજીસ્ટ્રી આવી છે સહી કરશો તો જ મળશે," કાકા ગુસ્સામાં બોલ્યા. "હમણાં આવું" અંદરથી અવાજ આવ્યો, કાકા રાહ જોવા લાગ્યા, પરંતુ જયારે ૨ મિનિટ પછી પણ કોઈ ના આવ્યું ત્યારે તેમની ધીરજ ખૂટવા લાગી.
"यही काम नहीं है मेरे पास, जल्दी करिए और भी चिट्ठियां पहुंचानी है" और ऐसा कहकर काका दरवाजा पीटने लगे। कुछ देर बाद दरवाजा खुला, सामने का दृश्य देख कर काका चौंक गए।	"આજ કામ નથી મારી પાસે, જલ્દી કરો બીજે પણ ટપાલ પહોંચાડવાની છે" અને આમ કહી કાકા દરવાજો ખખડાવવા લાગ્યા. થોડી વાર પછી દરવાજો ખુલ્યો, સામેનું દ્રશ્ય જોઈ કાકા ચકિત થઈ ગયા.
एक 12-13 साल की लड़की थी जिसके दोनों पैर कटे हुए थे। उन्हें अपनी अधीरता पर शर्मिंदगी हो रही थी, लड़की बोली, क्षमा कीजियेगा मैंने आने में देर लगा दी, बताइए हस्ताक्षर कहाँ करने हैं ? काका ने हस्ताक्षर कराये और वहां से चले गए।	એક ૧૨–૧૩ વર્ષની છોકરી હતી જેના બંને પગ કપાયેલા હતાં. તેમને પોતાની અધીરાઈ પર શરમ આવી રહી હતી, છોકરી બોલી, "માફ કરજો મને આવવામાં વાર લાગી, બોલો કયાં સહીં કરવાની છે ?" કાકાએ સહી કરાવી અને ત્યાંથી ચાલ્યા ગયા.

इस घटना के आठ-दस दिन बाद काका को फिर उसी पते की चिट्ठी मिली । इस बार भी सभी जगह चिट्ठियां पहुँचाने के बाद वे उस घर के सामने पहुंचे।	આ ઘટનાનાં આઠ-દસ દિવસ બાદ કાકાને ફરીથી તેજ સરનામાં ની ટપાલ મળી. આ વખતે પણ બધી જગ્યાએ ટપાલ વહેંચ્યા બાદ તે પેલા ઘરની સામે પહોંચ્યાં.
''चिट्ठी आई है, हस्ताक्षर की भी जरुरत नहीं है। नीचे से डाल दूँ।'' काका बोले । ''नहीं-नहीं, रुकिए मैं अभी आई।'' लड़की भीतर से चिल्लाई।	''ટપાલ આવી છે સહીની જરૂર નથી. નીચેથી નાખી દઉ ?'' કાકા બોલ્યાં ''નહિ નહિ, ઉભા રહો હું આવુજ છું.'' છોકરીએ અંદર થી બૂમ પાડી.
कुछ देर बाद दरवाजा खुला, लड़की के हाथ में गिफ्ट पैकिंग किया हुआ एक डिब्बा था, ''काका लाइए मेरी चिट्ठी और लीजिए अपना तोहफा।'' लड़की मुस्कुराते हुए बोली।	થોડી વાર પછી દરવાજો ખુલ્યો, છોકરીના હાથમાં ગિફ્ટ પેકીંગ કરેલું એક બોકસ હતું. ''કાકા લાવો મારી ટપાલ અને આ લો તમારી ગિફ્ટ (ઉપહાર).'' છોકરી હસતા હસતા બોલી.
''इसकी क्या जरुरत है, बेटी'', काका संकोचवश उपहार लेते हुए बोले, लड़की बोली, ''बस ऐसे ही काका। आप इसे ले जाइए और घर जाकर ही खोलियेगा !''	''આની શું જરૂર છે દીકરી'' કાકા સંકોચાતા ઉપહાર લેતા બોલ્યા છોકરી બોલી, ''બસ એમ જ કાકા તમે આને લઈ જાવો અને ઘરે જઈને જ ખોલજો.''
काका डिब्बा लेकर घर की और बढ़ चले, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि डिब्बे में क्या होगा। घर पहुंचते ही उन्होंने डिब्बा खोला और तोहफा देखते ही उनकी आँखों से आंसू टपकने लगे।	કાકા ડબ્બો લઈ ઘર તરફ ચાલવા લાગ્યા, એમને સમજાતું ન હતું કે ડબ્બામાં શું હશે. ઘરે પહોંચતાં જ તેમણે ડબ્બો ખોલ્યો અને ઉપહાર જોતાં જ એમની આંખો માંથી આંસુ ટપકવા લગ્યા.
डिब्बे में एक जोड़ी चप्पलें थीं। काका बरसों से नंगे पाँव ही चिट्ठियां बांटा करते थे लेकिन आज तक किसी ने इस और ध्यान नहीं दिया था। काका चप्पलें कलेजे से लगा कर रोने लगे।	ડબ્બામાં એક જોડી ચપ્પલ હતા. કાકા વર્ષોથી ખુલ્લા પગે ટપાલ વહેંચતા હતા પરંતુ આજ સુધી કોઈએ પણ એ તરફ ધ્યાન ન આપ્યું. આ તેમના જીવન નો સૌથી મોંઘો ઉપહાર હતો. કાકા ચપ્પલ ને છાતી સરસી ચાંપી રોવા લાગ્યા.
उनके मन में बार-बार एक ही विचार आ रहा था-बच्ची ने उन्हें चप्पलें तो दे दीं पर वे उसे पैर कहाँ से लाकर देंगे ?	તેમના મનમાં વારંવાર એક જ વિચાર આવી રહ્યો હતો, દીકરી એ તેમને ચપ્પલ તો આપી દીધી પરંતુ તે તેને પગ કયાંથી લાવી આપશે ?
दोस्तों! संवेदनशीलता एक बहुत बड़ा मानवीय गुण है। दूसरों के दु:खों को महसूस करना और उसे कम करने का प्रयास करना एक महान काम है, जिस बच्ची के खुद के पैर न हों उसकी दूसरों के पैरों के प्रति संवेदनशीलता हमें एक बहुत बड़ा सन्देश देती है।	મિત્રો સંવેદનશીલતા એક મોટો માનવીય ગુણ છે. બીજાના દુ:ખને અનુભવ કરવું અને તેને ઓછું કરવાનો પ્રયત્ન કરવો એક મહાન કાર્ય છે, જે છોકરીને પોતાને પગ ન હોય તેને બીજાના પગ પ્રત્યેની સંવેદનશીલતા આપણને એક બહુ જ મોટો સંદેશ આપે છે.
आइये! हम भी अपने समाज, अपने आस-पड़ोस, अपने यार मित्रों, अजनबियों, सभी के प्रति संवेदनशील बनें। आइये, हम भी किसी के नंगे पाँव की चप्पलें बनें और दु:ख से भरी इस दुनिया में कुछ खुशियाँ फैलाएं।	આવો, આપણે પણ આપણા સમાજ આપણા આડોસ-પાડોસ, આપણા મિત્રો, અજાણ્યા લોકો દરેક પ્રત્યે સંવેદનશીલ બનીયે. આવો આપણે પણ કોઈના ઉઘાડા પગના ચપ્પલ બનીયે અને દુ:ખથી ભરેલી આ દુનિયામાં ખુશી ફેલાવીયે.

विमलेश कुमार ठक्कर
सहायक

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है।
– विलियम केरी

राजभाषायी लक्ष्य प्राप्ति हेतु सुझाव

हिन्दी में हस्ताक्षरित अंग्रेजी पत्रों के उत्तर हिन्दी में ही दें।

उपस्थिति रजिस्टर में हस्ताक्षर हिन्दी में ही करें।

छुट्टी हेतु आवेदन सहित अन्य सभी आवेदन एवं अभ्यावेदन पत्र हिन्दी में ही दें। ई.आर.पी. मॉड्यूल में छुट्टी आवेदन हिन्दी में निकालने का विकल्प है।

केवल द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रबर मोहरों का ही प्रयोग करें।

लिफाफों पर पते हिन्दी में लिखे जाएँ।

चैक हिन्दी में ही जारी करें।

सभी फाइलों एवं रजिस्टरों के शीर्षनाम द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रुप में होने चाहिए। इनमें हिन्दी, अंग्रेजी के ऊपर/पहले होनी चाहिए। यह भी ध्यान रखा जाए कि हिन्दी के अक्षर अंग्रेजी के अक्षरों से छोटे न हों।

सभी रजिस्टरों में प्रविष्टियाँ हिन्दी में ही करें।

सभी नामपट्ट एवं साईनबोर्ड द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) अथवा आवश्यक हो तो त्रिभाषी रुप में होने चाहिए।

सेवा-पुस्तिकाओं के शीर्षनाम द्विभाषी (हिन्दी-अंग्रेजी) रुप में होने चाहिए। इनमें प्रविष्टियाँ हिन्दी/द्विभाषी में की जानी चाहिए।

विज्ञापनों पर व्यय की जाने वाली कुल राशि का 50 प्रतिशत (न्यूनतम) हिन्दी विज्ञापनों पर खर्च किया जाना चाहिए।

पुस्तकों की खरीद पर किए जाने वाले कुल व्यय का 50 प्रतिशत (न्यूनतम) हिन्दी पुस्तकों की खरीद पर किया जाना चाहिए।

ई-मेल में हिन्दी का प्रयोग करें।

द्विभाषिक रुप से मुद्रित पत्रों में केवल हिन्दी भाग भरा जाए।

कार्यालयीय कार्यों यथा-पत्र, प्रपत्रों एवं टिप्पण आदि में हिन्दी में ही हस्ताक्षर करें।

अधिक से अधिक पत्रों के उत्तर हिन्दी में दिए जाने के प्रयास किये जाएँ।

जांच बिन्दुओं का अनिवार्यतः अनुपालन सुनिश्चित किया जाए।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के प्रयास किए जाएँ।

संक. राजभाषा शाखा

हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' है।

– जॉर्ज ग्रियर्सन

राजभाषा प्रयोग संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी

राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3)

केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से जारी संकल्पों, सामान्य आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों, प्रेस विज्ञप्तियों, संविदाओं, करारों, अनुज्ञप्तियों, अनुज्ञा पत्रों, निविदा सूचनाओं, निविदा प्रारुपों के लिए हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाएं प्रयोग में लायी जाएंगी। संसद के समक्ष रखे गए प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज पत्रों के लिए भी हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग होगा।

राजभाषा नियम, 1976 (यथा संशोधित 1987)

नियम 3

(1) केंद्रीय सरकार के कार्यालयों से 'क' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी में होंगे। यदि कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसके साथ-साथ उसका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा।

(2) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से 'ख' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय को पत्रादि सामान्यतया हिंदी में होंगे और यदि कोई पत्रादि अंग्रेजी में भेजा जाता है तो उसके साथ-साथ उसका हिंदी अनुवाद भी भेजा जाएगा। 'ख' क्षेत्र के राज्य में किसी व्यक्ति को पत्रादि हिंदी में अथवा अंग्रेजी में भेजे जा सकते हैं।

(3) केंद्रीय सरकार के कार्यालय से 'ग' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय (जो केंद्रीय सरकार के कार्यालय न हों) या व्यक्ति को पत्रादि अंग्रेजी में होंगे।

(4) 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालय से 'क' क्षेत्र या 'ख' क्षेत्र के राज्य को या ऐसे राज्य में किसी कार्यालय या व्यक्ति को पत्रादि हिंदी या अंग्रेजी में हो सकते हैं।

नियम 5

हिन्दी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर केंद्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिया जाएगा।

नियम 11

केंद्रीय सरकार के कार्यालय से संबंधित मैनुअल, संहिताएँ, अन्य प्रक्रिया संबंधी साहित्य, फॉर्म और रजिस्टरों के शीर्ष, नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्र शीर्ष, लिफाफों पर छपे लेख, स्टेशनरी की अन्य मदें आदि हिन्दी और अंग्रेजी में होंगी।

– संक. राजभाषा शाखा

भारतीय एकता के लक्ष्य का साधन हिंदी भाषा का प्रचार है।

– टी. माधवराव

सूरत में कर्मचारी राज्य बीमा योजना : एक नजर

कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम 1948, बीमाकृत व्यक्तियों को अपनी आवश्यकता एवं नियमानुसार चिकित्सा अधिकारियों के माध्यम से चिकित्सा देखभाल एवं नकद हितलाभ जैसे बीमारी हितलाभ, मातृत्व हितलाभ, आश्रितजन हितलाभ, स्थायी एवं अस्थायी अपंगता हितलाभ उपलब्ध कराता है। यह अधिनियम, रोजगार चोट के कारण अर्जन क्षमता की हानि होने पर स्थायी शारीरिक अपंगता हितलाभ के अलावा बीमाकृत व्यक्ति की मृत्यु होने की स्थिति में अंत्येष्टि खर्च भी प्रदान करता है।

कर्मचारी राज्य बीमा योजना को गुजरात राज्य में दिनांक 04.10.1964 को लागू किया गया था। प्रथम चरण में यह योजना अहमदाबाद शहर एवं इसके उपनगरों में लागू की गई थी तथा बाद में इसे सूरत सहित राज्य के अधिकतर केंद्रों तक विस्तृत कर दिया गया। प्रशासनिक सुविधा को ध्यान में रखते हुए दिनांक 13.11.2000 को उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत अस्तित्व में लाया गया। सूरत में इसके अधीनस्थ 3 शाखा कार्यालय– सलाबतपुरा, लाल दरवाजा, नवसारी एवं 1 औषधालय सह शाखा कार्यालय– वापी भी हैं। यह योजना दिनांक 17.01.2011 से सभी इकाइयों, जहाँ 10 या इससे अधिक कर्मचारी कार्यरत है, के लिए लागू है।

सूरत में कर्मचारी राज्य बीमा योजना के आँकड़े
(दिनांक 31.03.2022 तक के अनुमोदित आंकड़ों के आधार पर)

क्र.सं.	मद	वर्ष 2021-22
1	शाखा कार्यालयों की संख्या	3
2	औषधालय सह शाखा कार्यालयों की संख्या	1
3	जिलों की कुल संख्या	5
4	पूर्णतः अधिसूचित जिलों की संख्या	0
5	आंशिक रुप से कार्यान्वित जिलों की संख्या	3
6	गैर–कार्यान्वित जिलों की कुल संख्या	2
7	बीमाकृत व्यक्तियों की कुल संख्या	3,73,990
8	बीमाकृत महिलाओं की कुल संख्या	40,840
9	कर्मचारियों की कुल संख्या	3,41,410
10	लाभार्थियों की कुल संख्या	14,95,960
11	पंजीकृत नियोक्ताओं की कुल संख्या	14518
12	क्षेत्र की राजस्व आय (करोड़ों में)	184.59
13	राजस्व वसूली की राशि (करोड़ों में)	2.91
14	नकद हितलाभ पर व्यय (करोड़ों में)	14.72

कार्यालय में वर्ष 2022-23 के दौरान राजभाषा की प्रगति

- कार्यालय की शाखाओं एवं अधीनस्थ शाखा कार्यालयों सहित मुख्यालय एवं टेली-ट्रांस्लेशन सेल, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई से प्राप्त सभी दस्तावेजों के अनुवाद उपलब्ध करवाए गए।
- राजभाषा विभाग, भारत सरकार के निर्देशों के अनुसरण में 4 हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, जिनमें कुल 46 कार्मिकों को राजभाषा नियमों/अधिनियमों, कंप्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने तथा कार्यालय के विभिन्न विषयों की जानकारी दी गयी एवं अभ्यास कार्य करवाया गया।
- कार्यालयाध्यक्ष की अध्यक्षता में विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 4 बैठकों का आयोजन किया गया। इन बैठकों में कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी मदों पर चर्चा की गई और उनके संबंध में उचित कार्रवाई करने का निर्णय लिया गया।
- हिन्दी पत्राचार के वास्तविक मूल्यांकन के लिए सभी शाखाओं के रिपोर्ट बनाने वाले संबंधित सहायकों को हिन्दी मासिक रिपोर्ट में दिए जाने वाले आंकड़ों के संबंध में नियमित रुप से मार्गदर्शन दिया गया।
- हिन्दी प्रयोग प्रोत्साहन योजना, वर्ष 2022 के अंतर्गत कुल 61 कार्मिकों तथा मूल हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत कुल 10 कार्मिकों को पुरस्कार दिए गए।
- हिन्दी टंकण प्रशिक्षण के अंतर्गत पत्राचार पाठ्यक्रम द्वारा हिन्दी टंकण प्रशिक्षण हेतु पात्र कार्मिकों को प्रशिक्षित किया गया।
- राजभाषा कार्यान्वयन के लिए स्थापित जांच बिन्दुओं की सूची जारी की गयी तथा इनके अनुपालन पर निगरानी रखी गयी।
- राजभाषा विभाग के क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, निगम मुख्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई एवं न.रा.का.स. सूरत को भेजी जाने वाली मासिक, तिमाही, छःमाही एवं वार्षिक प्रगति रिपोर्टें यथासमय प्रेषित की गयीं।
- राजभाषा नीति के अनुपालन की स्थिति का जायजा लेने के लिए तथा राजभाषा कार्यान्वयन में आ रही कठिनाइयों का समाधान करने हेतु कार्यालय की शाखाओं एवं अधीनस्थ शाखा कार्यालयों का निरीक्षण किया गया।
- दिनांक 14 से 29 सितंबर 2022 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान हिन्दी की 4 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। 29 सितंबर, 2022 को राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन किया गया।
- राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) एवं राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित किया गया।

कार्यालयीय कार्य में उपयोगी नेमी टिप्पणियाँ

Approved as proposed	यथा–प्रस्तावित अनुमोदित
Bring this to the notice of all concerned	इसे सभी सम्बंधितों की जानकारी में लाया जाये
Call for an explanation	स्पष्टीकरण मांगें, जवाब तलब करें
Compliance with orders is still awaited	आदेश की अनुपालना अभी प्रतीक्षित है
Discrepancy may be reconciled	विसंगति का समाधान किया जाये
Draft reply on the lines suggested above may be put up	ऊपर के सुझावों के आधार पर उत्तर का मसौदा प्रस्तुत किया जाए
Enquiry has been ordered	जांच के आदेश दिए गए हैं
Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें, कार्रवाई में शीघ्रता करें
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी
Examine the case in light of 'A' above	ऊपर 'क' को ध्यान में रखते हुए मामले की जांच करें
Finance & Accounts Division may please see for concurrence	वित्त एवं लेखा प्रभाग सहमति के लिए देख लें
For perusal and orders please	अवलोकनार्थ व आदेशार्थ
Forwarded & recommended	अग्रेषित और संस्तुत/सिफारिश की जाती है
Fix up responsibility	जिम्मेदारी ठहराई जाये
Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
Give top priority to this work	इस कार्य को परम अग्रता/प्राथमिकता दी जाये
Give details	विस्तृत जानकारी दें
Headquarters may be informed accordingly	मुख्यालय को तद्नुसार सूचित कर दिया जाये
Hold in abeyance	प्रास्थगित रखना
Issue reminders urgently	तुरंत अनुस्मारक/स्मरण पत्र भेजिए
In spite of thorough search, the relevant file is not traceable	भली–भाँति ढूँढने के बावजूद सम्बंधित फाईल नहीं मिल रही है
Immediate disposal of the case is requested	मामले को शीघ्र निपटाने का अनुरोध किया जाता है
Matter should be considered as most urgent	मामला अत्यंत आवश्यक समझा जाये
Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
May be treated as urgent	इसे अतिआवश्यक समझा जाए
May be informed accordingly	तदनुसार सूचित कर दिया जाये
Must be rigidly adhered to	कड़ाई के साथ पालन किया जाये
Necessary steps should be taken	आवश्यक कार्रवाई की जाये/आवश्यक कदम उठाये जाएँ

कार्यालयीय कार्य में उपयोगी नेमी टिप्पणियाँ

Nota bene (N.B.)	विशेष ध्यान दीजिए
No need to send a reply	उत्तर भेजने की आवश्यकता नहीं है
Obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी प्राप्त करें
Offer of appointment has been sent	नियुक्ति प्रस्ताव भेजा जा चुका है
Orders of competent authority are solicited	सक्षम प्राधिकारी के आदेश अपेक्षित हैं
Please keep pending	कृपया इसे रोक कर रखें
Passed for payment	भुगतान के लिए पारित
Please circulate and file	कृपया परिचालित कर फाईल करें
Please acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें/ कृपया प्राप्ति सूचना दें
Please put up summary of the case	कृपया मामले का सार प्रस्तुत करें
Please put up with previous papers	कृपया पिछले कागजातों के साथ प्रस्तुत करें
Please issue reminder	कृपया अनुस्मारक भेजें
Please fix date & time for the meeting	कृपया बैठक की तारीख व समय निश्चित करें
Question does not arise	प्रश्न ही नहीं उठता
Relevant papers be put up	सम्बंधित कागज प्रस्तुत किये जाएँ
Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाये/ स्मरण पत्र भेजें
Recovery should be effected	वसूली की जाये
Relevant papers are not available	सम्बंधित कागज उपलब्ध नहीं हैं
Sanctioned as proposed	प्रस्ताव के अनुसार मंजूर/ यथा प्रस्तावित संस्वीकृति
Statements are quite contradictory	बयान परस्पर विरोधी हैं
This may please be treated as urgent	कृपया इसे अति आवश्यक समझा जाए
The matter is still under consideration	मामला अभी विचाराधीन है
The proposal is concurred to	प्रस्ताव पर सहमति दी जाती है
Admissible under the rules	नियमों के अधीन स्वीकार्य
The bill is returned with the following objections	बिल निम्नलिखित आपत्तियों के साथ वापस किया जाता है
This is in accordance with the existing rules	यह वर्तमान नियमों के अनुसार है
We may await further progress of the case	इस मामले में और प्रगति की प्रतीक्षा करें
We may agree as a very special case. This should not, however, be quoted as a precedent	इसे अति विशेष मामला मानकर हम सहमति देते हैं, परंन्तु इसका उदाहरण के रूप में उल्लेख न किया जाए
We may ascertain the correct position from Headquarters office	हम मुख्यालय से सही स्थिति मालूम कर लें

उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत में राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन – रिपोर्ट

भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन व मुख्यालय के निदेशों के अनुसरण में दिनांक 14-15 सितंबर, 2022 को माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री की अध्यक्षता में पं. दीनदयाल उपाध्याय, इंडोर स्टेडियम, सूरत में आयोजित 'हिन्दी दिवस एवं द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' में सहभागिता की गयी। उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत में दिनांक 14.09.2022 से 29.09.2022 तक राजभाषा पखवाड़ा का आयोजन किया गया। राजभाषा पखवाड़े के दौरान कार्यालय के मुख्य द्वार पर राजभाषा पखवाड़े का बैनर प्रदर्शित किया गया। हिन्दी भाषा की कुछ प्रमुख सूक्तियों को कार्यालय के प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शित किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, वाक्, हिन्दी टिप्पण–आलेखन व राजभाषा ज्ञान आदि 4 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं। कार्यालय की सभी शाखाओं तथा अधीनस्थ सभी शाखा कार्यालयों को प्रायः प्रयोग होने वाली नेमी–टिप्पणियों की सूची परिचालित की गयी। इस दौरान एक–दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन भी किया गया जिसमें कार्यालय की शाखाओं तथा अधीनस्थ शाखा कार्यालयों के कर्मचारियों को हिन्दी टिप्पण–आलेखन, यूनिकोड, ई–टूल्स, राजभाषा संबंधी आवधिक रिपोर्टों के साथ–साथ कार्यालय की विभिन्न शाखाओं में होने वाले कार्यालयीय कार्य को हिन्दी में करने के संबंध में प्रशिक्षण दिया गया तथा अभ्यास कार्य करवाया गया। इस दौरान अधिकाधिक टिप्पणी, मसौदे, पत्राचार और प्रपत्र जैसे कार्य मूल रुप से हिन्दी में किए जाने पर विशेष बल दिया गया।

दिनांक 29.09.2022 को 'राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह' का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री मनीष कुमार, उप निदेशक (प्रभारी) ने की। इस अवसर पर सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। उप निदेशक (प्रभारी) के कर–कमलों से निगम के प्रतीक 'पंचदीप' के प्रज्ज्वलन के बाद सरस्वती वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

इसके बाद उप निदेशक (प्रभारी) द्वारा हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र प्रदान किये गए। वर्ष 2021-22 के दौरान हिन्दी में स्वाधिक कार्य करने के उपलक्ष में 'आई.सी. 2 शाखा (निरीक्षण नियंत्रण एवं व्याप्ति शाखा)' को अंतः अनुभागीय चल–शील्ड प्रदान की गई। इस अवसर पर कार्यालय के कुछ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने वक्तव्य और कविताओं के माध्यम से हिन्दी की महत्ता एवं इसकी ग्राह्यशीलता पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मनीषकुमार, उप निदेशक (प्रभारी) ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कहा कि भाषा वही जीवित रहती है जो आसान हो, जिसमें समय के साथ प्रगतिशील रहने का गुण हो एवं वह आम–जन की भाषा भी हो और हिन्दी में ये गुण विद्यमान हैं। उन्होंने सभी से कार्यालयीय कार्य में सरल हिंदी का उपयोग करते हुए अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में किए जाने का आह्वान किया। उन्होंने कार्यालयकर्मियों द्वारा हिन्दी में अधिकतम कार्य किए जाने की सराहना करते हुए इसे अनवरत् जारी रखने के लिए कहा। उन्होंने अंतः अनुभागीय चल–शील्ड विजेता शाखा 'आई.सी. 2' को बधाई देते हुए सभी शाखाओं से अपना अधिकतम कार्य हिन्दी में करने के लिए कहा।

धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्री अमित इन्दौरिया, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने किया।

राजभाषा पखवाड़ा, वर्ष 2022 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत कार्मिकों का विवरण

1	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता			
		स्थान	नाम/पदनाम	राशि (रु.में)
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री गुप्तेश्वर प्रसाद, शाखा प्रबंधक	1800
		द्वितीय	श्री अभय कुमार, सहायक (बीमा-1)	1500
		तृतीय	श्री भीखाभाई वि.परमार, प्रवर श्रेणी लिपिक	1200
		प्रोत्साहन-1	श्री गौतम कुमार, सहायक	500
		प्रोत्साहन-2	श्री सतीश कुमार, सहायक	500
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800
2	हिन्दी वाक् प्रतियोगिता			
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री अभय कुमार, सहायक (बीमा-1)	1800
		द्वितीय	श्री ओमप्रकाश प्रजापत, प्रवर श्रेणी लिपिक	1500
		तृतीय	श्री हेमाराम, सहायक	1200
		प्रोत्साहन-1	श्री गुप्तेश्वर प्रसाद, शाखा प्रबन्धक	500
		प्रोत्साहन-2	श्री रविश कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	500
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800
		द्वितीय	श्री नुनसावत सुनील नायक, बहुकार्यकर्मी	1500
3	हिन्दी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता			
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री गौतम कुमार, सहायक	1800
		द्वितीय	श्री चेतन पौनिकर, सहायक	1500
		तृतीय	श्री पंकज कुमार, सहायक	1200
		प्रोत्साहन-1	श्री हरकेश मीना, सहायक	500
		प्रोत्साहन-2	श्री गुप्तेश्वर प्रसाद, शाखा प्रबन्धक	500
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800
4	राजभाषा ज्ञान प्रतियोगिता			
	(क) हिन्दी भाषी वर्ग	प्रथम	श्री पंकज कुमार, सहायक	1800
		द्वितीय	श्री सुबोध कुमार, अवर श्रेणी लिपिक	1500
		तृतीय	श्री हेमाराम, सहायक	1200
		प्रोत्साहन-1	श्री ओमप्रकाश प्रजापत, प्रवर श्रेणी लिपिक	500
		प्रोत्साहन-2	श्री चेतन पौनिकर, सहायक	500
	(ख) हिन्दीतर भाषी वर्ग	प्रथम	श्री आनंद देवराजन पिल्लई, सहायक	1800

खेलकूद में उपलब्धियाँ

श्री भाविन एन. देसाई, सहायक, उप क्षेत्रीय कार्यालय, सूरत ने दिनांक 18 से 25 अप्रैल, 2022 तक शिलाँग (मेघालय) में आयोजित '83वीं वरिष्ठ राष्ट्रीय टेबल-टेनिस प्रतियोगिता, 2022' में निगम का प्रतिनिधित्व किया। श्री भाविन ने इस प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

इसके अलावा उन्होंने दिनांक 20 से 24 सितंबर, 2022 तक सूरत (गुजरात) में आयोजित '36वीं राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिता, 2022' में गुजरात राज्य की महिला टेबल-टेनिस टीम के प्रशिक्षक के रुप में शिरकत की। उनकी टीम ने इस प्रतियोगिता में कांस्य पदक प्राप्त किया।

TABLE TENNIS CHAMPIONSHIPS 2021

MEGHALAYA TABLE TENNIS ASSOCIATION

TABLE TENNIS FEDERATION OF INDIA

हिन्दी नायाब है

छू लो तो - चरण
अड़ा दो तो - टांग
धंस जाए तो - पैर
आगे बढ़ना हो तो - कदम
राह में चिह्न छोड़े तो - पद
प्रभु के हों तो - पाद
बाप की हो तो - लात
गधे की पड़े तो - दुलत्ती
घुंघरु बाँध दो तो - पग
खाने के लिए - टंगड़ी
खेलने के लिए - लंगड़ी
और
अंग्रेजी में सिर्फ - LEG

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

कैमरे की नजर से...

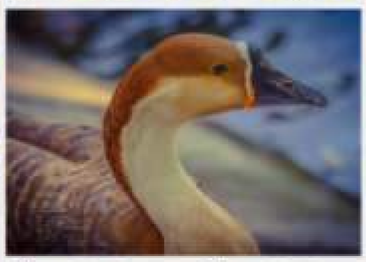

मयंक भगरिया
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी

आपका पत्र मिला....

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' के चतुर्थ अंक, वर्ष 2021-22 के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण के लिए हार्दिक आभार।

वर्तमान समय की आवश्यकता और अधिकतम कार्मिकों तक पत्रिका की पहुँच के उद्देश्य से प्रकाशित पत्रिका के ई-संस्करण का आवरण आकर्षक और मनमोहक है। पत्रिका में विविध विषयों को समाहित किया गया है जिससे पत्रिका उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक बनी है । साथ ही विविध गतिविधियों के छायाचित्र पत्रिका को जीवंत और रुचिकर बनाते हैं। आशा है कि पत्रिका उपयोगी साबित होगी एवं कार्मिकों को दैनिक कार्यालयीय कार्य हिन्दी में किए जाने के लिए प्रोत्साहित करती रहेगी।

पत्रिका प्रकाशन के पुनीत कार्य से जुड़े संपादक मण्डल तथा अन्य सभी सहयोगियों को हार्दिक शुभकामनाएँ। आगामी अंक की प्रतीक्षा रहेगी।

बिपिन कुमार
उप निदेशक(प्रशा.) एवं प्रभारी(रा.भा.)
क्षेत्रीय कार्यालय, देहरादून (उतराखंड)

आपके कार्यालय की गृह पत्रिका 'सूरत तरंग' का चौथा ई-अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका प्रेषण के लिए धन्यवाद तथा इसके सफल प्रकाशन के लिए बधाई। सूरत शहर की छटा बिखेरते हुए रंग में इसका मुखपृष्ठ काफी आकर्षक है। सरस्वती वंदना से पत्रिका के पन्नों की शुरुआत होना यह इंगित करता है कि आपके कार्यालय में राजभाषा 'हिन्दी' के कार्यान्वयन के प्रति समस्त लोगों में काफी उत्साह है। इसकी रचनाएँ 'दासवृत्ति को सभ्यता की पहचान मत बनाइये', 'मि एसिक बोलतोय', 'हिन्दी की प्रासंगिकता एवं महत्त्व', कहानी 'नयी रोशनी' तथा कविता 'पिता' और 'ये जिंदगी' काफी रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक हैं। नाटक के कथानक के रुप में 'ई.एस.आई.सी.-चिंता से मुक्ति' रचना काफी प्रभावशाली रुप में निगम की सेवाओं की प्रस्तुति है। इस प्रस्तुति के लिए रचनाकार साधुवाद के पात्र हैं। अन्य रचनाएँ भी काफी अच्छी हैं।

आशा है कि भविष्य में भी ऐसी ही उत्कृष्ट रचनाओं से समृद्ध पत्रिका प्राप्त होती रहेगी।

मदन मोहन अधिकारी
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)
उप क्षेत्रीय कार्यालय, बैरकपुर (कोलकता)

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)

अब आधार नंबर को ईएसआईसी के साथ सीड करें और ढेरों लाभ पाएं जैसे कि

- डिजिटल अपनाएं
- **ABHA** नंबर का सृजन
  - विभिन्न अस्पतालों के साथ स्वास्थ्य संबंधी रिकॉर्ड साझा करें
  - फाइलों और रिपोर्ट्स को साथ रखने की कोई आवश्यकता नहीं
- सेवाएं व लाभ पाने के लिए पहचान की सरलतापूर्वक पुष्टि

मैं स्वयं और अपने परिवार के लिए आधार को कैसे सीड कर सकता हूं

नियोक्ता के पास जाएं

ईएसआईसी शाखा कार्यालय जाएं

स्वयं द्वारा आधार सीडिंग

1. आईपी पोर्टल https://esic.gov.in पर लॉग इन करें
2. आधार सीडिंग पर क्लिक करें
3. नियोक्ता को चुनें
4. आधार सीड करने के लिए यहाँ क्लिक करें
5. नियम व शर्तों पर सहमति दें। आधार दर्ज करें
6. ओटीपी की पुष्टि करें
7. यदि डाटा मेल खाता है तो आधार सीड हो जाएगा
8. **ABHA** का सृजन

ध्यान दें: यदि डाटा मेल नहीं खाता है तो नियोक्ता से सत्यापन के लिए स्वतः रूप से एक अनुरोध सृजित होगा जो अनुमोदन के लिए शाखा कार्यालय भेजा जायेगा। एक बार सत्यापित होने व अनुमोदित हो जाने पर आधार सीड हो जायेगा और **ABHA** नंबर सृजित हो जायेगा ।

गोपी तलाव

डूमस बीच

केबल पुल

साइंस सेन्टर

उप क्षेत्रीय कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
द्वितीय तल, समर्थ हाउस, पाल लेक के सामने, अडाजन-पाल, सूरत (गुजरात) पिन-394510.
दूरभाष : (0261) 2730124-29, ई-मेल : dir-surat@esic.nic.in